उदयपुर का विकास : संभावनाएँ एवं सुझाव

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	447
2.	उदयपुर का विकास	448
3.	जनसंख्या, उदयपुर का विकास एवं मास्टर प्लान शहर का विकास एवं विरासत का विनाश लुप्त हुआ शहरकोट, सलेटिया ग्राउण्ड में नगर निगम, तांगा स्टेण्ड पर एलआईसी भवन, भव्य बापू बाजार की दुर्दशा, अश्विनी बाजार, सिटी स्टेशन रोड एवं अन्य बाजारों का उद्‌भव, आयड़ नदी का बुरा हाल, सिटी रेलवे स्टेशन का बिगड़ता स्वरूप, उदयपुर शहर स्मार्ट सिटी प्रस्ताव, स्मार्ट सिटी की प्राथमिकताएँ, स्मार्ट सिटी के मुख्य प्रस्ताव, स्मार्ट सिटी परियोजना, स्मार्ट सिटी के साथ पर्यटक हब	449–453
4.	प्रशासनिक कार्यालयों का स्थानान्तरण, राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन को अत्याधुनिक बनाना, आपसी समन्वय एवं सामंजस्य, राजकीय भूमि का पर्यटन हब हेतु उपयोग, मुख्य बाजारों को सुनियोजित भव्यता, उच्च स्तरीय पर्यटक सूचना केन्द्र कार्यालय भवनों का स्थानान्तरण, अ– राजकीय कार्यालय : कलक्ट्रेट कार्यालय, कलक्ट्रेट परिसर में अव्यवस्थित कार्यालय, विरासत संग्रहालय, जिला सेशन न्यायालय	454–455
5.	न्यायालय में स्थित कार्यालय, न्याय एवं प्रशासन संग्रहालय	456
6.	गिर्वा तहसील एवं रजिस्ट्री कार्यालय, खान एवं भू–विज्ञान विभाग, भू–सम्पदा संग्रहालय, कलक्टर एवं सेशन न्यायाधीश आवास, अर्द्ध–राजकीय कार्यालय स्थानान्तरण, नगर निगम कार्यालय, पर्यटन स्थल संग्रहालय	457
7.	राजकीय कार्यालय की भावी संकल्पना – मिनी सचिवालय प्रथम विकल्प, द्वितीय विकल्प, भावी योजना, महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय, सेटेलाइट चिकित्सालय	458
8.	पशु चिकित्सालय, ऑक्सीजन हब	459
9.	एलिवेटेड रोड – वैकल्पिक मार्ग, भूतल एवं लम्बी सीढ़ियाँ, सड़कों पर मवेशी, सिटी बसों का संचालन	460
10.	मेडिकल ट्यूरिज्म हब : रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल	461
11.	अमेरिकन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स, अनन्ता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज एण्ड रिसर्च सेन्टर	462
12.	लेकसिटी में मेडिकल ट्यूरिज्म को बढ़ावा, मिनी सचिवालय एवं पर्यटक हब, शहरी नागरिकों के कर्त्तव्य, जल संरक्षण, देवास वाटर फिल्टर प्लान्ट संयंत्र, पौधारोपण–हरियाली में वृद्धि का संकल्प, एक पेड़ की कीमत	463
13.	सौर विद्युत ऊर्जा – प्रत्येक आवास का विद्युत स्रोत हो, सोलर वाटर हीटर, निवास स्थलों पर गमलों में पौधारोपण, वर्मी कम्पोस्ट	464
14.	उदयपुर शहर में पार्किंग समस्या एवं समाधान, पार्किंग समस्या के कारण, वर्तमान में संचालित पॉकेट पार्किंग	465
15.	पॉकेट पार्किंग का व्यवस्थित संचालन, कम्प्यूटराइज्ड टिकिट, प्रस्तावित पॉकेट पार्किंग स्थल	466–467
16.	स्थायी बहुमंजिलें पार्किंग स्थल, नगर निगम हाथीवाला पार्क में भूतल पर पार्किंग, आसीन्द की हवेली पार्किंग स्थल, महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के अश्विनी बाजार छोर पर पार्किंग स्थल, गुलाबबाग के पास सार्वजनिक निर्माण विभाग के गेंगहट पर दो मंजिला पार्किंग स्थल, देहली गेट के पश्चिमी छोर पर निर्मित पार्किंग स्थल	468
17.	नाड़ाखाड़ा बहुमंजिला पार्किंग स्थल, चांदपोल बहुमंजिला पार्किंग स्थल, देवाली–फतहसागर के उत्तरी गेट के सामने विकसित पार्किंग स्थल, सूरजपोल चौराहे पर छः मंजिला पजल पार्किंग, पार्किंग स्थल एवं फूड हब का निर्माण, परकोटा क्षेत्र ''नो व्हीकल (ग्रीन मोबिलिटी) जोन'' घोषित हो, स्वचालित/मेन्यूअल बहुमंजिले पार्किंग स्थल, बहुमंजिला कंकरीट कार पार्किंग	469
18.	कार पार्किंग व्यवस्था, पजल कार पार्किंग, रोटरी कार पार्किंग टर्न टेबल पार्किंग, पिट लिफ्टिंग कार पार्किंग	470
19.	स्वचालित कम्प्यूटराइज्ड कार पार्किंग, हाथीपोल, घंटाघर, जगदीश चौक–पर्यटक पार्किंग, बापू बाजार में पार्किंग, फतहसागर एवं पार्किंग व्यवस्था	471
20.	हिरण मगरी, सेक्टर–3, 4 व 5 में बाजार एवं पार्किंग व्यवस्था, फतहसागर पर चारपहिया वाहनों के प्रवेश पर नियंत्रण	472
21.	वाटर स्पोर्ट्स एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म, वाटर स्पोर्ट्स, पानी में वाटर स्पोर्ट्स, वाटर बॉलीवाल, वाटर पोलो, वाटर बॉस्केटबाल, वाटर एरोबिक्स	473
22.	डाइविंग (गोताखोरी), कलात्मक तैराकी, पानी पर वाटर स्पोर्ट्स बनाना राइड	474
23.	बंजी जम्पिंग, विंडसर्फिंग, वाटर स्कीइंग, सेलिंग नौकायन, कैनोइंग–कयाकिंग	475
24.	डोंगी पोलो–कैनो पोलो–कयाक पोलो, पेरासेलिंग (पेरासेडिंग), व्यक्तिगत जल क्रीड़ा, ड्रेगन बोट रेस	476
25.	पानी के भीतर फोटोग्राफी, साहसिक नाव यात्रा, झीलों में नाव संचालन स्थल एवं एजेन्सियाँ, नावों के लाइसेन्स, नाव संचालन हेतु जेटियाँ, लाइफ जैकेट	477
26.	निगरानी की जिम्मेदारी, आपदा प्रबन्धन, नाव संचालन से जल पर्यावरण में सुधार, वाटर स्पोर्ट्स एकेडमी की स्थापना, गोल्फ कार संचालन, साइकिल भ्रमण, स्केटिंग	478
27.	इको एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म, इको ट्यूरिज्म, एडवेन्चर ट्यूरिज्म : साहसिक पर्यटन, पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग, जिपलाइन	479
28.	एयरो एडवेन्चर स्पोर्ट्स, पैराग्लाइडिंग, हॉट बैलूनिंग, हैग ग्लाइडिंग, पैरामोटरिंग	480
29.	स्काईडाइविंग, माउन्टेन बाइकिंग	481

उदयपुर का विकास : संभावनाएँ एवं सुझाव

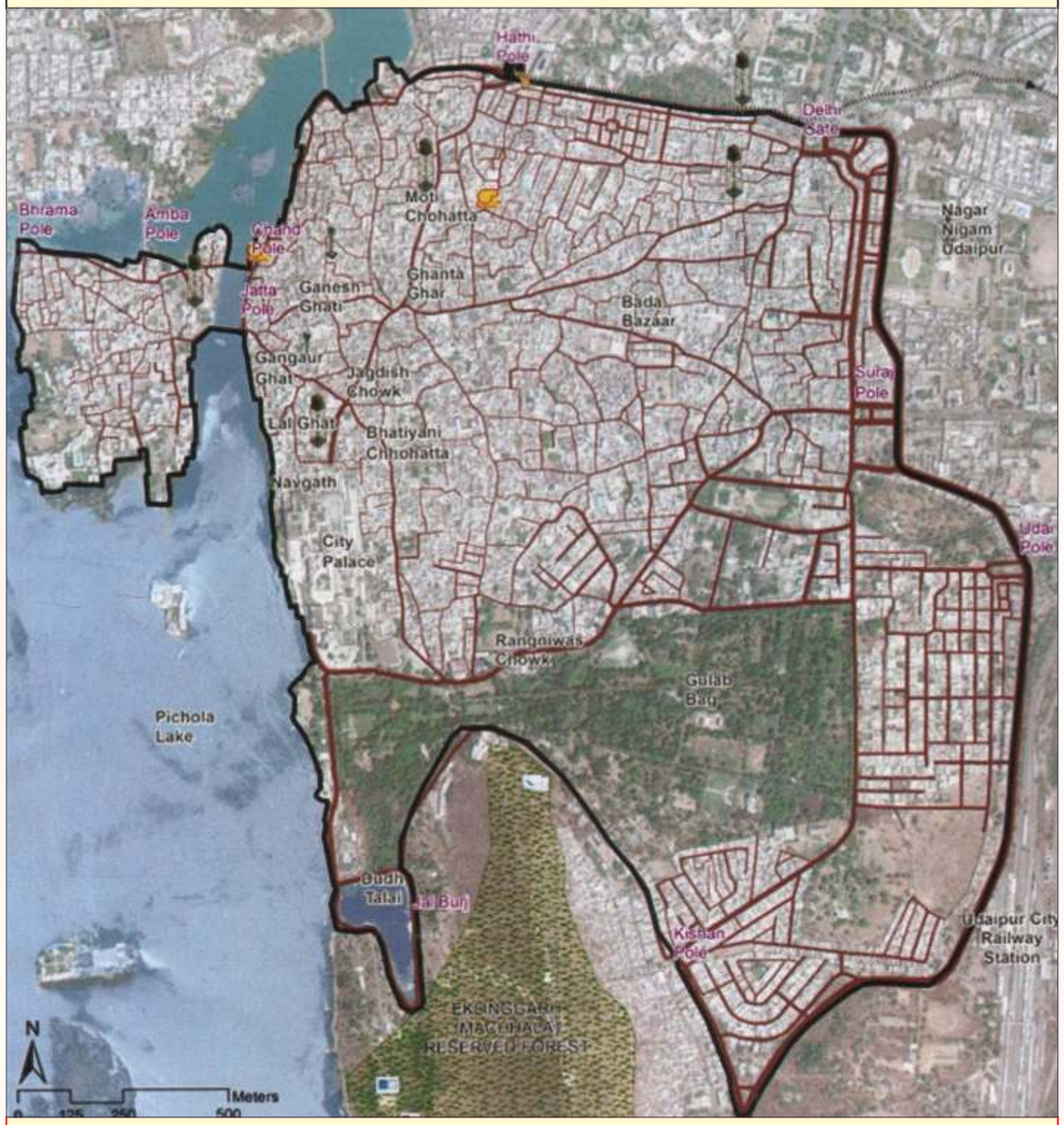

शहरकोट क्षेत्र विकास के साथ ही इसके बाहरी क्षेत्र को भी पर्यटक हब बनाना होगा

प्रस्तावना : इतिहास के पृष्ठों में उदयपुर मेवाड़ की राजधानी के रूप में भक्ति, शक्ति, शौर्य एवं समर्पण के लिए जाना जाता है। वर्तमान में इसकी प्राकृतिक सुन्दरता, झीलों की बनावट, आतिथ्य सत्कार, मेवाड़ियों की सरलता एवं सहजता के कारण विश्व के सुन्दरतम् शहर के रूप में इसकी पहचान बनी हुई है। भारत सरकार द्वारा उदयपुर शहर को ''स्मार्ट सिटी'' बनाने हेतु चयनित किया है। वर्तमान में शहर में जनसंख्या व वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि, जल एवं सीवरेज निकास की अवरुद्धता, सड़कों की सीमित चौड़ाई एवं उस पर अतिक्रमण, फुटपाथ का अभाव, प्रदूषित पर्यावरण, ऑक्सीजन समृद्ध हरित क्षेत्रों की कमी, झीलों में गन्दगी, सड़कों पर जाम आदि कारणों से इसकी वास्तविक सुन्दरता पर ग्रहण लगा हुआ है। इसके अतिरिक्त शहर के मध्य देहलीगेट, कलेक्ट्रेट, न्यायालय क्षेत्र के आसपास आमजन एवं वाहनों के अधिक दबाव से आए दिन जाम लगते रहते हैं। राजनैतिक एवं सामाजिक जन प्रदर्शनों से यह स्थिति और अधिक विकराल हो जाती है।

स्वतंत्रता से पूर्व मेहकमाखास, कोर्ट–कचहरी (न्यायालय), चिकित्सालय, स्कूल, एम.बी. कॉलेज आदि सार्वजनिक भवन शहरकोट के बाहर स्थापित किये हुए थे क्योंकि इन कार्यालयों से कुछ ही लोगों का काम पड़ता था। उस समय शहर में अनेक रिक्त स्थान उपलब्ध थे जहां पर ये कार्यालय बनाये जा सकते थे, शायद शहर के सुव्यवस्थित नियोजन एवं दूरदृष्टि के कारण उन्होंने ऐसा नहीं किया।

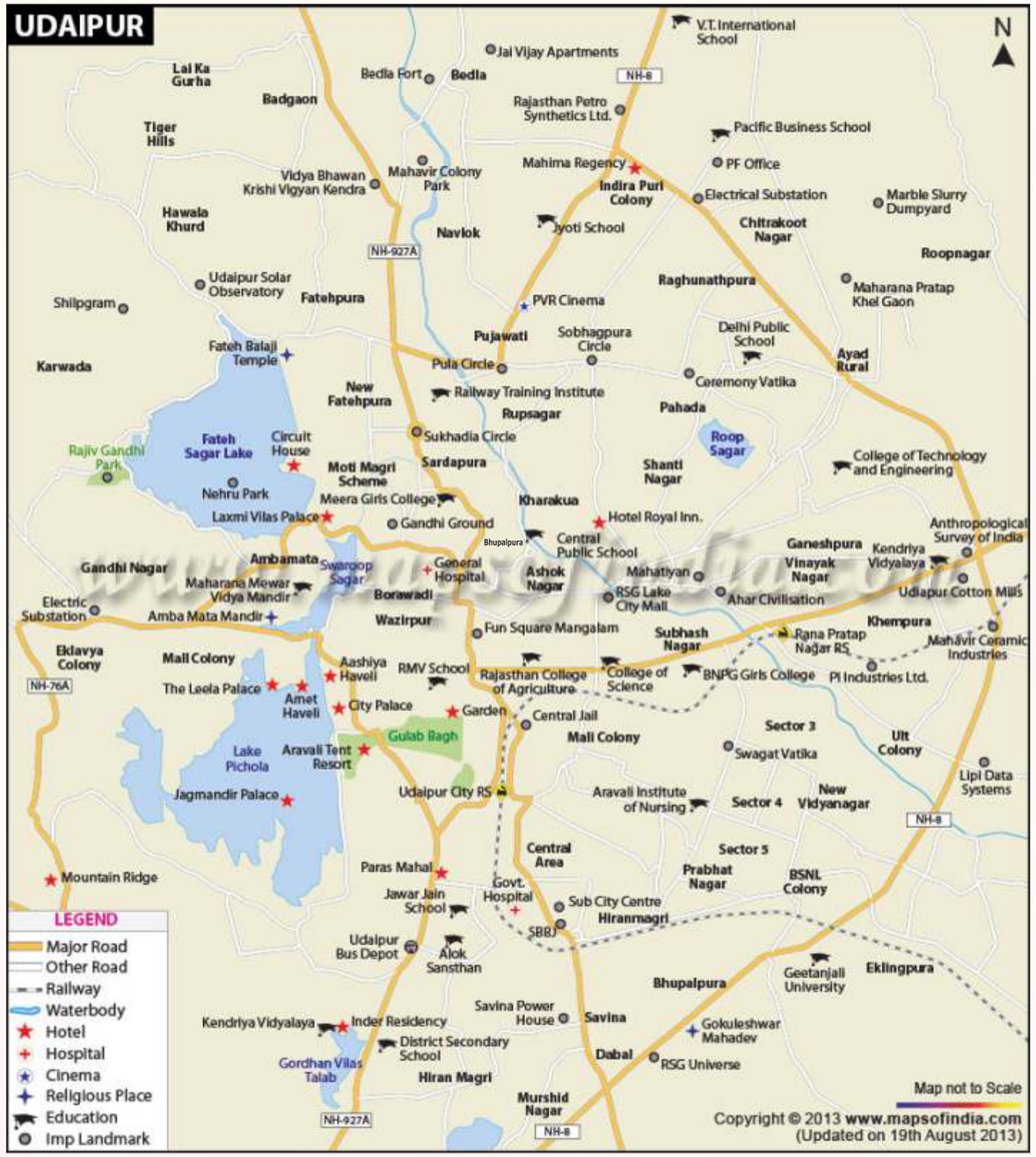

उदयपुर का विकास : स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मेवाड़ की राजधानी उदयपुर का बहुमुखी विकास हुआ। राजस्थान कृषि महाविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (पूर्व उदयपुर विश्वविद्यालय), माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर, रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान उत्तर–पश्चिम रेलवे, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् आदि प्रमुख शैक्षणिक संस्थान तथा आयुक्त आबकारी, आयुक्त देवस्थान, निदेशक खान एवं भूविज्ञान विभाग, आयुक्त जनजाति विभाग, निदेशक एस.आई.ई.आर.टी. तथा राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड के राज्य स्तरीय मुख्यालय भी उदयपुर शहर में स्थापित किये गये।

इसी क्रम में शहर की बढ़ती जनसंख्या की आवास संबंधी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अनेक सुव्यवस्थित आवासीय कॉलोनियों को भी विकसित किया गया, जिसमें भूपालपुरा, पंचवटी, अशोक नगर, पोलो ग्राउण्ड, फतहपुरा, अम्बामाता आदि मुख्य थे। इनके अतिरिक्त समय के साथ आवासीय आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हिरण मगरी (विभिन्न सेक्टर), चित्रकूट नगर आदि वृहद् योजनाएँ भी विकसित की गई। इसके साथ निजी बिल्डर्स एवं संस्थाओं ने भी सौभागपुरा, बेदला, भुवाणा आदि क्षेत्रों में अनेक छोटी–बड़ी व्यवस्थित एवं अव्यवस्थित आवासीय योजनाएँ और विकसित कर दी।

वर्ष 2013 में स्वीकृत उदयपुर के मास्टर प्लान 2011–2031 के अनुसार, आजादी के समय उदयपुर नगर का भौगोलिक क्षेत्र शहरकोट के अन्दर लगभग 515 एकड़ था। शहरकोट के बाहर राजकीय कार्यालय, शैक्षणिक संस्थाओं एवं आवासीय कॉलोनियों की स्थापना से शहर के विस्तार में वृद्धि हुई, जो बढ़कर 1971 में 4300 एकड़, 1988 में 8595 एकड़, 1997 में 9879 एकड़ तथा वर्ष 2011 में 15814 एकड़ (64 वर्ग कि.मी.) हो गया। हरित क्षेत्र कम होते चले गये। आसपास के परिधि क्षेत्र के गांवों को शहरी क्षेत्र में मिलाने और अन्य विस्तार के कारण वर्ष 2031 तक उदयपुर नगरीय क्षेत्र 49848 एकड़ (200 वर्ग कि.मी.) होने का अनुमान है।

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

उदयपुर शहर – मुख्य पिछोला झील के सहवर्ती झीलें एवं मुख्य शहर का विस्तृत स्वरूप

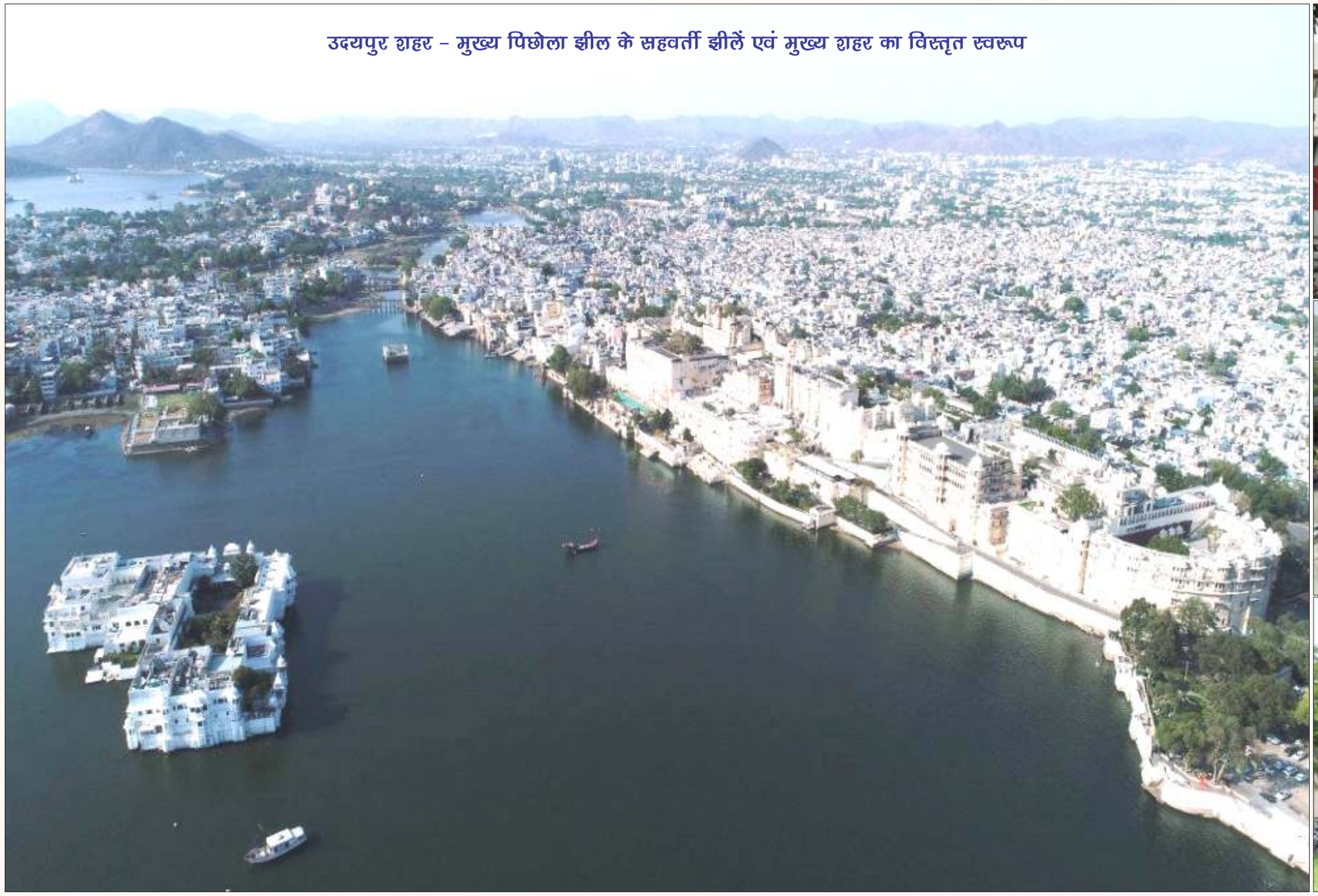

रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

मदनमोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर

क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान,
उत्तर-पश्चिम रेलवे, उदयपुर

माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

जनसंख्या : स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जनगणना के अनुसार वर्ष 1951 में उदयपुर शहर की जनसंख्या 89,621 थी जो वर्ष 1991 में बढ़कर 3,08,571 हो गई। इसी प्रकार वर्ष 2011 में यह बढ़कर 4,51,100 हो गई, जो वर्ष 2031 में अनुमानतः 10,00,000 हो जायेगी। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उदयपुर शहर (नगर पालिका क्षेत्र) में पुरूष और महिला आबादी क्रमशः 2,33,959 एवं 2,17,141 रही, जबकि कुल अधिसूचित शहरी क्षेत्र (नगर पालिका क्षेत्र और अधिसूचित 136 गांवों सहित) की जनसंख्या 4,74,531 थी। उदयपुर शहर की अर्थव्यवस्था में पर्यटन, कृषि एवं खनिज उद्योगों का प्रमुख योगदान है।

उदयपुर नगर पालिका क्षेत्र की जनसंख्या वर्ष 1881 में 38,264 थी, जो निरन्तर बढ़कर वर्ष 2011 में 4,51,100 हो गई। जनसंख्या में यह वृद्धि केवल 1901–1911 में नकारात्मक रही, जो पिछले दशक की जनसंख्या 45,000 से गिरकर 33,000 ही रह गई थी। वर्ष 1941–51 के दशक के दौरान 50 प्रतिशत की अधिकतम् जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई। इस जनसंख्या वृद्धि से शहर की आधारभूत आवश्यकताओं के साथ आवास व्यवस्था पर दबाव बढ़ गया।

उदयपुर शहर की जनसंख्या वृद्धि की स्थिति (1881-2011)

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर
1881	38264	-	-
1891	48530	(+) 10266	(+) 26.88
1901	45976	(-) 2604	(-) 5.36
1911	33229	(-) 12747	(-) 27.73
1921	34789	(+) 1560	(+) 4.69
1931	44035	(+) 9246	(+) 26.58
1941	59648	(+) 15613	(+) 35.6
1951	89621	(+) 29973	(+) 50.25
1961	111139	(+) 21518	(+) 24.01
1971	161278	(+) 50139	(+) 45.11
1981	232583	(+) 71310	(+) 44.21
1991	308571	(+) 75983	(+) 32.67
2001	389438	(+) 80800	(+) 26.21
2011	451100	(+) 61662	(+) 15.83

स्रोत : भारत की जनगणना–2011

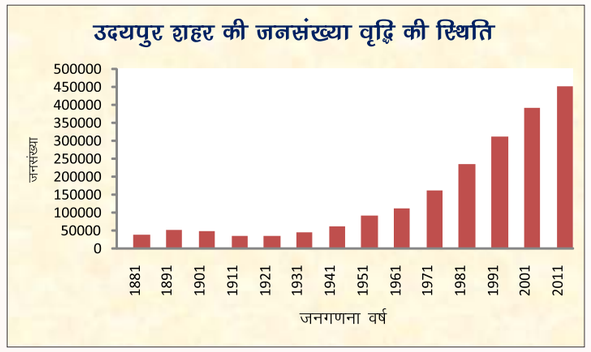

उदयपुर शहर की जनसांख्यिकीय संकेतकों में दशकीय भिन्नता (1981-2011)

विवरण	1981	1991	2001	2011
कुल जनसंख्या	232583	308571	389438	451100
लिंगानुपात	844	845	907	925
जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.)	-	4784	6038	7014

स्रोत : भारत की जनगणना–2011

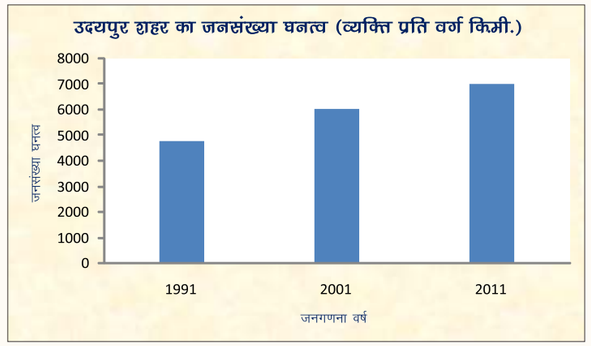

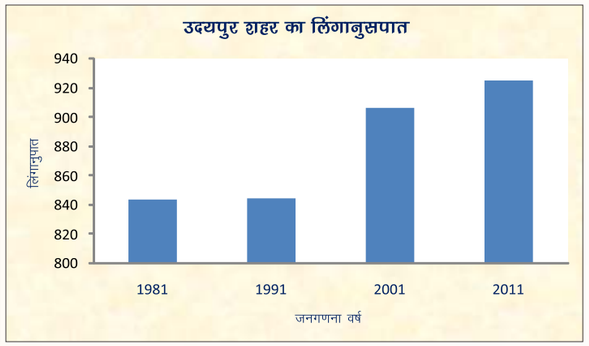

वर्ष 1981 में शहर का जनसंख्या घनत्व 4,784 व्यक्ति प्रति कि.मी. से बढ़कर वर्ष 2011 में 7,014 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया। समान क्षेत्रों वाले शहरों की तुलना में जनसंख्या का यह घनत्व काफी अधिक है। शहर की तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने कच्ची बस्तियों के अनधिकृत विस्तार में योगदान दिया। शहर की कुल आबादी की 10.66 प्रतिशत जनसंख्या कच्ची बस्तियों में निवास कर रही है। यह अप्रवासी ग्रामीण आबादी है जो श्रमिकों के रूप में औद्योगिक इकाइयों, निर्माण स्थलों, कला हस्तशिल्प एवं घरेलू क्षेत्रों में कार्यरत है। स्थानीय निकायों को शहर की कच्ची बस्तियों में आधारभूत सुविधाएँ मुहैया कराने हेतु बुनियादी ढाँचा विकसित करना होगा। शहर में बुनियादी आवश्यकता के साथ शिक्षा सुविधा में वृद्धि होने के कारण लिंगानुपात में भी काफी सुधार हुआ है। उदयपुर शहर के लिंगानुपात में 1000 पुरुषों की तुलना में वर्तमान अर्थात् जनगणना 2011 के अनुसार 925 महिलाएँ हैं जो कि वर्ष 1991 में मात्र 845 थी।

उदयपुर का विकास एवं मास्टर प्लान : नगरीय विस्तार के साथ–साथ ही शहरकोट के अन्दर एवं बाहर तंग सड़कों पर निरन्तर बढ़ते यातायात, अवरुद्ध जंक्शन, अनियोजित एवं मिश्रित वाणिज्यिक स्थल, अपर्याप्त सामुदायिक सुविधाएँ एवं सेवाएँ, यहां तक कि आधारभूत सावर्जनिक संसाधनों का अभाव जैसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती गई। ऐसी स्थिति में यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि इन समस्याओं के समाधान एवं अनियोजित विकास के नियंत्रण हेतु विशेष प्रयास किये जावे।

इस हेतु राज्य सरकार के आदेशानुसार वर्ष 1971 में 39 राजस्व ग्रामों एवं उदयपुर नगर को सम्मिलित करते हुए इस वर्ष की जनगणना के आधार पर मास्टर प्लान आगामी 20 वर्षों तक अर्थात् सन् 1996 तक की आवश्यकताओं को प्रस्तावित किया गया जिसे राज्य सरकार द्वारा दिनांक 16 मार्च, 1981 को अनुमोदित कर, अंतिम अधिसूचित किया गया। सन् 1991 की जनगणना एवं 1997 तक हुए विकास के भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर वर्ष 2022 तक की नगर की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दूसरा मास्टर प्लान तैयार कर राज्य सरकार द्वारा अनुमोदन कर दिनांक 23 जनवरी, 2003 को अधिसूचित किया गया। इसके बाद शहर की बढ़ती जनसंख्या व बाहरी क्षेत्रों में नगर के फैलाव व विकास को देखते हुए नगर विकास प्रन्यास के निवेदन पर मास्टर प्लान 2022 का पुनरावलोकन कर दूरगामी वृहद् योजना मास्टर प्लान में 130 राजस्व ग्रामों को सम्मिलित करते हुए वर्ष 2011 की जनसंख्या के आंकड़ों के आधार पर वर्ष 2031 तक तीसरा दूरगामी वृहद् मास्टर प्लान बनाया गया जिसे राज्य सरकार ने अनुमोदित कर दिनांक 24 सितम्बर, 2013 को अधिसूचित किया।

इस प्रकार उपरोक्तनुसार एक के बाद एक तीन मास्टर प्लान बने, लेकिन कलक्ट्रेट, कोर्ट एवं अन्य सरकारी कार्यालय शहर के मध्य ही स्थित रहे। प्रस्तावित मिनी सचिवालय नहीं बन सका तथा इसके लिए शहर के मध्य किसी उपयुक्त स्थान का चयन भी नहीं हो सका। यहाँ के स्थानीय नागरिक क्या इतने लाचार थे, क्या उनमें दूरदृष्टि का अभाव रहा। उदयपुर में आये हुए प्रशासनिक अधिकारी जिनमें संभागीय आयुक्त, कलक्टर, नगर निगम आयुक्त, नगर विकास प्रन्यास सचिव आदि को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि वे तो अपने कार्यकाल को त्रुटिरहित सफलतापूर्वक पूर्ण कर चले जाने में ही अपना हित समझेंगे। जब भला यहां के निवासी ही चिन्तित नहीं हैं तो दूसरे क्यों चिन्ता करेंगे। इसके अतिरिक्त हम उदयपुर के लिए एक सुव्यवस्थित पर्यटक हब, हमारे गौरवशाली इतिहास, संस्कार व संस्कृति, सुन्दर–सुरम्य प्राकृतिक स्थल, खनिज आधारित वृहद् संग्रहालय के साथ एक और राजकीय मेडिकल कॉलेज, एक और गुलाब बाग बनाने के लिए मास्टर प्लान में उचित स्थान निर्धारित कर हम उनका निर्माण नहीं कर पाये, यह एक विचारणीय विषय है।

शहर का विकास और विरासत का विनाश : (1) लुप्त हुआ शहरकोट : शहर पिछले 75 वर्षों में अपने बदलते स्वरूप को देख रहा है। दर्शनीय शहरकोट को हटा दिया गया। शहरकोट अपनी वेदना इन शब्दों में कह रही है–''मुझे बनने में कुछ दशक लगे होंगे लेकिन तोड़ने एवं अतिक्रमण में कुछ ही वर्ष। मुझ पर सड़क, बाजार एवं मकान बना दिये गये। मैं पुकारती रही, मैं तो चीन की दीवार की तरह दर्शनीय थी, बहुत मजबूत थी, मेरे ऊपर से सारा शहर देख सकते थे, घोड़े दौड़ सकते थे, काश! उदयपुर की भावी पीढ़ी, देश एवं विदेश के लोग मुझ पर घूम सकते। मेरे दरवाजे–उदियापोल, सूरजपोल, देहलीगेट, हाथीपोल, अम्बापोल, चाँदपोल, ब्रह्मपोल अभी भी हैं लेकिन कुछ पर दुकानें बन गई, कुछ पर पुलिस चौकियाँ बन गई, कुछ पर मूर्तियाँ लगाकर उन्हें छिपा दिया गया हैं। काश! इनकी भव्यता एवं उदयपुर बसावट में इनके महत्व को ध्यान में रखते हुए इन्हें बचाया जा सकता। हेरिटेज वॉक की सोच रहे हो – शहरकोट और दरवाजों को क्यों भूल रहे हो। खैर, जो होना था, हो गया, जिन्होंने ऐसा किया वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, पर जो वैभव शेष रहा है, उसे तो बनाये रखा जा सकता है।'' विरासत में मिली शहरकोट तोड़कर या उसके पास

अश्विनी बाजार, बापू बाजार, सिटी स्टेशन रोड आदि बना दिये गये। इन बाजारों को शहरकोट को सुरक्षित रखते हुए भी विकसित किया जा सकता था।

(2) सलेटिया ग्राउण्ड में नगर निगम : शहर के पूर्वी भाग में पहले सलेटिया ग्राउण्ड था, जिस पर बच्चे उस पर खेलते थे, वहाँ नगर निगम का कार्यालय बन गया। इसके कुछ भाग को विद्या की नगरी बनाने के लिए दे दिया। वर्तमान में क्या हुआ, यह किसी से छुपा नहीं है। व्यापारिक प्रतिष्ठान, बैंक, होटल्स आदि बना दिये गये हैं।

(3) तांगा स्टेण्ड पर एल.आई.सी. भवन : देहलीगेट के बाहर एक ताँगा स्टेण्ड था, जहाँ पर एक सुन्दर छतरी वाली प्याऊ थी। जब तांगे के घोड़े थक कर आते थे तो वहाँ पानी पीते थे। रजका व घास यहीं से खरीदते थे। किसी एक दिन उस पर एल. आई.सी. की इमारत बन गई। क्या भारतीय जीवन बीमा निगम की यह इमारत कहीं और नहीं बनाई जा सकती थी? यह स्थान पूर्व जैसा रहता तो आज यह स्थल वाहन पार्किंग विशेषकर पर्यटकों की वाहन पार्किंग के लिए उपयुक्त स्थल होता। देहली गेट पर व्यस्तता बढ़ गई। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय को किसी दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

(4) भव्य बापू बाजार की दुर्दशा : स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शहरकोट तोड़ने के बाद वर्ष 1956 में शहर में व्यापारिक हब के रूप में बाहरी दृश्य में एकरूपता के साथ बापू बाजार का निर्माण किया गया। सड़क की चौड़ाई चार लाइन के बराबर रखी गई। बाजार की दुकानों के आगे 8 फीट चौड़ा बरामदा पैदल चलने वाले राहगीरों, पर्यटकों एवं ग्राहकों के लिए रखा गया। विरासत में मिले इस भव्य बाजार के बरामदे को कालान्तर में दुकानों में समाहित कर दिया गया। एक नियोजित एवं सुगमतापूर्ण बाजार का भव्य स्वरूप व्यक्तिगत हितों की भेंट चढ़ गया। यह परिवर्तन किस आधार पर किया गया? साथ ही राहगीरों के चलने के स्थान को समाप्त कर दुकानदारों ने दुकान पर चढ़ने हेतु 3 से 6 फीट चौड़ी सीढ़ियां भी बना दी। इस प्रकार मुख्य सड़क काफी संकड़ी हो गई तथा बापू बाजार का भव्य स्वरूप हम सबने मिलकर समाप्त कर दिया।

(5) अश्विनी बाजार-सिटी स्टेशन रोड एवं अन्य बाजारों का उद्भव : इसी तरह हाथीपोल से देहली गेट एवं सूरजपोल से उदियापोल के मध्य भव्य शहरकोट के साथ जो गहरी खाई के रूप में स्थान विद्यमान था, उस स्थान पर बड़ा नाला बनाकर अश्विनी बाजार, सिटी स्टेशन रोड बाजार बना दिया गया। जो भी स्थान रिक्त था उसे व्यापारिक गतिविधियों हेतु पूर्णतया उपयोग कर लिया गया। इसी तरह पूर्व चेटक सिनेमा के साइकिल स्टेण्ड के सामने रिक्त भूमि पर बाजार बना दिया गया। स्वरूप सागर से हाथीपोल रोड एवं हाथीपोल के बाहर भी व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित कर दिये गये। शहरकोट के बाहर कोई भी स्थान भावी परिकल्पनाओं के आधार पर आरक्षित नहीं रखा गया। भवन पर भवन बनते चले गये तथा पार्किंग, पुलिस स्टेशन, विद्युत एवं सफाई नियंत्रण कक्ष आदि आधारभूत सुविधाओं हेतु कहीं पर भी आरक्षित भूमि नहीं रखी गई। इसी कारण पुलिस चौकियां आज भी मुख्य दरवाजों अथवा पोल में ही स्थित है।

(6) आयड़ नदी का बुरा हाल : पंचवटी, भूपालपुरा, अशोक नगर बसाते समय गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी के दोनों ओर स्थित तटों को नदी के अधिकतम् बहाव स्तर पर रिक्त एवं काफी चौड़ा रखा गया था। लेकिन समय के साथ नदी एवं नाले के दोनों तटों पर बिना सड़क बनाये रिक्त भूमि पर प्लॉटिंग कर दी गयी। मकान बनते गये, नदी में अतिक्रमण होता गया। आज आयड़ नदी का जो हाल है, उसकी समस्त जिम्मेदारी शहर के नियोजकों की हैं। काश! दोनों तटों पर पहले ही सड़क बना दी जाती तो आज अतिक्रमण नहीं बढ़ता एवं इस नदी को सुन्दर एवं भव्य बनाने में प्रस्तावित परियोजना की क्रियान्विति में काफी आसानी रहती।

(7) सिटी रेलवे स्टेशन का बिगड़ता स्वरूप : शहर के भव्य सिटी रेलवे स्टेशन के बाहर दो सुन्दर पार्क बनाये गये थे, जिसमें नियमित फव्वारें चलते रहने के साथ यात्रिगण विश्राम करते थे। दोनों पार्कों के मध्य कुछ वर्ष पूर्व एक होटल बना दी गई। इस निर्माण से सिटी स्टेशन के बाहरी स्वरूप पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। क्या इस स्टेशन की पूर्व जैसी खुलेपन युक्त भव्यता पुनः ला सकते हैं? यह होटल स्टेशन के दक्षिणी छोर पर रिक्त पड़ी हुई रेलवे की भूमि पर भी बनायी जा सकती थी। उदयपुर शहरकोट का पुनर्निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसके पास स्थित रिक्त स्थल जहां बापू बाजार, अश्विनी बाजार, सिटी स्टेशन रोड बाजार, नगर निगम कार्यालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय आदि बने हुए हैं, उन्हें भी पूर्व स्थिति में स्मार्ट सिटी की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित करना संभव नहीं होगा। उदयपुर के शहरकोट क्षेत्र में स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत तीव्र विकास की संभावनाएँ अभिव्यक्त की गई हैं तथा शहरकोट के बाहर भी अनेक प्रकार से विकास की परिकल्पनाएँ प्रस्तावित हैं। इसके अलावा रेलवे मंत्रालय की करीब 354 करोड़ रुपये की लागत से पीपीपी मोड पर सिटी रेलवे स्टेशन का विश्व स्तरीय पुनर्निर्माण एवं संचालन करने की योजना है। इसके मॉडल में प्रथम और द्वितीय प्रवेश द्वार से लेकर प्लेटफार्म और अन्य सभी सुविधाओं को दिखाया गया है। यह कार्य मात्र तीन वर्षों में पूरा होगा। इसके अन्तर्गत एक ही छत के नीचे हर सुविधा देने की योजना है। इस निर्माण कार्य में व्यावसायिक गतिविधियों के साथ यात्रियों की सुविधाओं में भी विस्तार होगा। दोनों प्रवेश द्वार एक जैसे बनाए जायेंगे।

उदयपुर शहर स्मार्ट सिटी प्रस्ताव : देश के प्रथम चरण के 20 शहरों में से उदयपुर शहर को भी स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने की स्वीकृति भारत सरकार के शहरी विकास मंत्रालय से प्राप्त हुई है। उदयपुर नगर निगम 64 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 55 वार्डों में फैला हुआ है। इस शहर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने के लिए सुझाव देने वाले नागरिकों में से 77% ने उदयपुर शहरकोट क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता दी हैं। यह शहर के कुल क्षेत्रफल का 5.1% (3.35 वर्ग किमी/828 एकड़) है एवं इस क्षेत्र में शहर की 20% जनसंख्या निवास करती हैं। इस क्षेत्र की महत्ता इसमें है कि इसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा विरासत में मिली 400 इमारतें स्थित हैं, राजमहल हैं, दरवाजे हैं, मन्दिर हैं, मुख्य झील पिछोला है, सुन्दर घाट हैं, सुरम्य तट हैं एवं शहर की अत्यधिक सक्रियता इसी क्षेत्र में है। साथ ही शहर की अधिकांश जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) भी इसी क्षेत्र से प्राप्त होती है। बाहरी उदयपुर भी दुनिया का पसंदीदा झील किनारे स्थित हेरिटेज सिटी है।

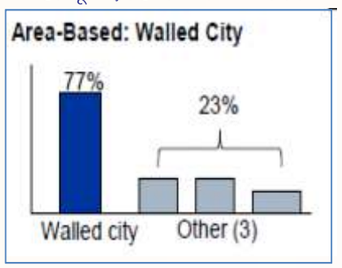

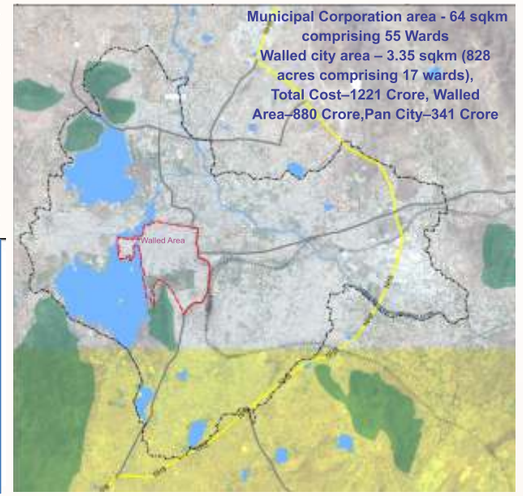

स्मार्ट सिटी की प्राथमिकताएँ : स्मार्ट सिटी के विकास के अन्तर्गत इस क्षेत्र में रहने वाले सभी नागरिकों को प्रतिदिन (24×7) नियमित शुद्ध पेयजल, विद्युत उपलब्धता, ठोस कचरा प्रबन्धन, पैदल चलने हेतु निर्धारित फुटपाथ, स्वच्छ गतिशीलता, पर्यटक सुविधाएं, सीवरेज व्यवस्था उपलब्ध होगी। झील एवं विरासत के संरक्षण से इस क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होगी एवं शहर के 44 प्रतिशत नागरिकों ने पर्यटक व्यवसाय को प्राथमिकता दी है। वर्ष 2019 में 11.85 लाख पर्यटक उदयपुर भ्रमण हेतु आये थे। इसमें स्थानीय एवं विदेशी नागरिक क्रमशः 84.07% व 15.93% थे। पर्यटक वृद्धि दर पिछले वर्षों में मात्र 2.06% रही है। यह परिकल्पना है कि उदयपुर के शहरकोट एवं उसके बाहरी क्षेत्र को यदि हम स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित कर सके तो यह पर्यटक वृद्धि दर 15% से 20% प्रतिवर्ष की दर से हो सकती है। इसके लिए शहर में आधुनिक सुविधाओं के साथ शहरकोट के बाहर हमें शहरवासियों एवं पर्यटकों के लिए स्मार्ट पार्किंग व्यवस्था के साथ अन्य सुविधाएँ बढ़ानी होगी। यातायात प्रबन्धन को सुचारु करने के साथ स्थानीय नागरिकों के व्यक्तिगत वाहनों का शहर में प्रवेश भी नियंत्रित करना होगा। शहर में बाईसाइकिल, बैट्री एवं सोलर ऊर्जा चालित आई.पी.टी. सर्विसेज बढ़ानी होगी। शहर में लैण्ड स्केपिंग के साथ उचित स्थानों पर पर्यटन स्थल, दरवाजे, पोल्स, मन्दिर, कलात्मक कृतियां, उद्यानों का नवीनीकरण, वाटर फ्रन्ट्स के साथ जन सुविधाओं एवं विश्राम स्थलों को विकसित करना होगा। शहर को पर्यावरण की दृष्टि से उन्नत बनाने के लिए सीवरेज निस्तारण की आधारभूत सुविधाओं का विकास, झीलों में बिछाई गई सीवरेज लाइनों को हटाना, सीवरेज एवं गन्दे पानी को पुनः शुद्ध कर उद्योगों एवं उद्यानों के उपयोग हेतु उपलब्ध कराना आवश्यक हैं।

शहर के नागरिकों से प्राप्त सुझावों के आधार पर निम्नानुसार प्राथमिकताएँ प्राप्त हुई हैं :–

- शहर के 66,486 नागरिकों ने निश्चित प्रारूप में अपनी प्राथमिकता दर्ज कराई।
- इनमें से 44% ने पर्यटन व्यवसाय।
- 26% ने पेयजल उपलब्धता एवं सीवरेज सुधार।
- 14% ने झील एवं विरासत संरक्षण।
- 7% ने सार्वजनिक परिवहन एवं वाक–एबिलिटी।
- 6% ने बचाव एवं सुरक्षा।
- 3% ने अन्य को प्राथमिकताएं दी।

स्मार्ट सिटी के मुख्य प्रस्ताव

- नियमित विद्युत उपलब्धता : भूमिगत केबलिंग, SCADA (Supervisory Control and Data Acquisition) एवं स्मार्ट मीटरिंग के माध्यम से नियमित (24×7) विद्युत उपलब्धता की व्यवस्था करना।
- शहर की कुल विद्युत आवश्यकता की लगभग 10 प्रतिशत सोलर पावर से प्राप्त हो। राजकीय एवं सार्वजनिक भवनों के साथ घरों की छतों पर सोलर प्लान्ट स्थापित करने हेतु आमजन को प्रोत्साहित करना।
- नियमित जल, सिवरेज, घरेलू गैस, दूर–संचार व्यवस्था हेतु भी समन्वित भूमिगत डक्ट्स का निर्माण करना।

Proposed road cross-section to integrate all utility services

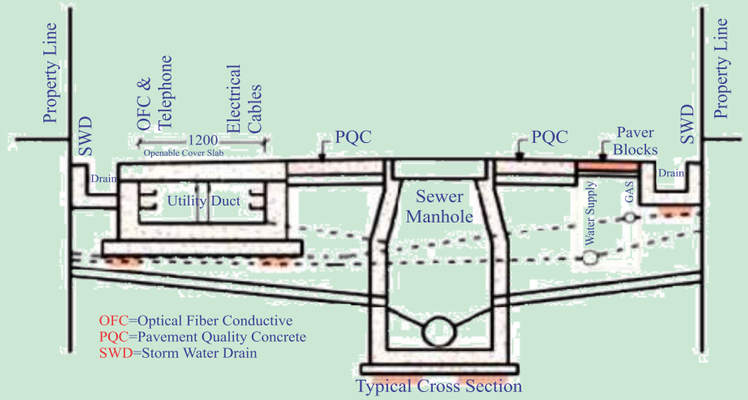

All infrastructure utility services would run below CC road

- शहर में फुटपाथ चौड़ा करना, अव्यवस्थित गलियों को सुव्यवस्थित करना।
- शहर के 85 कि.मी. रोड नेटवर्क का पुनरुद्धार करना।
- खंभों पर लगी स्ट्रीट लाइटों को इमारतों की बाहरी दीवारों पर सुव्यवस्थित रूप से स्थापित करना।
- 8 कि.मी. लम्बे विरासत मार्ग को कॉबल स्टोन फुटपाथ के रूप में विकसित करना।
- शहर में लैण्ड स्केपिंग के माध्यम से हरित एवं चौक युक्त क्षेत्र में वृद्धि करना तथा गेट–वे पर व्यवस्थित फुटपाथ मय स्ट्रीट फर्नीचर व छतरियों का निर्माण करना।
- मुखर्जी चौक में सुव्यवस्थित सब्जी मण्डी का विकास करना।
- शहर के मुख्य बाजारों में बड़ा बाजार, जगदीश चौक से घण्टाघर, मोती चौहट्टा, जगदीश चौक से गणगौर घाट, जगदीश चौक से सिटी पैलेस बाजार को संरक्षित रखते हुए इनमें स्थित इमारतों के बाहरी दृश्यों में एकरूपता के अतिरिक्त उपयुक्त सार्वजनिक स्थल एवं व्यवस्थित पार्किंग के माध्यम से सुधार लाना।

- झील के पानी के प्राकृतिक शुद्धीकरण के साथ निश्चित समयावधि में उसकी गुणवत्ता का स्वचालित प्रणाली द्वारा जांच–पड़ताल करना। इससे प्राप्त रियल टाइम डेटा का तत्काल सुधारात्मक कार्यों एवं उपचार के लिए इस्तेमाल हो।
- गन्दे पानी का पुनः शुद्धीकरण कर उद्योगों एवं उद्यानों के लिए इस्तेमाल करना क्योंकि शहर की भौगोलिक स्थिति एवं स्थानाभाव के कारण इसके समुचित उपयोग हेतु दो पाइप लाइनें डालना संभव नही है।
- ठोस कचरा प्रबन्धन के अन्तर्गत उसके स्रोत पर प्रकृति के अनुसार पृथक्कीकरण करना। (संपूर्ण शहर में एकीकृत व्यापक कचरा निस्तारण स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत करना।)
- यातायात परिचालन व्यवस्था को व्यक्तिगत वाहनों को नियंत्रित करते हुए साइक्लिंग एवं बैट्री/सोलरचलित आईपीटी सेवा को प्रोत्साहित कर विकसित करना।
- शहर में वर्षा जल संरक्षण के अन्तर्गत नलकूपों एवं शहर की बावड़ियों का पुनरुद्धार करना।

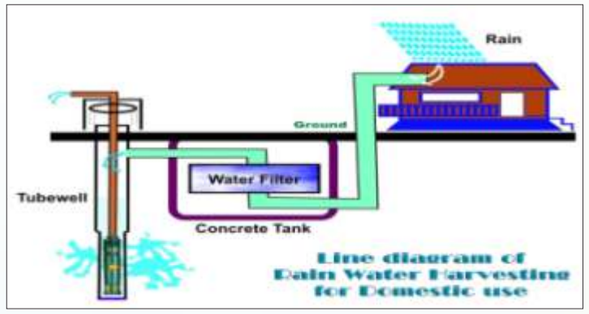

- सामाजिक आधारभूत संरचना के अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों में स्मार्ट क्लास रूम विकसित करना एवं जन साधारण हेतु हेल्थ एण्ड वाटर एटीएम की स्थापना करना।
- शहर में सार्वजनिक एवं दर्शनीय स्थलों पर फ्री पब्लिक वाई–फाई (इन्टरनेट) की सुविधा उपलब्ध हो।
- शहर में सुरक्षा एवं बचाव व्यवस्था के अन्तर्गत लगभग 500 स्मार्ट कैमरे लगाकर कर एक सक्षम एकीकृत नियंत्रण कक्ष की स्थापना सुनियोजित निगरानी में करना।
- पर्यटकों हेतु पर्यटन स्थलों, विशेष कार्यक्रम स्थलों, अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त आपसी बातचीत के लिए मेप आधारित मोबाइल एप की सुविधाएँ विकसित करना।
- हेरिटेज लुक के अनुसार सड़कों पर लाइटिंग व्यवस्था करना।
- शहर में थैले वालों लिए समरूप सुनियोजित स्थलों को विकसित कर उनकी व्यवस्थित निगरानी करना।
- जनसाधारण एवं पर्यटकों के लिए सार्वजनिक एवं पर्यटन स्थलों की रूपरेखा को सुधार कर तरह–तरह की वनस्पतियां लगाकर उसे निखारना।
- इस ऐतिहासिक शहर के दरवाजे एवं पोल, मन्दिर, कलात्मक संकेत, झील के तटों एवं घाटों का नवीनीकरण, सार्वजनिक सुविधाएँ एवं विश्राम स्थल आदि को विकसित करना।
- **झील तटीय क्षेत्र विकास** : पिछोला झील के तट पर (गणगौर घाट से स्वरूप सागर तक) आमजन एवं पर्यटकों के भ्रमण हेतु तख्ते से निर्मित तैरते हुए पथ का निर्माण करना तथा दर्शकों को जलीय तट के अनुभवों से रूबरू कराना। इसमें स्ट्रीट फर्नीचर, आच्छादित विचरण पथ, सुन्दर दृश्यावलोकनार्थ स्थल, फूड हब हेतु विशेष जोन, नाव घाट, सुरक्षित सार्वजनिक दायरे के लिए सतर्कता आदि की समुचित व्यवस्था हो।

- पुराने शहर में प्रवेश हेतु अनेक मार्गों में से देहलीगेट को एक व्यापक एवं मुख्य प्रवेश स्थल के रूप में विकसित करना।
- शहरकोट के बाहर शहरवासियों, पर्यटकों एवं दर्शकों के लिए स्मार्ट पार्किंग की व्यवस्था करना।

- **पैदल यात्री सुविधा** : शहरकोट क्षेत्र में यातायात की सघनता को कम करने हेतु दिन में वाहनों के प्रवेश को नियंत्रित करना जिससे फुटपाथ पर चलने वाले पैदल यात्री सुगमता से चल सके। इसके अतिरिक्त साझा बाइसाइकल एवं हेरिटेज वॉक को प्रोत्साहित करना। दिव्यांगों के लिए सुविधानुसार पाथ–वे बनाना तथा बस स्टेण्ड के आसपास के अवरोधों को न्यूनतम् करना।
- **स्मार्ट पार्किंग प्रबन्धन** : शहर के महत्वपूर्ण उद्यान गुलाब बाग अथवा सार्वजनिक निर्माण विभाग के परिसर में एक निश्चित क्षेत्र को आरक्षित कर वाहन पार्किंग की सुचारु व्यवस्था विकसित करना ताकि शहरकोट क्षेत्र के अन्दर के सघन यातायात को नियंत्रित किया जा सकेगा। आईपीटी वाहन स्टेण्ड को इसी क्षेत्र में अवस्थित किया जा सकेगा जिससे पार्क एवं शहरकोट क्षेत्र में पैदल भ्रमण किया जा सकेगा। इससे शहरकोट क्षेत्र के निवासियों को रात्रि में व्यवस्थित कार पार्किंग की सुविधा प्राप्त हो सकेगी। इस क्षेत्र को आईटीएस एवं रियल टाइम इन्फोर्मेशन सिस्टम से जोड़ा जायेगा जिससे बस, ट्रेन, एयरप्लेन आईपीटी सर्विस की सूचना निरन्तर उपलब्ध होती रहेगी।
- शहर की सड़कों एवं गलियों में विचरण करने वाले लावारिस पशुओं के लिए एक उपयुक्त स्थल यथा ''कांजी हाउस'' आदि विकसित कर उन्हें पनाह देना।
- पी.एन.जी. एवं सी.एन.जी. उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- स्मार्ट सिटी प्रस्ताव के अनुसार पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों को अपने चार पहिया एवं दो पहिया वाहन शहरकोट के बाहर विकसित पार्किंग स्थल पर कम से कम दिन के समय पार्क करने होंगे। शहरकोट के बाहर वर्तमान स्थिति में बहुत सीमित संख्या में पार्किंग स्थल विकसित किये गये हैं तथा इसके लिए व्यापक प्रयास अपेक्षित है।
- **पेन शहर प्रस्ताव** : शहरकोट से लगे हुए उदयपुर शहर के विकास के लिए कुछ पहलू चयन करने के लिए सुझाव आमंत्रित किये गये, जिसके आधार पर –
  (1) 68 प्रतिशत ठोस कचरा व्यवस्था प्रबन्धन
  (2) 21 प्रतिशत यातायात एवं पार्किंग
  (3) 6 प्रतिशत सीवरेज सिस्टम
  (4) 3 प्रतिशत पर्यटकों की सुविधा
  (5) 2 प्रतिशत बचाव एवं सुरक्षा

  इस प्रकार पेन सिटी प्रस्ताव में ठोस कचरा प्रबन्धन एवं यातायात व पार्किंग व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई है।

● उदयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत शहरकोट क्षेत्र एवं बाहरी शहर (पेन शहर) के विभिन्न कार्यों पर वर्ष 2015 के मूल्य आधार पर क्रमशः 880 एवं 341 करोड़ यानी कुल 1221 करोड़ रुपये की लागत प्रस्तावित है। यह संपूर्ण खर्च 5 वर्षों की अवधि में किया जाना है तथा लागत वृद्धि के कारण यह खर्च करीब 1526 करोड़ रुपये संभावित है।

● उपरोक्त प्रस्तावित खर्च में से 980 करोड़ रुपये (64%) भारत सरकार, राजस्थान सरकार एवं नगर निगम, उदयपुर द्वारा स्मार्ट सिटी परियोजना में अनुदान/इक्विटी के रूप में, 400 करोड़ रुपये (26%) पी.एस.यू./पी.पी.पी., 75 करोड़ रुपये (5%) अमृत परियोजना एवं 72 करोड़ रुपये (5%) वित्तीय संस्थाओं से दीर्घकालीन ऋण के माध्यम से जुटाये जायेंगे। इस परियोजना का संपूर्ण कार्य कम्पनी एक्ट, 2013 के अन्तर्गत एक लिमिटेड कम्पनी स्मार्ट प्रोजेक्ट वेकल (एसपीवी) का गठन कर किया जायेगा। राज्य सरकार एवं नगर निगम, उदयपुर इस लिमिटेड कम्पनी के बराबर भागीदारी के प्रायोजक होंगे। कम्पनी की अधिकारिक पूँजी 500 करोड़ रुपये में से प्रारम्भिक पूँजी 200 करोड़ रुपये राजस्थान सरकार एवं नगर निगम, उदयपुर (प्रथम वर्ष भारत सरकार से प्राप्त अनुदान में से) द्वारा बराबर वहन किया जायेगा। स्मार्ट प्रोजेक्ट वेकल के अन्तर्गत उदयपुर नगर निगम की कुल आमदनी के 20% के अतिरिक्त शहरकोट एवं शहरकोट के बाहर (पेन शहर) क्षेत्र के प्रत्येक घर/व्यापारिक प्रतिष्ठान से क्रमशः रू. 2400 व 200 प्रति वर्ष जनहित सुविधाओं के उपयोग हेतु रख–रखाव शुल्क के रूप में लिये जायेंगे। देशी एवं विदेशी पर्यटकों से क्रमशः 100 एवं 500 रुपये प्रतिव्यक्ति होटलों के माध्यम से एकत्रित किये जायेंगे।

● स्मार्ट प्रोजेक्ट वेकल के चेयरमेन राजस्थान सरकार के स्थानीय स्व–शासन विभाग के प्रधान सचिव, उप–चेयरमेन स्थानीय मेयर होंगे। पूर्णकालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी के साथ बोर्ड में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार के प्रतिनिधि, स्वतन्त्र निदेशक एवं परामर्शक मण्डल के अन्तर्गत स्थानीय लोकसभा व विधानसभा सदस्य एवं ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ सम्मिलित होंगे।

मदवार लागत विवरण

परियोजना लागत का संक्षिप्त विवरण	वर्ष 2015 मूल्य आधारित लागत (करोड़ रुपये में)
क्षेत्र आधारित विकास (शहरकोट क्षेत्र)	880
पान सिटी – स्मार्ट सुविधाएँ (शहरकोट के बाहर)	155
पान सिटी – सुव्यवस्थित परिवहन (ITMS)	186
कुल	**1221**
भाग/पदवार आधार लागत मूल्य (वर्ष 2015 के अनुसार)	
(अ) शहरकोट क्षेत्र	
जलापूर्ति	58
सीवरेज	139
विद्युत आपूर्ति	129
ड्रेन्स, नाली, सड़क सुधारीकरण, यूटिलिटी डक्ट	148
विरासत संरक्षण एवं स्ट्रीट लाइट	63
शहरकोट परिवहन आधारभूत संरचनाएँ	138
पाईप्ड–प्राकृतिक गैस	90
सोलर ऊर्जा उत्पादन	82
सामाजिक सुविधायें, ठोस कचरा, फायर फाइटिंग एवं पर्यावरण झील	14
कुल लागत (मय आकस्मिक लागत 2%)	**880***
(ब) पान सिटी – स्मार्ट जनोपयोगी सेवाएँ	
पूरे शहर के लिए जी.आई.एस. तकनीकी	12
स्मार्ट मीटर्स – जलापूर्ति	68
स्मार्ट मीटर्स – विद्युत	72
कुल लागत (मय आकस्मिक लागत 2%)	**155****
(स) पान सिटी – सुव्यवस्थित यातायात प्रबन्धन प्रणाली	
सिटी बस मय स्मार्ट बस स्टॉप	62
आई.पी.टी. की समर्थ जी.पी.एस. प्रणाली	81
पार्किंग प्रबन्धन मय वीएमएस, सेन्सर	33
स्मार्ट संकेत, टी.आई.आई.एम.सी., चौकसी प्रणाली, एप	6
कुल लागत (मय आकस्मिक लागत 2%)	**186****
कुल लागत (पांच वर्ष की लागत वृद्धि के साथ)*	1104
कुल लागत (पांच वर्ष की लागत वृद्धि के साथ)**	195
कुल लागत (पांच वर्ष की लागत वृद्धि के साथ)***	227
कुल लागत	**1526**

स्मार्ट सिटी परियोजना : दिनांक 25 जून, 2016 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा स्मार्ट सिटी मिशन का शुभारम्भ विडियो कान्फ्रेन्सिंग द्वारा किया गया। उदयपुर शहर में इस दिन सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के संकल्प के साथ कार्य शुरू हुए। जल्द ही इसके कुछ मॉडल मूर्त रूप लेने लगेंगे। इनमें से निम्नांकित कार्य तो कुछ ही महीनों में पूर्ण हो जायेंगे, लेकिन विरासत संरक्षण के कार्य करीब डेढ़ वर्ष बाद दिखने लगेंगे। इसके साथ ही शहर में 8 स्थानों पर निःशुल्क वाई–फाई की सुविधा शुरू हो गई हैं। पर्यटकों के भ्रमण करने हेतु बस सेवाओं के अन्तर्गत दो बसें भी प्रारम्भ की गई हैं।

1. ओपन जिम स्थापना – गुलाब बाग में 14 एवं फतहसागर के गुरु गोविन्द सिंह पार्क में 8 ओपन जिम उपकरण स्थापित होंगे।
2. नानी गली स्थित कंवरपदा स्कूल में स्मार्ट क्लास रूम (सरकारी विद्यालयों में 40 स्मार्ट कक्षाकक्ष) बनेंगे।
3. जगत शिरोमणि मन्दिर के पास विरासत संरक्षण – मोती चौहट्टा, जगदीश चौक से घण्टाघर–बड़ा बाजार, जगदीश चौक से गणगौर घाट, जगदीश चौक से सिटी पैलेस क्षेत्र में आने वाले भवनों, दुकानों व हेरिटेज इमारतों का संरक्षण करना।
4. शिवाजी नगर स्थित मीराबाई सामुदायिक (सरकारी) भवन पर सोलर प्लान्ट का निर्माण करना।
5. टाउनहॉल में कमाण्ड व कन्ट्रोल रूम की स्थापना।

सिटी रेलवे स्टेशन से एक बस पर्यटकों को शहर के मुख्य पर्यटन स्थलों के भ्रमण हेतु एवं दूसरी बस वन विभाग की विभिन्न साइट्स के भ्रमण हेतु प्रारम्भ की गई हैं। उपरोक्त कार्यों हेतु प्रथम चरण में 9.72 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसमें सबसे बड़ा कार्य हेरिटेज संरक्षण का होगा जिस पर 5.99 करोड़ रुपये खर्च होना प्रस्तावित है।

क्रियान्वयन हेतु संभावनाएँ एवं सुझाव :

- स्मार्ट सिटी मास्टर प्लान के अन्तर्गत राजकीय एवं सामुदायिक भवनों की छतों पर सोलर प्लान्ट स्थापित कर 15 मेगावाट ऊर्जा का उत्पादन करना प्रस्तावित है। साथ ही घरों की छतों पर भी सोलर प्लान्ट स्थापित करने हेतु आमजन को राजकीय अनुदान के अतिरिक्त स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के अन्तर्गत 10 से 20 प्रतिशत तक अनुदान दिया जावे।
- विद्युत व्यवस्था हेतु भूमिगत डक्ट्स के निर्माण कर विद्युत केबल उसमें व्यवस्थित रूप से डाली जावे।
- मुखर्जी चौक में व्यवस्थित सब्जी मण्डी बनी हुई है, इसके पुनरुद्धार को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। सभी विक्रेताओं को इसमें उचित स्थान प्राप्त होना चाहिये। इस सब्जी मण्डी के बाहर के स्थान अर्थात् मुखर्जी चौक को सिटी में पार्किंग स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। व्यवस्थित सब्जी मण्डी हेतु व्यापारियों एवं जनमानस का सहयोग अति महत्वपूर्ण है। इस हेतु उचित परामर्श एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी। यह क्षेत्र लावारिस मवेशियों से मुक्त हो। हाथीपोल सब्जी मण्डी का भी व्यवस्थित उपयोग सुनिश्चित किया जावे।
- जल शुद्धीकरण उपरान्त समस्त जल को आयड़ नदी में डालकर वर्ष भर उसे भरा रखते हुए इसकी सुन्दरता में वृद्धि करना। इस जल को औद्योगिक प्रतिष्ठानों को नहीं दिया जावे।
- शहर में डोर–टू–डोर कचरा संकलित करने की व्यवस्था अधिक सुचारु बनाकर शहर के सभी क्षेत्रों को डस्टबिन फ्री बनाया जावे। संकलन व्यवस्था के अनुरूप प्रत्येक घर में दो से तीन अलग–अलग रंग के कचरा पात्र कचरे के वर्गीकरण हेतु रखे जावें। वर्तमान में कचरा संकलन व्यवस्था बहुत लाभकारी सिद्ध नहीं हो रही है। ठोस कचरे को उसकी प्रकृति के अनुसार विभक्त कर उसका प्रसंस्करण विधिपूर्वक आधुनिक तकनीकी से किया जावे, जिससे इसका पुनः उपयोग एवं मूल्य वृद्धि संभव होगी। घरेलू खाद्य सामग्री, फल–सब्जियों के अवशिष्ट आदि को वर्मी कम्पोस्ट के रूप परिवर्तित किया जा सकता है। प्रत्येक घर/प्रतिष्ठान से प्रतिदिन ठोस कचरा संग्रहण हेतु निर्धारित शुल्क विद्युत बिल के माध्यम से वसूला जावे। इस हेतु जनमानस को प्रोत्साहित करने का पूर्ण प्रयास करते हुए आर्थिक रूप से कमजोर अथवा बीपीएल परिवारों को यथासंभव रियायती दर या निःशुल्क सुविधा दी जावे।
- शहरकोट के चारों ओर व्यवस्थित पॉकेट/मल्टी स्टोरी (मेन्यूअल/मैकेनाइज्ड) पार्किंग विकसित की जावे जिससे पर्यटक एवं स्थानीय नागरिक अपने वाहनों को निर्धारित दर पर पार्क कर सकें। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए सकारात्मक वातावरण के साथ जन सहयोग अति आवश्यक है। स्थानीय नागरिकों के लिए पार्किंग हेतु पर्याप्त अनुदान आधारित प्रोत्साहन योजना आवश्यक होगी। घरों में पार्किंग सुविधाओं को सख्ती से लागू किया जावे। वर्तमान में आवासीय गैराज व्यापारिक प्रतिष्ठानों में परिवर्तित हो रहे हैं एवं गाड़ियाँ सड़कों पर पार्क हो रही हैं। पहले से ही संकड़ी सड़कें और संकड़ी होती जा रही हैं। इन वाहनों के कारण सड़कों की पूर्ण रूप से साफ–सफाई भी नहीं हो पा रही है।
- शहर एवं शहर के आसपास स्थित सभी नलकूप वाले घरों में जल संरक्षण व्यवस्था को आवश्यक रूप से लागू करवाना एवं किसी स्वतंत्र एजेन्सी से प्रमाणित कराना तथा सार्वजनिक बावड़ियों के पास स्थित घरों में जल संरक्षण व्यवस्था स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत स्थापित की जानी चाहिये।
- वर्तमान में राजकीय विद्यालयों के भवनों की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। इन भवनों में स्मार्ट क्लास रूम की व्यवस्था विकसित करने से पूर्व उनका उच्च स्तरीय नवीनीकरण करना अति आवश्यक होगा।
- शहर एवं जनमानस की सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यकतानुसार स्मार्ट कैमरों की स्थापना उच्च स्तरीय नियोजन के साथ की जावे। स्मार्ट कैमरों का नियमित रखरखाव आवश्यक है। इसके लिए सक्षम एकीकृत नियंत्रण कक्ष 24 घण्टे पर्याप्त पुलिस एवं हॉक टीम व्यवस्था के साथ सक्रिय रहे। उच्च स्तरीय स्मार्ट कैमरों को व्यवस्थित एवं सुरक्षित रूप से लगाया जावे।
- फुटपाथ पर नियमों के अन्तर्गत किसी भी तरह का अतिक्रमण नहीं होना चाहिये। इसके लिए सशक्त नियमों का निर्धारण न्याय एवं प्रशासनिक स्तर पर किया जाना चाहिये। वर्तमान में फुटपाथ अतिक्रमित होते जा रहे हैं।
- शहर की परिवहन सेवा को पब्लिक–प्राइवेट पार्टीसिपेशन के अन्तर्गत सुदृढ़ करना। वर्तमान में शहर के मुख्य परिवहन साधन है 7–8 सीटों वाले टेम्पों। इनके स्थान पर जी.पी.एस. युक्त लॉ–फ्लॉर स्मार्ट बस व्यवस्था को बढ़ावा देना। टेम्पों चालकों को छोटी बसें खरीदने के लिए स्मार्ट सिटी परियोजना या सरकारी सहयोग के अन्तर्गत अनुदान का प्रावधान हो। बस संचालन के लिए उच्च स्तरीय व्यवस्था के अन्तर्गत पेन शहर की सभी आवासीय कॉलोनियों की मुख्य सड़कों पर बसें नियमित रूप से संचालित हो जिससे शहर में दो–चार पहिया वाहनों का दबाव कम होगा। बसें सी.एन.जी. या विद्युत चलित हो ताकि शहर के पर्यावरण में भी सुधार हो सकेगा।
- शहर में स्थित सभी पोलों एवं दरवाजों पर स्थित पुलिस चौकियां, व्यापारिक प्रतिष्ठानों आदि को उचित स्थान पर स्थानान्तरित करने हेतु पुराने जर्जर मकानों को प्रशासन द्वारा उचित दाम पर अधिगृहीत किया जाना चाहिये, जहां इन्हें स्थानान्तरित किया जा सके, क्योंकि शहर में राजकीय भूमि का अभाव है।
- शहर में हरित क्षेत्र पहले से ही सीमित है, अतः गुलाब बाग के आंशिक हरित क्षेत्र को विशेष पार्किंग स्थल के रूप में विकसित किया जाना कतई उचित नहीं है। इसके स्थान पर गुलाब बाग के पास स्थित सार्वजनिक निर्माण विभाग के गेंगहट पर यह बहुआयामी पार्किंग व्यवस्था विकसित की जानी चाहिये। 70 वर्षों में हम एक और गुलाब बाग विकसित नहीं कर सकें, इसलिए इसके वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।
- गुलाब बाग में नगर निगम द्वारा कमल तलाई को पक्का करने का निर्णय किया गया है। इसे यथास्वरूप ही रखा जाना चाहिये क्योंकि यह तलाई गुलाब बाग परिसर में स्थित बावड़ियों को रिचार्ज करने के अतिरिक्त विशाल एवं पुराने पेड़ों को जिन्दा रखने हेतु भूमि में नियमित जल संचरण करती है। गुलाब बाग की सुन्दरता में और वृद्धि हेतु इस तलाई में वर्षभर नियमित रूप से कमल खिलते रहे, इस हेतु सकारात्मक प्रयास किये जाने चाहिये।
- शहर के चारों ओर तथा रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन आदि के समीप रात्रिकालीन शरण स्थलों की संख्या एवं उनकी क्षमता में वृद्धि करना। शरण स्थल में स्थान उपलब्धता की जानकारी वीएमएस (परिवर्तनशील संदेश संकेत) बोर्ड द्वारा निरन्तर देना।

स्मार्ट सिटी के साथ पर्यटक हब : स्मार्ट सिटी हेतु चयनित शहरकोट क्षेत्र के विकास में उपरोक्त सभी प्रस्तावित कार्यों एवं सुझावों को यथासंभव स्वीकार करते हुए हमें विश्वास है कि शहर के प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के साथ स्वच्छता, नियमित विद्युत, शुद्ध पेयजल, निःशुल्क वाई–फाई, सुरक्षा आदि सुविधाओं से पर्यटकों की संख्या में अनुमान के अनुरूप वृद्धि होगी। स्थानीय नागरिक भी अत्यधिक सुविधायुक्त एवं स्वच्छ वातावरण में रहते हुए अपनी व्यापारिक गतिविधियों में व्यापकता ला सकेंगे।

वर्ष 2001 से 2021 तक उदयपुर भ्रमण हेतु आए भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों की वर्षवार संख्या

क्र.सं.	वर्ष	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल
1	1990	538270	66158	**604428**
2	1991	585672	72773	**658445**
3	1992	675493	79871	**755364**
4	1993	688188	85225	**773413**
5	1994	644995	73883	**718878**
6	1995	646574	86506	**733080**
7	1996	688640	88350	**776990**
8	1997	638987	84284	**723271**
9	1998	575088	78267	**653355**
10	1999	578622	72468	**651090**
11	2000	735333	77174	**812507**
12	2001	66286	56760	**123046**
13	2002	471576	101303	**572879**
14	2003	440702	156928	**597630**
15	2004	460774	198556	**659330**
16	2005	566076	173804	**739880**
17	2006	582504	188026	**770530**
18	2007	578643	160627	**739270**
19	2008	572415	185261	**757676**
20	2009	547102	165210	**712312**
21	2010	582297	173016	**755313**
22	2011	574444	177699	**752143**
23	2012	588239	189373	**777612**
24	2013	662092	185313	**847405**
25	2014	720120	166936	**887056**
26	2015	727266	164721	**891987**
27	2016	754910	183905	**938815**
28	2017	830964	190521	**1021485**
29	2018	929930	207016	**1136946**
30	2019	996718	188888	**1185606**
31	2020	355884	44643	**400527**
32	2021	958035	5025	**963060**

स्रोतः पर्यटक स्वागत केन्द्र, राजस्थान सरकार, उदयपुर

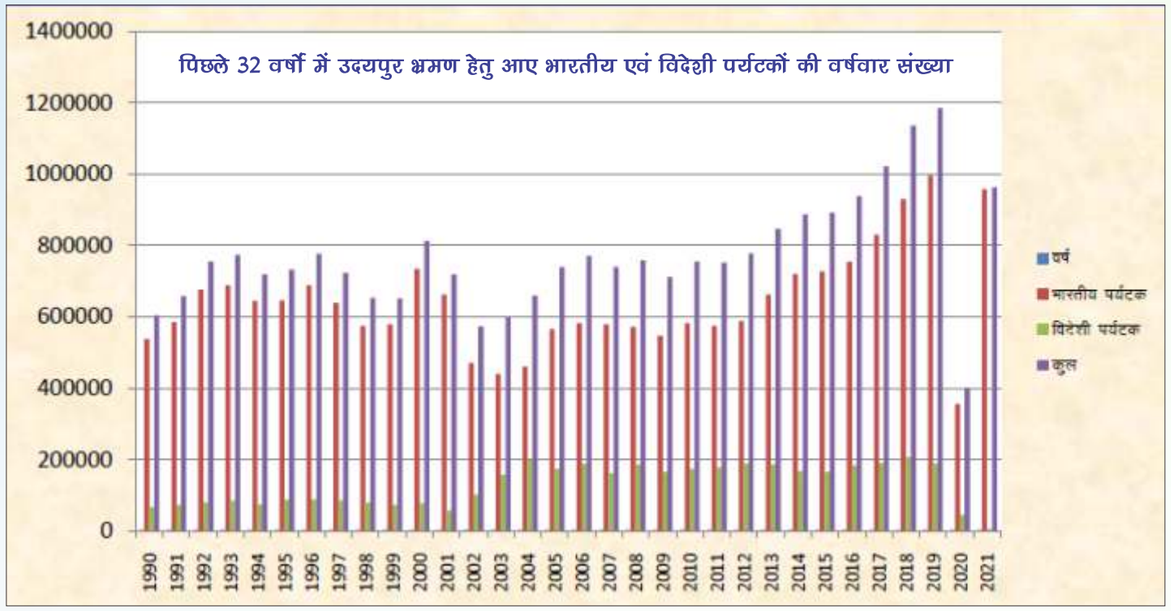

स्थानीय एवं प्रवासी पर्यटकों को झीलों की नगरी उदयपुर में आना अच्छा लगता है। उदयपुर की झीलों एवं ऐतिहासिक विरासत की सुन्दरता के बावजूद जितने पर्यटक उदयपुर में आने चाहिये एवं उनमें जिस अनुपात में वृद्धि होनी चाहिये, वह नहीं हो पा रही है।

वर्ष 1990 में यहाँ पर पर्यटकों की संख्या 6.04 लाख थी, वह पिछले 30 वर्षों (वर्ष 2019 तक) के अन्तराल में बढ़कर मात्र 11.86 लाख यानी कुल वृद्धि दर मात्र 196.35 प्रतिशत रही तथा इसमें प्रतिवर्ष की वृद्धि दर मात्र 1.96 प्रतिशत ही है। दुनिया के इस सुन्दरतम् शहर में यह वृद्धि न्यूनतम् स्तर की है। वर्ष 2020–21 में कोविड–19 महामारी के कारण पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट दर्ज हुई।

वर्तमान में पर्यटकों पैदल चलने में काफी परेशानी का सामना करता पड़ रहा है। उन्हें उदयपुर के ऐतिहासिक महलों, हवेलियों, मन्दिरों, मेवाड़ की संस्कृति से भरे बाजारों एवं व्यवसायियों को देखने की उमंग हैं। यहां के लोगों की सहजता, सरलता, विनम्रता, मेवाड़ी मान–मनवार उन्हें आकर्षित करती हैं। मेवाड़ की संस्कृति से ओतप्रोत छोटी–बड़ी होटलें उन्हें रात्रि विश्राम के लिए चाहिये। बड़ी–बड़ी होटलों एवं सड़कों वाले विकसित स्थानों से तो वे स्वयं यहां भ्रमण हेतु आये हैं।

वे बाजारों से कपड़े, सोने व चाँदी की वस्तुएं एवं गहने, स्मृति चिह्न, हैण्डीक्राफ्ट वस्तुएं, खिलौनें आदि खरीदना चाहते हैं लेकिन शहर की सड़कों पर चलना कठिन ही नहीं असंभव हो गया है। संकड़ी–संकड़ी सड़कें, उस पर वाहनों की पार्किंग एवं अतिक्रमण देखकर उन्हें लगता है कि वे तो आ गये हैं लेकिन दूसरों को यहां पर होने वाली कठिनाईयों एवं परेशानियों से जरूर अवगत करायेंगे। इसी कारण से उदयपुर शहर में पर्यटकों की वृद्धि दर प्रतिशत बहुत न्यून है।

प्रस्तावित पर्यटक वृद्धि दर 15 से 20 प्रतिशत लाने हेतु शहर की परिस्थितियों को तो सुधारना ही होगा, इसके अतिरिक्त शहर के बाहर शहरकोट के साथ एक विस्तृत पर्यटक हब और विकसित करना होगा।

यह सब तभी संभव होगा जब कम से कम आगामी 70 वर्षों को ध्यान में रखते हुए शहरकोट के बाहर हाथीपोल, देहलीगेट, सूरजपोल, उदियापोल, सिटी स्टेशन रोड क्षेत्र पर बहुत ही व्यवस्थित पर्यटक हब विकसित कर सकें। इसमें पर्यटकों के लिए व्यवस्थित पार्किंग सुविधा, फूड हब, विश्राम स्थल, सुविधाकक्ष, पर्यटन सूचना केन्द्र, पर्यटन क्षेत्रों की जानकारी आदि के अतिरिक्त वाहन एवं मानवीय सघनता को कम करना, पर्यटकों हेतु पैदल भ्रमण के लिए दुर्घटना रहित फुटपाथ विकसित करना होगा।

इसके व्यवस्थित क्रियान्वयन हेतु हमें निम्नांकित बिन्दुओं पर स्मार्ट सिटी विकास अवधि में पूर्ण नियोजन को ध्यान में रखते हुए सक्रियता के साथ आगे बढ़ना होगा :–

प्रशासनिक कार्यालयों का स्थानान्तरण : कलक्ट्रेट, जिला परिषद, न्यायालय, खान एवं भूविज्ञान विभाग, नगर निगम कार्यालय, गिर्वा तहसील, रजिस्ट्री कार्यालय को वर्तमान स्थान से उदयपुर के मास्टर प्लान में निर्धारित स्थानों अथवा केन्द्रीय कारावास, पुलिस लाइन एवं सैनिक छावनी (पटेल सर्कल) क्षेत्रों पर स्थानान्तरित कर दिया जाये। इससे शहरकोट के बाहर उदियापोल, सूरजपोल, देहलीगेट, हाथीपोल के आस–पास वाहन एवं मानवीय सघनता में कमी आयेगी।

राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन को अत्याधुनिक बनाना : इस स्टेशन को अत्याधुनिकता के साथ पर्यटक एवं यात्री मित्र बनाया जाये। सभी गाड़ियां यहाँ 5–10 मिनिट रुक सके। इससे मल्ला तलाई, अम्बामाता, फतहपुरा, पंचवटी, मधुवन, भूपालपुरा, अशोक नगर, आयड़, सुन्दरवास, प्रतापनगर, मादड़ी इण्डस्ट्रीय एरिया, सेक्टर–3 व 4 के अतिरिक्त उदयपुर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित सभी कॉलोनियों के यात्री इस स्टेशन पर सभी प्रकार की गाड़ियों में परिवहन कर सकेंगे। इस स्टेशन पर सिटी बस सेवा के अतिरिक्त तीन पहिया, टैक्सी एप की सुविधा 24 घण्टे उपलब्ध रहे। स्टेशन के बाहर बने रेलवे कर्मचारी आवासीय स्थल को हटाकर स्टेशन के बाहरी स्वरूप में सुन्दरता के साथ पार्किंग की उचित व्यवस्था हो। इस स्टेशन के विकास से प्रस्तावित पर्यटक हब क्षेत्र में वाहनों एवं मानवीय सघनता में काफी कमी हो सकेगी। इसके साथ ही उमरड़ा स्थित तीसरा रेलवे स्टेशन व्यवस्थित रूप से विकसित किया जावे जिससे भविष्य में यहाँ से नई रेलगाड़ियाँ संचालित होने के साथ इसे रेलगाड़ियों के विश्राम स्थल के रूप में भी उपयोग किया जा सके।

आपसी समन्वयन एवं सामंजस्य : प्रशासनिक अधिकारियों, स्थानीय जनमानस एवं विषय विशेषज्ञों में आपसी समन्वयन एवं सामंजस्य की आवश्यकता होगी। उदयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना उच्च स्तर की है। यूरोप के किसी विकसित शहर की सारी खूबियां इसमें समाहित हैं। उदयपुर स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत शहरकोट क्षेत्र की परिस्थितियाँ विकट हैं। यह शहर भौगोलिक दृष्टि से ऊंचाई पर पथरीले क्षेत्र पर बसा हुआ है। जनसंख्या का घनत्व बाहरी शहर के अनुपात में चार गुना है। शहरवासियों की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ नहीं है। गलियां काफी संकड़ी हैं, सड़कें बहुत कम चौड़ाई की हैं, मुख्य बाजारों के दोनों ओर कुछ हद तक अतिक्रमण है, विद्युत प्रवाह पोल के सहारे तारों के माध्यम से है, पेयजल एवं दूर–संचार लाइनों का चिह्नीकरण करना अत्यन्त कठिन है। परिस्थितियां विकट हैं लेकिन उदयपुर शहर की स्मार्ट परियोजना को मूर्त रूप देने हेतु प्रशासनिक अधिकारियों, अभियंताओं एवं तकनीकी कर्मचारियों का स्थानीय जनमानस एवं विशेषज्ञों के साथ सहयोग एवं आपसी सामंजस्य आवश्यक होगा। सभी कार्य उच्च स्तर के नियोजन के साथ तकनीकी दक्षता, निर्माण की गुणवत्ता, भ्रष्टाचार रहित होने चाहिये, तभी हमें आशातीत सफलता तथा जन सहयोग मिलेगा।

राजकीय भूमि का पर्यटन हब हेतु उपयोग : प्रस्तावित कार्यालयों के स्थानान्तरण से रिक्त हुए स्थान एवं भूमि को आमदनी का स्रोत नहीं बनाया जावे। इस कार्य में यह ध्यान रखना होगा कि बेशकीमती जमीनें आमदनी का स्रोत नहीं हैं, ये तो विरासत में मिली पूँजी है, जिसे बचाकर भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जावे। इन स्थलों पर पर्यटकों हेतु आवश्यक सुविधाओं के साथ उनके बौद्धिक विकास एवं मनोरंजन हेतु उपयुक्त स्थलों का विकास किया जाना चाहिये।

मुख्य बाजारों को सुनियोजित भव्यता प्रदान करना : शहर के मध्य स्थित बापू बाजार, नेहरू बाजार, अश्विनी बाजार आदि को व्यापारियों के सहयोग एवं सुझाव पर अतिक्रमण मुक्त कर इन्हें जल निकास (विशेषकर वर्षा ऋतु) की पूर्ण व्यवस्था, भूमिगत सीवरेज, विद्युत व दूर–संचार लाइन डालना एवं सभी इमारतों की बाहरी दीवारों को एकरूपता एवं भव्यता के साथ उच्च स्तर की एल.ई.डी. लाइटों की प्रकाश व्यवस्था से सुसज्जित करना होगा।

पर्यटक इन बाजारों में पैदल भ्रमण करते हुए उदयपुर भ्रमण की स्मृति में अपने परिवारजन एवं इष्टमित्रों के लिए भेंट आदि खरीद सकें। साथ ही गुणवत्तायुक्त अन्तर–महाद्वीपीय एवं स्थानीय खाद्य वस्तुएँ एक निश्चित दूरी पर नियमित मिलती रहे। यदि स्थानीय व्यापारीगण एवं शहरी नियोजनकर्त्ता इन बाजारों को इटली के "मिलाप बाजार" की तरह समय के साथ विकसित करें, तो यह हमारे लिए गौरव की बात होगी।

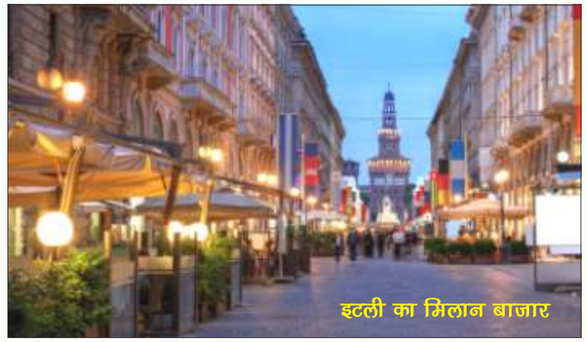
इटली का मिलान बाजार

इटली का मिलान बाजार

उच्च स्तरीय पर्यटक सूचना केन्द्र : उदयपुर की दक्षिणी शहरकोट जो अभी भी पूर्व की भांति है, उसकी सुन्दरता एवं विशालता पर वहां बसी हुई कच्ची बस्ती के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उदयपुर में रेल, बस, व्यक्तिगत वाहनों से आने–जाने वाले पर्यटकों को निश्चित रूप से यह अच्छा नहीं लगता होगा। शहरकोट के अन्दर के क्षेत्र को स्मार्ट बनाने के साथ इस बस्ती में बसे हुए नागरिकों को उनकी सहमति के साथ अन्यत्र समुचित स्थानों पर स्थानान्तरित कर दिया जावें, जहाँ ये सभी नागरिक आधारभूत सुविधाओं के साथ रह सकें। इस कार्य को राजनैतिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से प्राथमिकता दी जावे।

इस कच्ची बस्ती हटाने के बाद इस बहुमूल्य भूमि को नगर निगम/नगर विकास प्रन्यास द्वारा आंशिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से बेचा नहीं जावे बल्कि इस स्थान पर उच्च स्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में एक पार्क, फूड हब, सूचना केन्द्र, सुविधा कक्ष, वाहन पार्किंग आदि का निर्माण किया जावे। वर्तमान में रेलवे स्टेशन के सामने स्थित भव्य पार्क में दो–पहिया एवं चार–पहिया वाहनों की पार्किंग की जा रही हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। इस स्थल को पूर्व की भांति सुन्दर पार्क के रूप में ही बनाया रखा जाना चाहिये।

कार्यालय भवनों का स्थानान्तरण :

(अ) राजकीय कार्यालय– कलक्ट्रेट कार्यालय : मेहकमाखास (कलक्टर कार्यालय) शहरकोट के बाहर 2.6 एकड़ क्षेत्र में बना हुआ है जो पूर्व में बहुत ही व्यवस्थित और भव्य था तथा उस समय की आवश्यकताओं के अनुरूप था। अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या बहुत सीमित थी एवं वाहनों (दो पहिया/चार पहिया) की संख्या भी नगण्य थी। समय बदलता गया, अधिकारियों, कर्मचारियों की संख्या बढ़ती गई। पुलिस कार्यालय (पुलिस अधीक्षक, महानिरीक्षण पुलिस) भी इसमें स्थापित हो गये।

पिछले वर्षों में कलक्ट्रेट परिसर में एक के बाद एक नई इमारत बनती गई और एक के बाद एक कार्यालय इस परिसर में समावेशित होता गया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई। जिला परिषद् का गठन हुआ तथा जिला प्रमुख का नया पद सृजित हुआ। जिला परिषद् एवं जिला परिषद् ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ के कार्यालय कलक्ट्रेट के मुख्य भवन के दक्षिणी छोर पर पार्किंग स्थल, वाहन गैराज एवं रिक्त भूमि पर बना दिया गया। इन सभी कार्यालयों में आने वाली साइकिलें, दोपहिया एवं चारपहिया वाहन को पार्क करने पर विचार नहीं किया गया। समय के साथ साइकिलें तो लुप्त होती गई लेकिन दुपहिया एवं चारपहिया वाहनों की संख्या में तीव्रता के साथ वृद्धि हुई। इस प्रकार संपूर्ण परिसर अनेक दृष्टियों में अव्यवस्थित होता चला गया, जिसके फलस्वरूप इन कार्यालयों में आने वाले वाहनों हेतु कोर्ट चौराहे से देहलीगेट तक आने वाली मुख्य सड़क को पार्किंग के लिए बन्द कर दिया गया। इसके बाद जनमानस के विरोध एवं हितों को ध्यान रखते हुए इसे पुनः यातायात के लिए उपयोग में लिया जा रहा है। वर्तमान में इस परिसर में पार्किंग की समस्या के चलते वाहन मुख्य सड़क पर ही खड़े किये जा रहे हैं। सोचनीय पहलू यह है कि पूर्व में कलक्ट्रेट परिसर में केन्टीन भी मुख्य भवन से पीछे जाने वाले रास्ते को बन्द कर बना दी गई। यहां पर आधुनिक सुविधा कक्ष एवं विश्राम स्थल का भी अभाव है।

आज स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षों के बाद भी उदयपुर शहर के नियोजनकर्त्ताओं को यह आवश्यकता महसूस नहीं हो रही है कि इस कलक्ट्रेट कार्यालय एवं इसमें समाहित अन्य कार्यालयों को शहर के विकास के साथ किसी अन्य उपयुक्त स्थल पर मिनी सचिवालय बनाकर स्थानान्तरित कर दिया जावे। इन कार्यालयों को आधुनिक तकनीकी के साथ जोड़ते हुए सुसज्जित किया जावे ताकि आमजन के साथ कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए भी अत्यन्त सुविधायुक्त बन सके। आम नागरिक जो वर्ष में कभी–कभार इन कार्यालयों में आते हैं, उन्हें भी समुचित विश्राम एवं अपने वाहन को पार्क करने हेतु उचित स्थान मुहैया हो सकें। स्वच्छ पेयजल के साथ महिला एवं पुरुषों के लिए उच्च

जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय, उदयपुर

A : विरासत में मिला भव्य मेहकमाखास (कलक्ट्रेट)
B : जिला परिषद एवं ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ – पूर्व में साइकिल स्टेण्ड एवं मोटर गैराज
C : अन्य सम्बद्ध कार्यालय – पूर्व में रिक्त भूमि
D: कोष कार्यालय, पेंशन विभाग एवं सूचना एवं सांख्यिकी विभाग – पूर्व में रिक्त भूमि
E : मुख्य कलक्ट्रेट भवन के पीछे स्थित अन्य कार्यालयों के सामने पार्किंग स्थल के अभाव के फलस्वरूप अव्यवस्थित तरीके से पड़े दोपहिया एवं चारपहिया वाहन।

स्तर के सुविधाकक्ष की व्यवस्था हो। आमजन के मार्गदर्शन हेतु व्यवस्थित पूछताछ कार्यालय भी हो, ऐसी व्यवस्थाएँ विकसित की जानी चाहिये।

कलक्ट्रेट परिसर में अवस्थित कार्यालय

कार्यालय जिला पुलिस अधीक्षक, कार्यालय अतिरिक्त कलक्टर, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नगर, जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, महानिरीक्षक पुलिस, उदयपुर रेंज, जिला कोष कार्यालय, कार्यालय जिला परिषद, जिला परिषद् ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ, हज हेल्प डेस्क, राजस्थान संपर्क आई.टी. सेन्टर, कार्यालय कोषाधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक, सर्व शिक्षा अभियान, जिला निर्वाचन अनुभाग, जिलाधीश कार्यालय कर्मचारी सहकारी समिति लि., कार्यालय जिला कलक्टर, भू.अ. अनुभाग, कार्यालय जिला रसद अधिकारी, कार्यालय उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी, जिला रजिस्ट्रार (जन्म–मृत्यु), पंजीकरण, कार्यालय भू प्रबन्ध अधिकारी पदेन राजस्व अपील अधिकारी, अल्पसंख्यक मामलात विभाग, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, कार्यालय अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, सी. आई.डी., विदेशी पंजीयन अधिकारी आदि।

वर्तमान में कलेक्ट्रेट कार्यालय के सामने आमजन, व्यापारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग, राजनेता एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं के धरने होना एक सामान्य बात है। इससे पूरे शहर की यातायात व्यवस्था लगभग थम सी जाती है एवं ट्रैफिक जाम की भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इससे आम नागरिक काफी हतोत्साहित होकर परेशानी का अनुभव कर रहे हैं।

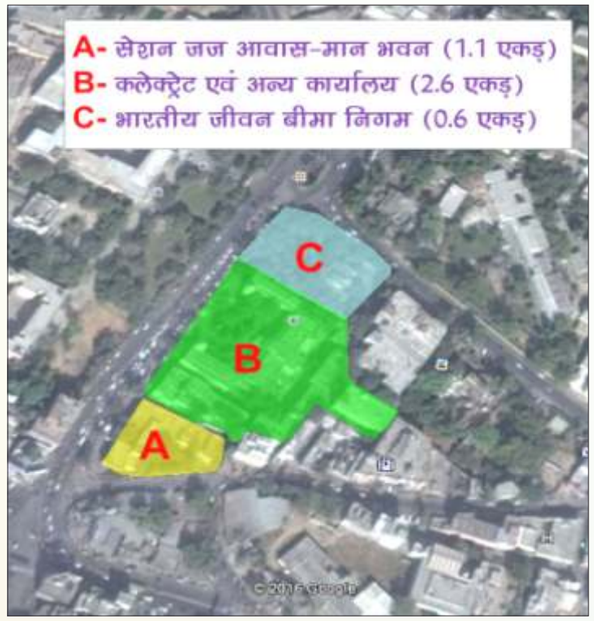

विरासत संग्रहालय : कलक्ट्रेट स्थित सभी कार्यालयों को नियोजनकर्त्ता द्वारा किसी उपयुक्त स्थान पर स्थानान्तरित करने के उपरान्त विरासत में मिले पुरातत्व महत्व के इस भव्य भवन को मेवाड़ की संस्कृति, त्याग, शौर्य, बलिदान, संस्कार एवं आमजन विशेषकर आदिवासियों के बहुमूल्य और रोचक चित्रों, वस्तुओं, परम्पराओं का संग्रहालय और प्रदर्शन स्थल के रूप में विकसित किया जाये। पिछले वर्षों में परिसर में बने कार्यालय भवन एवं एल.आई.सी. भवन के स्थान पर सुन्दर उद्यान, पार्किंग एवं पर्यटकों के लिए सुविधायुक्त स्थान के रूप में परिवर्तित किया जाये। उदयपुर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने, धरोहर एवं विरासत को पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाने के लिए यह आवश्यक है।

कलक्ट्रेट कार्यालय – गूगल मानचित्र : संपूर्ण परिसर में कोई भी रिक्त स्थान नहीं दिखता है जहां पर व्यवस्थित वाहन पार्किंग, विश्राम स्थल, सुविधाघर आदि का निर्माण किया जा सकें। यह परिसर दक्षिण में भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय, उत्तर में मानभवन (सेशन न्यायाधीश आवास), लोढ़ा कॉम्पलेक्स, पूर्वी छोर इन्द्रप्रस्थ एवं निजी कॉम्प्लेक्स से घिरा हुआ है।

जिला एवं सेशन न्यायालय : मेहकमाखास (कलक्ट्रेट) के पास, ऊँची पहाड़ी पर 4.7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ कचहरी (न्यायालय) भवन मेवाड़ की संस्कृति के अनुसार भव्य रूप से बना है। इस भवन में वर्तमान में जिला एवं सेशन न्यायालय स्थापित है। समय के साथ उपभोक्ता, सेवा प्राधिकरण, भ्रष्टाचार निवारण, पारिवारिक न्यायालय की स्थापना के साथ न्यायालय परिसर में रिक्त स्थानों पर आवश्यकतानुसार अनेक एक या दो मंजिले भवनों का निर्माण बिना भविष्य की आवश्यकता, दूरदृष्टि एवं नियोजन को ध्यान में रखते हुए किया गया।

जिला एवं सेशन न्यायालय, उदयपुर

विरासत में मिला जिला सेशन न्यायाधीश भवन वर्तमान में इसके सामने उद्यान के स्थान पर अव्यवस्थित दुपहिया एवं चारपहिया वाहन पार्किंग

न्यायालय में स्थित कार्यालय

जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष फोरम, राजस्थान राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग, सर्किट बैंच, अधिवक्ता सभागार, बार एसोसिएशन, जिला एवं सेशन न्यायालय, उदयपुर (मुख्य), जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश (वरिष्ठ खण्ड एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, उदयपुर), कार्यालय बार एसोसिएशन, सहायक निदेशक अभियोजन, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश क्र.सं. 1–5, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, न्यायालय विशेष न्यायाधीश, सेशन न्यायालय (भ्रष्टाचार निवारण मामलात), पारिवारिक न्यायालय आदि।

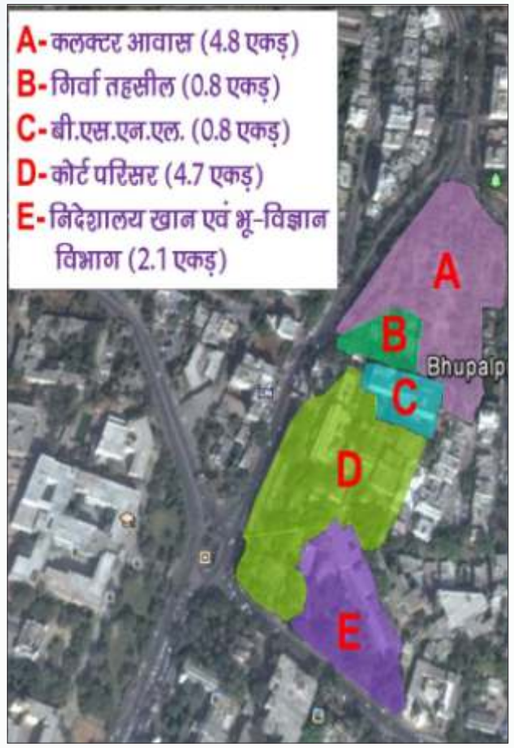

न्यायालय परिसर के पश्चिमी छोर पर कुछ बाहरी दुकानों के अतिरिक्त छोटे पक्के कमरे निर्मित कर वकील बन्धुओं को कार्यालय उपयोग हेतु आवंटित किये गये हैं। नई पीढ़ी के वकील, पब्लिक नोटेरियन्स, टाइपिस्ट, बॉण्ड विक्रेता आदि के लिए कुछ टीन युक्त दुकाननुमा ऑफिस बनाये गये, परन्तु अधिकांश सड़क व विश्राम स्थल पर टेबल–कुर्सी लगाकर बैठे हुए नजर आ जायेंगे। वहीं पर उनके एवं वादी के दोपहिया वाहन भी पार्क कर दिये जाते हैं। न्यायालय परिसर में न्याय प्राप्ति के लिए आने वाले आम नागरिकों के विश्राम के लिए कोई पूर्ण सुविधा युक्त स्थल उपलब्ध नहीं है।

वकील बन्धुओं के चेम्बर

जलपान के लिए न्यायालय के उत्तरी प्रवेश द्वार पर चौकीदारी कक्ष में एक टीनयुक्त एवं पूर्वी छोर पर एक पक्की केन्टीन अव्यवस्थित रूप से संचालित है। दो व चार पहिया वाहनों के लिए कोई व्यवस्थित पर्याप्त निर्धारित पार्किंग स्थल नहीं है। चार पहिया वाहन जिला एवं सेशन न्यायालय के मुख्य भवन के सामने पार्क किये जाते हैं एवं दो पहिया वाहन अन्य न्यायालय भवनों, वकील एवं अन्य कक्ष के सामने बहुत ही बेतरतीब ढंग से पार्किंग कर दिये जाते हैं। अधिवक्ता सभागार, बार एसोसिएशन कार्यालय, पुस्तकालय, कॉन्फ्रेन्स भवन, न्यायालय कक्ष आदि भी उच्च स्तर के नहीं है। हालांकि हमने न्यायालय (कोर्ट) के स्वर्ण जयन्ती अवसर पर मेवाड़ की सुन्दर वास्तुकला के अनुरूप मुख्य गेट तो बना दिया, लेकिन भीतर की स्थिति अभी भी बदहाल है।

अव्यवस्थित न्यायालय परिसर

पूर्व में विक्रमादित्य भवन में स्थित पारिवारिक न्यायालय को हटाकर उस स्थान पर करोड़ों की लागत से बहुमंजिला भवन निर्मित कर दिया गया है। किसी भी शहर की योजना आगामी कई वर्षों के लिए बनायी जाती है। कोई भी योजना लघु अवधि या तत्कालीन लाभ के लिए नहीं बनायी जानी चाहिये। न्यायालय परिसर में यह निर्माण उचित प्रतीत नहीं हो रहा है क्योंकि यह वर्तमान की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा।

इसके अतिरिक्त आदिवासी बाहुल्य मेवाड़ में हाईकोर्ट बेन्च स्थापित करने हेतु वकील बन्धु एवं स्थानीय जनमानस काफी वर्षों से आन्दोलनरत है। इसके लिए मेवाड़ की संस्कृति से युक्त भवन आगामी अनेक वर्षों की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बनाना होगा। यह भवन तो न्यायालय के वर्तमान परिसर में संभव नहीं है। इस हेतु कोई अन्य स्थान चयनित करना होगा। इस विषय में हमारे स्थानीय वकील बन्धुओं, राजनेताओं एवं नियोजनकर्त्ताओं के साथ दूरदृष्टितापूर्वक विचार–विमर्श करना आवश्यक है।

न्याय एवं प्रशासन संग्रहालय : मेवाड़ की संस्कृति के अनुसार न्यायालय भवन को मेवाड़ की न्याय व्यवस्था, पुरातत्व दस्तावेज, मुद्राएं, डाक टिकिट आदि के साथ वर्तमान भारतीय न्याय व्यवस्था, गणतंत्र की विशेषताएं आदि के प्रदर्शन स्थल के रूप में विकसित कर एक विकसित संग्रहालय बनाया जावे। यह पर्यटकों के लिए आकर्षण केन्द्र बन सकेगा। कलक्ट्रेट एवं न्यायालय परिसर की वर्तमान स्थिति का गहन चिन्तन करें तो भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पर्यटकों की नगरी बनाने के लिए इन दोनों कार्यालयों को किसी उपयुक्त स्थान पर स्थानान्तरित करना अत्यन्त आवश्यक है। दोनों का पास–पास होना प्रशासनिक एवं आम लोगों की सुविधा के दृष्टिकोण से भी हितकर होगा, जैसा कि वर्तमान में है।

जिला एवं सेशन न्यायालय का 'स्वर्णजयन्ती प्रवेश द्वार'

न्यायालय परिसर में नव–निर्मित बहुमंजिला इमारत

गिर्वा तहसील एवं पंजीयन कार्यालय : गिर्वा तहसील का कार्यालय कलक्टर आवास एवं कोर्ट परिसर के मध्य 0.8 एकड़ छोटे से क्षेत्र में स्थित है। इसके साथ दो पंजीयन कार्यालय रेजीडेन्सी आवासीय क्षेत्र में स्थित हैं। वर्तमान में यह क्षेत्र काफी भीड़–भाड़ युक्त अव्यवस्थित एवं यातायात के दबाव से ग्रसित है। यदि ये कार्यालय किसी भावी कलक्ट्रेट एवं न्यायालय परिसर में उचित स्थान पर स्थानान्तरित हो जाते हैं तो यहां रहने वाले स्थानीय निवासियों को अवांछित ट्रैफिक से काफी राहत मिलेगी।

खान एवं भू–विज्ञान विभाग : मेवाड़ क्षेत्र की अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में छुपी हुई असंख्य एवं अतुलनीय भू–सम्पदा के सुव्यवस्थित दोहन हेतु निदेशालय खान एवं भू–विज्ञान विभाग के राज्य स्तरीय कार्यालय की स्थापना उदयपुर में की गई। इसके भवन को भी मेवाड़ संस्कृति के अनुरूप ही बनाया गया।

यह कार्यालय पूर्व में इस विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या के अनुरूप था। इसका उद्यान भी सर्वोत्तम था। लेकिन समय के साथ राजस्थान एवं विशेषकर मेवाड़ क्षेत्र में एक के बाद एक भू–सम्पदा की खोज हुई एवं उन्हें व्यापारिक तरीके से निकाला जाने लगा। खान अभियंताओं, भू–वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं अन्य कर्मचारियों की संख्या में भी वृद्धि होती गई एवं आवश्यकता के अनुसार एक या दो मंजिले भवन बने। उद्यान क्षेत्र सिकुड़ता गया एवं इसकी सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। भ्रष्टाचार निवारण विभाग भी इस परिसर में संचालित है।

भू–सम्पदा संग्रहालय : वर्तमान समय की आवश्यकता के आधार पर इस खान एवं भू–विज्ञान विभाग निदेशालय को किसी उपयुक्त स्थान पर स्थानान्तरित कर इस भवन में मेवाड़ की खनिज सम्पदा की विविधता एवं मात्रा के साथ जैन एवं हिन्दु संस्कृति की धरोहर रूपी बहुमूल्य मूर्तियों, संगमरमर एवं विशिष्ट पत्थरों की सुन्दर आकृतियों, ग्रामीण दस्तकारों की कृतियों, हैण्डीक्राफ्ट आदि की प्रदर्शनी स्थल के रूप में एक संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया जाये। इसके अतिरिक्त विश्वप्रसिद्ध जावरमाइन्स में जिंक एवं सिल्वर शोधन की पुरातन विधियों को भी प्रदर्शित किया जा सकता है। इससे पर्यटन विकास के साथ–साथ व्यापारिक गतिविधियां भी सुदृढ़ हो सकेगी। यहां पर मेवाड़ में उपलब्ध खनिज सम्पदा – संगमरमर आदि की संपूर्ण जानकारी मय खनन स्थल के सुलभ होनी चाहिये।

कलक्टर एवं सेशन न्यायाधीश आवास : कलक्टर (अशोक भवन) एवं सेशन न्यायाधीश (मान भवन) आवास क्रमशः 4.8 एवं 1.1 एकड़ क्षेत्र के विशाल परिसर में स्थित है। इन उच्चाधिकारियों को किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर उनके पद एवं कार्यों की प्रकृति के अनुसार आवास आवंटित किये जाने चाहिये। इस क्षेत्र को प्रस्तावित पर्यटन हब में सम्मिलित कर पर्यटन की आवश्यकता के अनुसार इसका विकास किया जाना चाहिये।

(ब) अर्द्ध–राजकीय कार्यालय स्थानान्तरण : शहरकोट के बाहर राजकीय कार्यालय के पास स्थित अर्द्ध–सरकारी कार्यालय भारतीय जीवन बीमा निगम एवं नगर निगम कार्यालय को किन्हीं दूसरे उपयुक्त स्थानों पर स्थानान्तरित कर दिया जावें तो ये स्थान भी प्रस्तावित पर्यटक हब के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त रहेंगे।

अर्द्ध–सरकारी एवं क्षेत्रफल		
क्र.सं.	स्थान	क्षेत्रफल (एकड़ में)
1.	भारतीय जीवन बीमा निगम लि.	0.6
2.	नगर निगम कार्यालय नगर निगम परिसर (13 एकड)	2.0

देहलीगेट पर स्थित भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय एवं नगर निगम परिसर से नगर निगम कार्यालय को क्रमशः पटेल सर्कल स्थित इसके मुख्य कार्यालय में अथवा अर्द्ध–सरकारी कार्यालय के लिए आरक्षित भूमि पर सरकार द्वारा निर्मित भवन में स्थानान्तरित कर दिया जावे। इससे पर्यटक हब के साथ शहरकोट के बाहर पार्किंग व्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से विकसित करने में काफी सुविधा रहेगी।

नगर निगम, उदयपुर

नगर निगम कार्यालय : पूर्व सलेटिया ग्राउण्ड पर लगभग 13 एकड़ क्षेत्र में नगर निगम परिसर फैला हुआ है। इसके मध्य में मेवाड़ संस्कृति के अनुरूप भव्य प्रशासनिक भवन, आधुनिक रंगमंच एवं इसके सामने बहुत सुन्दर नेहरू बाल उद्यान स्थित है। दक्षिणी छोर पर शौर्य दीर्घा, शहीद स्तम्भ एवं उत्तरी छोर पर अति सुन्दर हाथीवाला पार्क अवस्थित था। हाथीवाला पार्क भूमि पर करीब 14.3 करोड़ की लागत से 84 चारपहिया एवं 96 दुपहिया वाहनों की पार्किंग के लिए भूमिगत पार्किंग स्थल निर्मित किया गया है। इसके निर्माण से नेहरू बाल उद्यान की भव्यता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आशा है कि इस पार्किंग स्थल पर और कोई कंकरीट का निर्माण नहीं हो। उचित तो यह होता कि हाथीवाले पार्क के स्थान पर मुख्य भवन के पीछे स्थित (पूर्वी छोर पर) रिक्त भूमि पर वृहद् बहुमंजिला (वर्तमान सेलिब्रेशन एवं लेकसिटी मॉल की तर्ज पर) भूमिगत एवं भूतल पर पार्किंग स्थल के साथ कैफेटेरिया व सुविधा कक्ष निर्मित किये जाते तो पर्यटकों को वाहन पार्किंग के साथ सभी आवश्यक सुविधाएं भी मुहैया हो सकती थी।

इस पार्किंग स्थल के ऊपर 10,000 से अधिक व्यक्तियों के बैठने के लिए लोक कला मण्डल की तरह विशाल खुला मंच बनाया जाये। इसका उपयोग कवि सम्मेलन, नाईट्स, नाटक प्रस्तुतीकरण एवं अन्य भव्य कार्यक्रम के लिए किया जा सके। इस थियेटर के तीन तरफ सड़क होगी

भारतीय जीवन बीमा निगम परिसर

एवं पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था से कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक हो सकता है।

पर्यटक स्थल संग्रहालय : इसके मुख्य भवन में एक संग्रहालय बना दिया जाये जिसमें उदयपुर एवं आसपास के सभी दर्शनीय स्थलों के इतिहास के साथ विभिन्न समय के सुरम्य चित्र, मॉडल, अन्य आवश्यक जानकारी का पर्यटकों की सुविधा हेतु समावेश होना चाहिये ताकि पर्यटक इन सभी स्थलों को देखने हेतु उत्सुक हो सके। साथ ही अहमदाबाद के अक्षरधाम की तर्ज पर मेवाड़ के विश्वविख्यात ऐतिहासिक एवं धार्मिक घटनाक्रम को लेजर किरणों, फव्वारों एवं मानव आधारित कार्यक्रमों के रूप में विकसित किया जावे। जिससे पर्यटक इस कार्यक्रम को देखें बिना उदयपुर नहीं छोड़ेंगे। इस तरह से वर्तमान नगर निगम परिसर विभिन्न महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्यक्रमों के आयोजन स्थल के साथ एक विशिष्ट पर्यटक हब बन सकता है।

राजकीय कार्यालय की भावी संकल्पना – मिनी सचिवालय : उदयपुर मेवाड़ क्षेत्र एवं पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान का एक महत्वपूर्ण शहर है। आज इतने वर्षों के बाद तीन–तीन मास्टर प्लान (प्रथम 1977–1996, द्वितीय 1997–2022 एवं तृतीय 2011–2031) के अनुमोदन के बाद भी मुख्य शहर एवं जिला/संभाग स्तरीय कार्यालयों को स्थानान्तरित नहीं किया जा सका हैं। यहाँ की सड़कों पर वाहन खड़े रखने की भी जगह नहीं बची है। पैदल चलने वाले राहगीरों, दोपहिया व चारपहिया वाहनों, सब्जी व अन्य खास सामग्री से भरे हुए थैलों से पूरा शहर भरा हुआ है। शहर मध्य स्थित मुख्य प्रशासनिक कार्यालयों से यह विकट समस्या और विकराल होती जा रही है। वर्तमान कलक्टर कार्यालय, न्यायालय, गिर्वा तहसील एवं रजिस्ट्री कार्यालय, खान एवं भूविज्ञान विभाग, कलक्टर एवं सेशन न्यायाधीश आवास आदि मात्र 16.7 एकड़ क्षेत्र में स्थित है। अर्द्ध–राजकीय कार्यालयों को मिला लेने पर ये कार्यालय एवं आवास 19.3 एकड़ में फैले हुए हैं।

कार्यालय एवं क्षेत्रफल		
क्र.सं.	स्थान	क्षेत्रफल (एकड़)
(अ) राजकीय कार्यालय/आवास		
1.	कलक्ट्रेट	2.6
2.	न्यायालय (कोर्ट)	4.7
3.	गिर्वा तहसील	0.8
4.	रजिस्ट्री कार्यालय	0.6
5.	निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग	2.1
	कुल	10.8
1.	कलक्टर आवास 'अशोक भवन'	4.8
2.	सेशन जज आवास 'मान भवन'	1.1
	कुल	5.9
	कुल	16.7
(ब) अर्द्ध–राजकीय कार्यालय		
1.	भारतीय जीवन बीमा निगम लि.	0.6
2.	नगर निगम कार्यालय (नगर निगम परिसर – 13 एकड़)	2.0
	कुल	2.6
	महायोग	19.3

प्रथम विकल्प : इन कार्यालयों को वर्तमान स्थान से मास्टर प्लान के अनुसार आरक्षित भूमियों फतहसागर–बड़ी रोड़, भुवाणा बाइपास एवं ट्राइबल विश्वविद्यालय के समीप स्थानान्तरित कर दिया जाये तो मुख्य शहर एवं प्रस्तावित पर्यटक हब को यातायात के भारी दबाव से काफी हद तक मुक्त किया जा सकता है।

मास्टर प्लान 2011–31 के अनुसार सरकारी एवं अर्द्ध–सरकारी कार्यालयों हेतु आरक्षित भूमि		
क्र.सं.	स्थान	क्षेत्रफल (एकड़)
1.	बड़ी रोड	55.00
2.	ट्राइबल यूनिवर्सिटी के पास	176.00
3.	भुवाणा बाईपास	36. 50
	कुल	267.50
	मास्टर प्लान के अनुसार सरकारी एवं अर्द्ध–सरकारी कार्यालयों हेतु सन् 1931 तक के लिए आरक्षित भूमि	452.00
4.	केन्द्रीय कारागार हेतु उमरड़ा में	141.00
5.	रूरल पुलिस लाइन हेतु उमरड़ा में	121.00

द्वितीय विकल्प : साथ ही वर्तमान में केन्द्रीय कारागृह, पुलिस लाइन एवं रेलवे स्टेशन के सामने की सैनिक छावनी शहर के बीचो–बीच स्थित है तथा यह क्षेत्र 101.4 एकड़ में फैला हुआ है। इन कार्यालयों को निम्नानुसार किसी उपयुक्त आरक्षित स्थान पर स्थानान्तरित कर इस भूमि पर मिनी सचिवालय का निर्माण किया जावे तो यह शहर के हित के लिए सर्वोत्कृष्ट होगा। यह स्थल रेलवे लाइन सहित चारों ओर से अनेक मार्गों से जुड़ा हुआ हैं एवं वर्तमान कार्यालय क्षेत्र से लगभग 5 गुना से अधिक बड़ा है, जहाँ बहुमंजिली इमारतें भी बनायी जा सकती है। मास्टर प्लान में केन्द्रीय कारागृह एवं ग्रामीण पुलिस लाइन के लिए उमरड़ा में भूमि आरक्षित है। रेलवे स्टेशन के पास स्थित सैनिक छावनी को एकलिंगगढ़ स्थित मुख्य छावनी में समाहित कर दिया जाना चाहिये।

क्र.सं.	स्थान	भूमि (एकड़)
1.	केन्द्रीय कारागृह	12.0
2.	जे.सी. बोस हॉस्टल, एमपीयूएटी	0.5
3.	पुलिस लाइन मेन	51.0
4.	पुलिस लाइन–बी	5.9
5.	सैनिक छावनी (रेलवे स्टेशन से पटेल सर्कल के मध्य)	32.0
	कुल क्षेत्रफल	101.4

भावी योजना : इसी क्रम में ट्राइबल यूनिवर्सिटी के पास आरक्षित भूमि में सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालयों हेतु एक और परिसर का निर्माण किया जाना चाहिये। इसमें मुख्य शहर के गुलाब बाग एवं अन्य स्थानों पर फैले हुए सभी सरकारी/अर्द्ध सरकारी कार्यालयों के साथ निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग को भी समाहित किया जाना चाहिये।

इस प्रकार उपरोक्त कार्यालयों के स्थानान्तरण से शहर की यातायात व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के साथ नागरिकों एवं वाहनों की सघनता को कम किया जा सकेगा। नगर निगम कार्यालय को भी प्रस्तावित कलक्ट्रेट–न्यायालय परिसर के पास नया भवन बनाकर स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिये।

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय : उदयपुर शहर की चिकित्सकीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता से पूर्व महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय का निर्माण किया गया। इस चिकित्सालय में आमजन को सामान्य बीमारियाँ, स्त्री रोग, बाल रोग, नेत्र रोग, हृदय रोग, अस्थिरोग आदि की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाती थी। यह चिकित्सालय किसी समय में खुला–खुला था। पन्नाधाय (जनाना) एवं मुख्य चिकित्सालय भवन के मध्य पूर्व में विस्तृत खुला स्थान था, जहां समय के साथ नवजात बच्चों की नर्सरी यूनिट एवं बाल चिकित्सालय बना दिया गया।

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय, उदयपुर

इसी प्रकार इसके पूर्वी क्षेत्र में खाली स्थल पर रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस हेतु भव्य मुख्य भवन, पुस्तकालय, छात्रावास, खेल परिसर आदि का निर्माण किया गया। चिकित्सालय के परिसर में रिक्त स्थल की कमी होती रही। हरित क्षेत्र संकुचित होता गया। वाहनों की संख्या में वृद्धि होती गई। यहां गन्दगी बढ़ती जा रही है। चिकित्सालय के मुख्य भवन, पन्नाधाय (जनाना) चिकित्सालय एवं जांच केन्द्र (पूर्व आउटडोर) के सामने भव्य लोन थे। समय के साथ जनाना एवं पूर्व आउटडोर के सामने चार पहिया एवं दो पहिया वाहनों हेतु डामरीकरण युक्त पार्किंग स्थल बना दिये गये जिससे चिकित्सालय में पर्यावरण एवं आवश्यक शुद्ध हवा की उपलब्धता पर निश्चित रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

चिकित्सालय परिसर में वाहनों का बेतरतीब जमावड़ा

वर्तमान में मुख्य भवन के सामने जो लोन–बगीचा बचा हुआ है, उसका बीमार व्यक्तियों एवं उनके परिवारजन का अत्यधिक दबाव एवं नियमित रखरखाव के अभाव में बदत्तर हाल है। यह परिसर वर्तमान में इन बीमार रोगियों की आवश्यकता को भी पूरा नहीं कर पा रहा है।

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय, उदयपुर में नव–निर्मित सुपर स्पेशियलिटी विंग

असाध्य एवं गंभीर रोगों के निवारण हेतु अत्यधिक सुविधायुक्त **सुपर–स्पेशियलिटी चिकित्सालय** पन्नाधाय (जनाना) चिकित्सालय के सामने पूर्व में दोपहिया वाहन पार्किंग स्थल पर बना दिया गया। इसी प्रकार पूर्व के चारपहिया वाहन पार्किंग एवं अधीक्षक कार्यालय के स्थान पर नया भवन बनाकर वर्तमान में आउटडोर विभाग संचालित कर दिया गया है। अब इस परिसर में मुख्य प्रवेश मार्ग के साथ मात्र एक पार्क ही शेष रहा है तथा इस चिकित्सालय में खुला स्थान लगभग नगण्य रह गया है। इस सुपर स्पेशिलिटी चिकित्सालय का विकास बड़ी स्थित वर्तमान **टी.बी. सेनेटोरियम (टी.बी. हॉस्पीटल)** के विशाल परिसर में किया जाना चाहिये था तथा वर्तमान टी.बी. सेनेटोरियम को उदयपुर से 30–40 कि.मी. दूर गोगुन्दा के आसपास की पहाड़ियों के हरित क्षेत्र के शुद्ध वातावरण में स्थानान्तरित कर उदयपुर में एक और राजकीय मेडिकल कॉलेज को टीबी सेनेटोरियम, बड़ी के वृहद परिसर में भामाशाहों के आर्थिक सहयोग एवं सीएसआर स्कीम के तहत खोलने की दिशा में भी सघन प्रयास किये जाने चाहिये।

सेटेलाइट हॉस्पीटल : हिरण मगरी, सेक्टर–5, अम्बामाता, भुवाणा क्षेत्र में स्थित सेटेलाइट हॉस्पीटल की भांति प्रतापनगर और दक्षिण विस्तार योजना के लिए दो अतिरिक्त सेटेलाइट हॉस्पीटल स्थापित करने हेतु समुचित प्रयास किये जाने चाहिये। इससे मुख्य चिकित्सालय में रोगियों का दबाव निश्चित रूप से कम होगा।

राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय, हिरण मगरी

पशु चिकित्सालय : महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के समीप ही चेटक सर्कल पर राजकीय पशु चिकित्सालय की भूमि भी शीघ्र ही आर. एन.टी. मेडिकल कॉलेज को मिल जायेगी तथा पशु चिकित्सालय को अन्यत्र स्थानान्तरित किया जावेगा। वर्तमान पशु चिकित्सालय उदयपुर शहर एवं आस–पास स्थित ग्रामीण क्षेत्रों के पशुपालकों के पशुओं की चिकित्सा सुविधा के दृष्टिकोण से काफी उपयुक्त स्थान पर स्थित है। यह चिकित्सालय उदयपुर के पशुओं की उचित चिकित्सा हेतु एकमात्र विश्वसनीय चिकित्सालय है। इसका अन्यत्र स्थानान्तरण करना पशुओं के प्रति काफी अन्यायपूर्ण होगा। साथ ही इतनी सी भूमि को समाहित कर लेने से महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय की आवश्यकता की पूर्ति का स्थायी समाधान होना संभव नहीं है।

ऑक्सीजन हब : उदयपुर के वर्तमान गुलाब बाग, समोर बाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, सुखाड़िया सर्कल, विद्याभवन, मोती मगरी एवं सहेलियों की बाड़ी शहर के लिए मुख्य ऑक्सीजन हब हैं। इनमें से कुछ शहर के मध्य स्थित हैं जिन्हें यथास्थिति में ही संरक्षित रखा जावे।

कृपया मनन करें कि आज से 50 वर्ष पूर्व उदयपुर के चारों ओर हरी–भरी वादियाँ थी, गर्मियों में पंखे चलाने की आवश्यकता नहीं रहती थी। मौसम गर्मियों में भी ठंडा रहता था जबकि आज हालत प्रतिकूल एवं भयावह है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। आज हमें जो विरासत में मिला हैं, उस पर भी हमारी बुरी दृष्टि है। हमने झीलों को तो पूर्ण रूप से प्रदूषित कर ही दिया हैं। उदयपुर में जो कुछ अनुकूल पर्यावरणीय तंत्र बचा हुआ है, उसे खत्म मत करो, भावी पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी।

गुलाब बाग

गुलाब बाग

राजस्थान कृषि महाविद्यालय के उद्यानिकी फार्म का बहुत बड़ा हिस्सा सड़क एवं भवन बनाने के लिए नगर विकास प्रन्यास को दे दिया गया। इस क्षेत्र को बेच कर विश्वविद्यालय पेन्शनर्स को पेन्शन देने के लिए एक संरक्षित कोष बनाया जायेगा। उदयपुर के मध्य स्थित यह ऑक्सीजन हब हमें यथावत् रखना चाहिये। इन्हें पेन्शन देने के उद्देश्य से कतई नहीं बेचे जाने चाहिये।

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर – ऑक्सीजन हब

उदयपुर के मध्य ऑक्सीजन हब के रूप में विद्यमान गुलाब बाग, समोर बाग, बड़ी पाल एवं माछला मगरा

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

इसमें बगीचे के स्थान पर सीमेन्ट–कंकरीट युक्त भव्य बहुमंजिली इमारतें एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान बना देने से उदयपुर की शस्य जलवायु पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आज हमारे पास भूमि उपलब्ध है तथा कतिपय कारणों से इस भूमि का सदुपयोग विश्वविद्यालय द्वारा नहीं किया जा रहा है, परन्तु इसे कतई बेचा नहीं जावे। इस भूमि का उपयोग गुलाब बाग की तर्ज पर दूसरा भव्य उद्यान विकसित करने हेतु किया जा सकता था।

पिछले 75 वर्षों में, हम इस शहर के मध्य एक और पृथक गुलाब बाग नहीं बना पाये। इसी तरह सहेलियों की बाड़ी को बनाना तो हमारे लिए संभव ही नहीं होगा क्योंकि उसका रखरखाव भी व्यवस्थित रूप से हम नहीं कर सकें। फव्वारों की वास्तविक सुन्दरता को बनाये नहीं रखा जा सका। तीन वर्ष पूर्व जो जोधपुरी पत्थर मार्ग पर लगाये गये वे भी व्यवस्थित रूप से नहीं लगाये गये, परिणामस्वरूप वर्तमान में ये टूटते जा रहे हैं। इनकी मरम्मत में अभी से ही अनावश्यक खर्च होने लगा है, जो कि एक चिंतनीय विषय है।

सहेलियों की बाड़ी के उत्तर में सहेली नगर बस गया और दक्षिण में भी धीरे–धीरे आवासीय भवन बढ़ते जा रहे हैं। इस क्षेत्र को संरक्षित रखने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिये। इस क्षेत्र में महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा एक उच्च स्तरीय बहु–उद्देश्यीय विशाल उद्यान मैसूर गार्डन की तर्ज विकसित किया जाना चाहिये। यह महत्वपूर्ण उद्यान राजघराने की ओर से उदयपुर के शहवासियों एवं इसके पास्थितिकी तंत्र के लिए एक अमूल्य भेंट सिद्ध होगा।

शहर के सभी मुख्य मार्गों पर अनेक तरह के मार्ग विभाजक (डिवाइडर) बनाये गये हैं। इन्हें ऑक्सीजन हब हरित पट्टी के रूप में ही विकसित किये जाने चाहिये। वर्तमान रोड डिवाइडर कहीं सीमेन्ट, कंकरीट, टाइल्स के साथ, तो कहीं हरित पौधे, तो कहीं लोहे की जाली के साथ विद्यमान है। काश! सभी डिवाइडर हरित पट्टी के साथ विकसित किये जाते। प्रत्येक मार्ग पर समरूप छायादार पेड़ नीम, गुलमोहर (बैंगनी, लाल व पीले फूल वाले), अशोक, पेन्डूला, शीशम आदि लगाये जाने चाहिये। वर्तमान में लगाए जा रहे पौधे (कतिपय को छोड़कर) उदयपुर की शस्य जलवायु के अनुकूल नहीं है। न तो ये छायादार है और न ही इनसे जलाऊ लकड़ी ही प्राप्त होती है तथा इनकी बढ़वार भी बहुत धीमी है।

सिटी स्टेशन से उदियापोल चौराहे तक उच्च स्तर के मार्ग विभाजक निर्मित किये गये हैं एवं इनका रखरखाव भी समुचित है। हालांकि हरित पट्टी के पौधों की बढ़वार एवं एकरूपता में कमी है। इसके बावजूद भी इसी प्रकार के मार्ग विभाजक शहर के अन्य स्थानों पर निर्मित किये जाने चाहिये। सीमेन्ट–कंक्रीट एवं केवल लोहे की जाली वाले मार्ग विभाजक इस क्षेत्र के तापमान में वृद्धि ही नहीं करेंगे बल्कि विपरीत दिशा से आने वाले वाहनों के तीव्र प्रकाश से दुर्घटना घटित होने की भी प्रबल संभावना रहेगी।

उच्च स्तर के मार्ग विभाजक मात्र ऑक्सीजन हब ही नहीं बल्कि

ऑक्सीजन हब : विद्याभवन, रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, मोती मगरी, सहेलियों की बाड़ी

उत्तर–पश्चिम रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, सुखाड़िया सर्कल, विद्याभवन परिसर, सहेलियों की बाड़ी एवं उसके पास स्थित हरित क्षेत्र तथा मोती मगरी परिसर को उदयपुर के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने हेतु पूर्ण रूप से संरक्षित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। समय के साथ ये बहुमूल्य भूमियाँ यदि अन्य आवासीय एवं व्यापारिक गतिविधियों के उद्देश्य से उपयोग में ली जायेगी तो उदयपुर का प्राकृतिक स्वरूप तो प्रभावित होगा ही साथ ही ये ऑक्सीजन हब भी हमेशा के लिए समाप्त हो जायेंगे।

वर्ष 2014 में 'उदयपुर ग्रीन' अभियान के अन्तर्गत विभिन्न चौराहों एवं फतहसागर पाल पर प्लास्टिक के बड़े गमलों में बहुत सुन्दर एवं मूल्यवान पौधे लगाये गये। इसके फलस्वरूप इन चौराहों की सुन्दरता में काफी निखार आया, लेकिन समय के साथ इन गमलों के पौधे सूखते रहे, गमले भी टूटते गये। वर्ष 2021 तक इन सभी चौराहों से ये सुन्दर पौधे एवं गमले लुप्त हो गये। काश! ये पौधे इन चौराहों पर टाइल्स हटाकर दूरदृष्टि रखते हुए भूमि में रोपित किये जाते तो आज इन चौराहों की सुन्दरता में अद्वितीय अभिवृद्धि हो सकती थी। अभी भी यह कार्य उच्च स्तरीय उद्यानिकी विधा का उपयोग करते हुए संभव किया जा सकता है। इससे शहर के विभिन्न चौराहों का कायाकल्प संभव होगा।

मार्ग एवं शहर की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि करते हैं। शहर के कई मार्ग विभाजकों पर गमलों में बहुत महंगें एवं उदयपुर की शस्य जलवायु के अनुकूल पौधे नहीं लगाये गये हैं। ये पौधे बहुत लम्बे समय तक जीवित नहीं रहेंगे। मार्ग विभाजकों पर घास नहीं लगानी चाहिये क्योंकि इसके रखरखाव में नियमितता एवं सावधानी आवश्यक होती है।

मार्ग के दोनों तरफ फुटपाथ बनाकर उसके किनारे पर निश्चित दूरी पर एक जैसे पेड़ लगाये जाने चाहिये। शहर की कॉलोनियों में बने पार्कों के समुचित विकास के साथ उच्च स्तरीय रखरखाव से हम शहर में ऑक्सीजन हब की तीव्र वृद्धि कर सकेंगे। इन कॉलोनियों में सोसायटी बनाकर नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास के आर्थिक सहयोग से इन पार्कों को व्यवस्थित रखरखाव के साथ सुन्दर बनाया जा सकता है। हिरण मगरी, सेक्टर–4 में एक पार्क स्थानीय लोगों एवं नगर निगम के आर्थिक सहयोग से अत्यन्त सुन्दर रूप से विकसित किया गया है। इस कार्य में डॉ. जी.एस. आमेटा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

एलिवेटेड रोड : पटेल सर्कल से फतहपुरा तक वाया सूरजपोल, देहलीगेट, मीरा गर्ल्स कॉलेज तक लगभग 2.5 कि.मी. लम्बाई की एलिवेटेड रोड बनाने की सिद्धान्ततः स्वीकृति केन्द्रीय भूतल, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने दे दी है। एलिवेटेड रोड की लम्बाई 2.5 कि.मी. एवं चौड़ाई 11.50 मीटर थ्री–लेन होगी। इस व्यस्ततम् संकड़े मार्ग पर एलिवेटेड रोड होने पर बस स्टेण्ड, उदियोपाल, शास्त्री सर्कल का यातायात दबाव कम हो सकेगा। सूरजपोल क्षेत्र से एलिवेटेड रोड से ब्रान्च उतारने आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह क्षेत्र उदियापोल बस स्टेण्ड से मात्र एक कि.मी. के दायरे में ही स्थित है।

उदियापोल से कोर्ट चौराहे तक एलिवेटेड रोड प्रोजेक्ट का सर्वे करने वाली एलएण्डटी कम्पनी की रिपोर्ट के अनुसार मोटे तौर पर 190 करोड़ रुपये एलिवेटेड रोड के निर्माण पर खर्च होंगे और जद में आ रहे मार्गाधिकार की अवाप्त की जाने वाली जमीनों, दुकानों आदि पर 100 करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्चा होगा। कोर्ट चौराहे तक यदि अवाप्ति की जरूरत भी पड़ी तो मेडिकल कॉलेज की भूमि का खुला हिस्सा मौजूद है जिसे थोड़ा–बहुत लेने में परेशानी नही होगी।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यदि सभी सरकारी एवं अर्द्ध–सरकारी कार्यालयों को वर्तमान स्थान से स्थानान्तरित कर दिया जावे तो जनमानस एवं वाहनों का दबाव काफी हद तक कम किया जा सकता है।

वैकल्पिक मार्ग : उदयपुर में पटेल सर्कल से कोर्ट चौराहा, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय होता हुआ फतहपुरा तक एलिवेटेड रोड बनाने के साथ वैकल्पिक मार्ग एवं लिंक रोड बनाई जानी चाहिये। वर्तमान सड़कों से सभी अतिक्रमण पूर्णतया हटाये जाने चाहिये। शहर के मध्य क्षेत्र से यातायात दबाव कम करने के लिए निम्नांकित वैकल्पिक मार्ग एवं लिंक रोड का निर्माण नगर निगम एवं नगर प्रन्यास अपने वार्षिक बजट के अन्तर्गत प्राथमिकता के आधार कर सकते हैं :–

1. माली कॉलोनी से महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के उद्यान फार्म, जे.सी. बोस हॉस्टल होते हुए स्टेशन तक 100 फीट चौड़ी सड़क।
2. रोड़वेज बस स्टेण्ड से कुम्हारों का भट्टा होते हुए रेलवे लाइन के समानान्तर आयुर्वेद सेवाश्रम चौराहे तक या पुल तक (मार्ग में आ रहे कृषि कार्यालय को मिनी सचिवालय में स्थानान्तरित कर) 60 फीट सड़क।
3. सुभाषनगर से लेकसिटी मॉल तक 60 फीट रोड।
4. सुभाषनगर से धूलकोट (सड़क) तक 60 फीट रोड।
5. राणावत पोल्ट्री फार्म से होते हुए 100 फीट सड़क का निर्माण।
6. मेवाड़ मोटर्स की गली के सामने से महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, विस्तार निदेशालय से होते हुए शक्तिनगर–अशोक नगर रोड़ तक 60 फीट रोड।
7. मेवाड़ मोटर्स गली रोड से बोटलनेक हटाकर चौड़ा करने का कार्य।
8. स्वामी नगर से माली कॉलोनी तक 100 फीट सड़क।
9. एम.बी. कॉलेज से सुखाड़िया समाधि स्थल तक 30 फीट रोड चौड़ी करना।
10. सूरजपोल से सेवाश्रम पुलिया के मध्य दो ओवरब्रिज का निर्माण।

उपरोक्त सभी सड़कों के निर्माण एवं उन्हें चौड़ा करने में यदि किसी भूमि या मकान को शहर हित में अवाप्त करना पड़े तो दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ किया जाना चाहिये एवं सम्बन्धित हकदारों को बाजार दर से भी अधिक मुआवजा या क्षतिपूर्ति राशि का भुगतान किया जाना चाहिये।

भूतल एवं लम्बी सीढ़ियाँ : उदयपुर शहर के सभी बाजारों में कतिपय व्यापारीगण अपनी दुकानों से 5–10 फीट की दूरी पर पूरे फुटपाथ एवं उससे भी आगे व्यापारिक वस्तुएँ रख कर एवं सीढ़ियाँ बनाकर फुटपाथ पर आवाजाही पूर्णतया बाधित कर देते हैं। स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत शहर के व्यवस्थित निर्माण में इस प्रकार का अतिक्रमण एक बड़ा व्यवधान है। व्यापारीगण को अपने निजी स्वार्थ को त्यागकर उदयपुर शहर को अतिक्रमण रहित एवं सुन्दर बनाने में सहयोग करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त सड़कों पर दुकानदार भूतल बनाकर, प्लिथ ऊपर कर लम्बी सीढ़ियाँ निकाल देते हैं। इस प्रक्रिया पर पूर्ण विराम लगाने के साथ, सड़क के दोनों तरफ एक निश्चित ऊंचाई की फुटपाथ बना देनी चाहिये। कोई भी दुकानदार इस फुटपाथ से छेड़छाड़ नहीं करें, इस हेतु कठोर प्रावधान बनाये जाने चाहिये। इससे बाजार के स्वरूप में एकरूपता आने के साथ अतिक्रमण से भी मुक्ति मिलेगी। प्रत्येक दुकानदार अपनी दुकान के लिए सीढ़ियों का निर्माण अपने स्वयं के क्षेत्र में ही करे, इस हेतु सशक्त नियम बनाये जाने चाहिये।

इसी प्रकार आवासीय कॉलोनियों में बड़े–बड़े रैम्प बनाकर सड़क पर 10 फीट से अधिक क्षेत्र में अतिक्रमण कर दिये जाते हैं। घर के आगे स्थित फुटपाथ क्षेत्र को जनरेटर, चारपहिया वाहन आदि रखने हेतु उपयोग में लेते हैं। इस प्रकार के अतिक्रमण को नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा सख्ती के साथ रोकने के प्रयास किये जाने अपेक्षित हैं।

शहर सड़कों पर मवेशी : उदयपुर शहर की सड़कों पर पालतू एवं लावारिस मवेशियों के कारण आम लोगों के साथ यातायात में व्यवधान उत्पन्न होता है। उदयपुर की मुख्य सड़कों यथा–सूरजपोल, हाथीपोल, देहली गेट, मंडी की नाल, फतहपुरा–बेदला रोड आदि पर लावारिस मवेशियों का राज है, जिसकी वजह से आए दिन कई हादसे होते रहते हैं। बीच राह पर घूमते साँड राहगीरों को अपनी चपेट में भी ले लेते हैं तथा ऐसे हादसों में कई बार लोगों की जान तक भी चली जाती हैं या वे दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। इस विषय पर जिम्मेदार स्थानीय प्रशासन भी गंभीर नहीं है। शहर में जगह–जगह पर लावारिस एवं पालतू मवेशियों को घास डालते हुए लोग मिल जायेंगे। मवेशियों को रजगा/घास डालना एक बड़ा पुण्य का कार्य है लेकिन उन गायों या मवेशियों को जो भूखे, लावारिस, अपंग हो। पालतू हष्ट–पुष्ट मवेशियों को रजगा/घास आम सड़कों पर ड़ालना कहाँ तक न्यायोचित हैं। इस हेतु लोगों को गौशाला में जाकर उम्रदराज, कमजोर, अपंग मवेशियों को रजगा/घास या अन्य खाद्यान्न डालना चाहिये।

सिटी बसों का संचालन : उदयपुर शहर एवं नगर विकास प्रन्यास क्षेत्र में यातायात व्यवस्था सुचारु एवं उच्च स्तर की करने की दिशा में स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत वर्तमान में लॉ–फ्लोर सिटी बसें संचालित की जा रही हैं। इन बसों के संचालन से शहरवासियों को काफी सुविधा हो गई हैं तथा इन बसों के प्रति उनमें काफी उत्साह देखने को मिला है। शहरवासियों द्वारा इनका पूरा–पूरा उपयोग किया जा रहा हैं। प्रचलित रूटों के अतिरिक्त शहर की नवीन एवं बड़ी सभी आवासीय कॉलोनियों के मध्य उक्त सिटी बसें प्रारम्भ करने की व्यवस्था नगर निगम द्वारा पीपीपी मोड की जानी चाहिये। आमजन इन सिटी बसों का अधिकतम् उपयोग सकें, इसके लिए गांवों से आने वाली बसों को शहर में प्रथम चौराहे तक ही आने की परमिट दी चाहिये ताकि मुख्य शहर में सिटी बसों को पर्याप्त संख्या यात्री उपलब्ध हो सकेंगे। इससे संचालक फर्म को दीर्घकालीन लाभ मिलने के साथ शहर की यातायात व्यवस्था में भी काफी हद तक सुधार संभव होगा एवं ग्रामीण बसों के मुख्य शहर में प्रवेश निषेध से ट्रैफिक जाम की समस्या से भी निजात मिलेगी।

मेडिकल ट्यूरिज्म हब : उदयपुर राजस्थान का एकमात्र ऐसा शहर है, जहाँ राजकीय एवं निजी मिलाकर कुल छः मेडिकल कॉलेज स्थापित हैं। प्रदेश में मेडिकल क्षेत्र में हम अग्रणी है। हमारे यहां सभी कॉलेजों में मिलाकर लगभग 1500 से अधिक चिकित्सक हैं। इन मेडिकल कॉलेजों से प्रतिवर्ष 1100 एमबीबीएस चिकित्सक तैयार होते हैं। शहर लगातार मेडिकल क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञ सेवाओं के लिए पहचाना जाने लगा है। यहां दक्षिणी राजस्थान के छः जिलों के ही नहीं, प्रदेश के अन्य जिले व मध्यप्रदेश से लेकर छत्तीसगढ़ तक के लोग उपचार के लिए आते हैं। यहाँ घरेलू से लेकर बाहरी मरीजों की बात करें तो प्रतिदिन सभी 6 मेडिकल कॉलेजों में 25 से 30 हजार मरीजों का उपचार होता है तथा भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या भी रोजाना 3 से 4 हजार के करीब रहती है। इन मेडिकल कॉलेजों में पिछले कुछ वर्षों में कैंसर, हृदय, न्यूरो साइन्स, नेत्र व बाल रोग उपचार के क्षेत्र में बड़ी उन्नति हुई है। आने वाले दिनों में सुपर स्पेशिलिटी सेवाओं में किडनी, लीवर, फेफड़े, आंत, हड्डियाँ और त्वचा के ट्रांसप्लान्ट में भी प्रगति होगी। कुछ समय बाद किसी भी बीमारी के मरीज को उदयपुर से बाहर जाने की जरूरत नहीं रहेगी। इन मेडिकल कॉलेजों के अतिरिक्त डेन्टल, फार्मेसी, नर्सिंग, फिजियोथेरेपी, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन आदि कॉलेजों से भी अच्छी संख्या में आवश्यक चिकित्सक एवं अन्य पेरामेडिकल कर्मी प्रशिक्षित होते हैं।

1. रवीन्द्र नाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, चेटक सर्कल, उदयपुर
2. गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, मनवाखेड़ा, उदयपुर
3. पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, भीलों का बेदला, उदयपुर
4. अमेरिकन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, बेड़वास, उदयपुर
5. पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स, उमरड़ा, उदयपुर
6. अनन्ता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज एण्ड रिचर्स सेन्टर, कालीवास, जिला–राजमसन्द

रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय : यह संभाग का सबसे बड़ा एवं पुराना राजकीय मेडिकल कॉलेज है। वर्ष 1937 में इसकी नींव रखी गई थी। इसे वेलिंगटन हॉस्पिटल कहा जाता था जिसे बाद में महाराणा भूपाल सार्वजनिक चिकित्सालय के नाम से नई पहचान मिली। वर्ष 1966 में इसे मेडिकल कौन्सिल ऑफ इण्डिया की ओर से स्वीकृति मिली। वर्तमान में इसमें सुपर स्पेशिलिटी सेवाएं प्रारम्भ हो चुकी हैं। कॉलेज में 300 सीनियर रेजिडेन्ट्स व 300 रेजिडेन्ट्स, 60 मेडिकल ऑफिसर सहित करीब 700 डॉक्टर्स हैं। इसके अलावा एमबीबीएस करने वाले 1200 विद्यार्थी हैं। 300 नर्सिंग स्टूडेन्ट्स, 100 पेरामेडिकल, 3000 नर्सिंग स्टाफ है। सभी मिलाकर 600 कार्मिक है। यहां रोजाना ओपीडी में 6000 लोग पंजीकृत होते हैं।

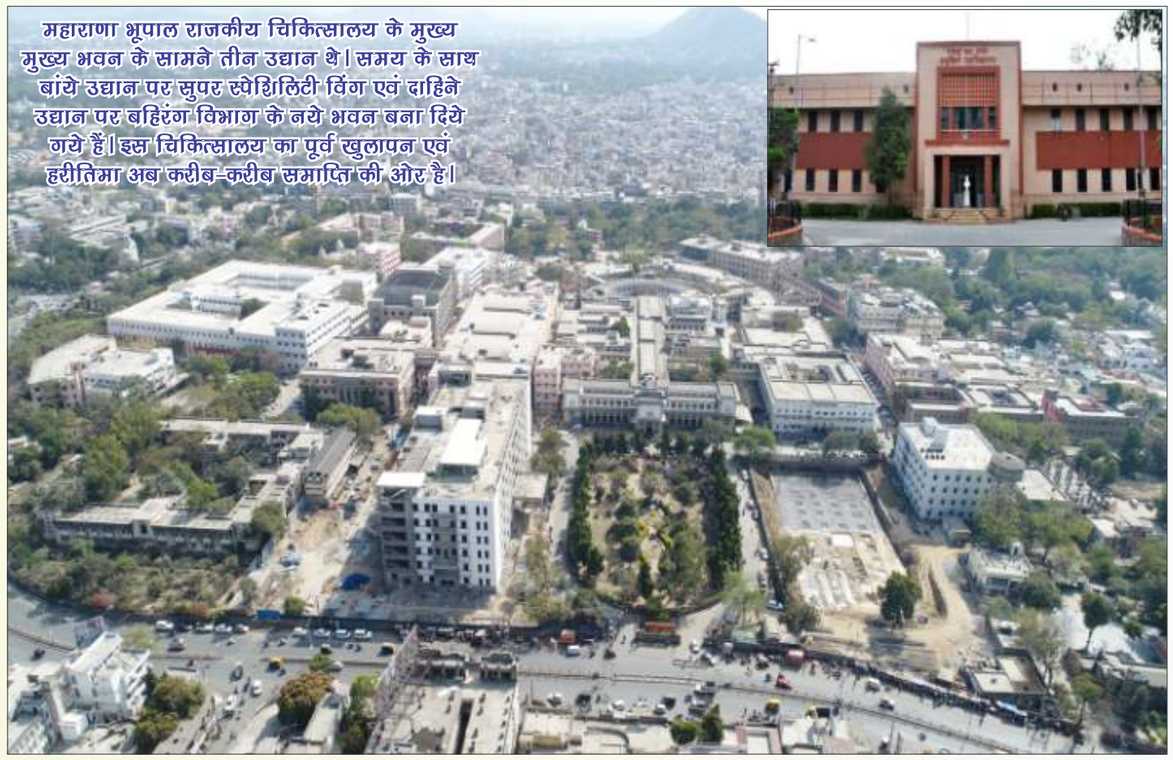

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के मुख्य मुख्य भवन के सामने तीन उद्यान थे। समय के साथ बांये उद्यान पर सुपर स्पेशिलिटी विंग एवं दाहिने उद्यान पर बहिरंग विभाग के नये भवन बना दिये गये हैं। इस चिकित्सालय का पूर्व खुलापन एवं हरीतिमा अब करीब-करीब समाप्ति की ओर है।

इसमें 2800 बेड उपलब्ध हैं। 19 ऑक्सीजन प्लान्ट एवं दो लिक्विड ऑक्सीजन प्लान्ट का सेटअप स्थापित किया गया है। एमबीबीएस की 250 सीट व पीजी की 300 सीटें हैं। वर्तमान में न्यूरो सर्जरी, न्यूरोलोजी, प्लास्टिक सर्जरी, नेफ्रोलोजी, कार्डियोलोजी, कैंसर, ग्रेस्ट्रोएन्ट्रोलोजी, कार्डियोथोरोसिक सर्जरी, ऑर्थोपेडिक आदि का उपचार हो रहा है। हाल ही में स्थापित सुपर स्पेशिलिटी सेन्टर में ऑको सर्जरी, मेडिकल ओंकोलोजी, जिरियाट्रिक मेडिसिन किडनी, हार्ट व लीवर ट्रांसप्लान्ट की सुविधाऐं विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के बड़ी स्थित केम्पस में नये कन्वेशन सेन्टर के साथ संक्रामक रोग व रिसर्च केन्द्र सीपित किया जाना प्रस्तावित है।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल (जीएमसीएच) : गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल गीतांजली विश्वविद्यालय की एक इकाई है जो वर्ष 2007 में शुरू हुई थी। गत 15 वर्षों से दक्षिण राजस्थान में यह सबसे बड़ी मेडिसिटी 50 एकड़ से अधिक क्षेत्र में स्थापित है। यह चिकित्सालय 1210 बेड की क्षमता का है जिसमें मल्टी सुपर स्पेशिलिटी सेवाएं कार्डियक सेन्टर, कैन्सर सेन्टर, न्यूरो साईन्सेज, नेफ्रो, यूरो, गेस्ट्रो सेन्टर, किडनी ट्रांसप्लान्ट यूनिट शामिल है। 256 स्लाइस सिटी स्केन और पेट सिटी स्केन यहां की विशेषज्ञ सेवाओं में शामिल हैं। यहां से 250 एमबीबीएस प्रतिवर्ष निकलते हैं। भविष्य में यहाँ पर ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट की सुविधा भी प्रारम्भ करने की योजना है। गीतांजली यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध जीएमसीएच, डेन्टल कॉलेज एण्ड रिचर्स इंस्टीट्यूट, कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी, कॉलेज ऑफ फार्मेसी, नर्सिंग, मास्टर इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन आदि डिग्री/डिप्लोमा कोर्सेज भी करवाये जा रहे हैं।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, उदयपुर

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल (पीएमसीएच), भीलों का बेदला : आदिवासी बहुल क्षेत्र उदयपुर के लोगों के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु वर्ष 2014 में इसकी शुरूआत हुई। यह करीब 35 एकड़ में फैला हुआ है तथा इसमें 1100 बेड़ है। यहां पर मल्टी सुपर स्पेशिलिटी, न्यूरो साइन्स, कार्डियक, यूरोलॉजी, गेस्ट्रोएन्ट्रोलॉजी, आंकोलॉजी, गेस्ट्रो सर्जरी, एन्डोक्रायोनोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, पिडियाट्रिक सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी सहित कई सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां से प्रतिवर्ष 150 एमबीबीएस एवं 96 पीजी चिकित्सक निकलते हैं। यहां पर राजस्थान की पहली न्यूरो बाइप्लेन कैथलेब उपलब्ध है।

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, भीलों का बेदला, उदयपुर

अमेरिकन इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज : अमेरिकन इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज में यू.जी. एवं पी.जी. कोर्स कराये जा रहे हैं। इसमें जीबीएच जनरल एण्ड मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल 900 बेड का है। वर्ष 2006 में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की स्थापना की गई थी। उदयपुर में मेडिकल हब और मेडिकल से जुड़ी अपार संभावनाओं को देखते हुए वर्ष 2016 में अमेरिकन इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज की स्थापना की गई। भट्टजी की बाड़ी स्थित जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल में अब तक 13 लाख से अधिक मरीजों को उपचार मुहैया कराया जा चुका है। यहां पर न्यूरोलोजी, न्यूरोसर्जरी, यूरोलॉजी, कैंसर, ज्वाइंट रिप्लेसमेन्ट, नेफ्रोलॉजी, किडनी केयर सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहां से 150 एमबीबीएस प्रतिवर्ष निकलते हैं। जीबीएस अमेरिकन हॉस्पिटल अत्याधुनिक तकनीक युक्त अन्तरराष्ट्रीय मानकों का सुविधायुक्त हॉस्पिटल है। मेडिकल कॉलेज व इससे सम्बद्ध जीबीएच जनरल एवं मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल में कैंसर के संपूर्ण इलाज की सुविधा उपलब्ध है।

अमेरिकन इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स (पिम्स), उमरड़ा : पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स की शुरूआत वर्ष 2015–16 में हुई। यहां पर एमबीबीएस में प्रतिवर्ष 150 विद्यार्थी तैयार होते हैं। कॉलेज की 13 ब्रान्च में 67 पीजी सीटें उपलब्ध हैं। यह कॉलेज नेशनल मेडिकल कौन्सिल से मान्यता प्राप्त है। वर्ड डायरेक्टरी ऑफ मेडिकल स्कूल्स में भी इस कॉलेज का नाम अंकित है। वर्तमान में मेडिकल कॉलेज से सम्बद्ध हॉस्पिटल में न्यूरोलॉजी, कार्डियोलॉजी, आंकोलॉजी, नेफ्रोलॉजी सहित कई प्रकार की विशिष्ट मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध हैं। साईं तिरुपति विश्वविद्यालय में इस मेडिकल कॉलेज के अतिरिक्त फार्मेसी, नर्सिंग व फिजियोथैरेपी के कोर्सेज संचालित हैं। भविष्य में विभिन्न पेरामेडिकल कोर्सेज की डिग्री व डिप्लोमा प्रारम्भ करना प्रस्तावित है।

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, उदयपुर

अनन्ता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च सेन्टर : यह उदयपुर–नाथद्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 8 पर कालीवास के पास स्थित है। यह 800 बेड का हॉस्पिटल है जिसे अगस्त, 2015 में स्थापित किया गया। इसे अनन्ता चेरिटेबल एजुकेशनल सोसायटी द्वारा संचालित किया जाता है। इसकी सुपर स्पेशिलिटी सेवाओं में कार्डियोलॉजी, कार्डियोथोरेसिक वैस्कुलर सर्जरी, न्यूरोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, मेडिकल ऑन्कोलॉजी, सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, प्लास्टिक सर्जरी, रिकन्स्ट्रक्शन सर्जरी, गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी, सर्जिकल गेस्ट्रो एन्ट्रोलॉजी, न्यूक्लियर मेडिसिन की सुविधा विकसित की जा रही है। यहां पीईटी सीटी और गामा कैमरा दक्षिणी राजस्थान में पहली बार स्थापित किया गया है। यहां पर एमबीबीएस की 150 सीटे हैं। कॉलेज में इसीएचओ, कार्डियोग्राफ, अन्य बॉडी पेल की स्केनिंग, थायरॉइड स्केन, बॉन स्केन, शरीर के अन्य अंगों की स्क्रिनिंग, विशिष्ट जैव रासायनिक व प्रतिरक्षा विज्ञानी जांच होती है। यहां 10 ऑपरेशन थियेटर तथा एक मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर है। यहां पर 55 बेड़ वाला अत्याधुनिक क्रिटिकल केयर यूनिट में आईसीसीयू, आईसीयू, एसआईसीयू, पीआईसीयू और एनआईसीयू की अलग–अलग इकाईयां संचालित हैं।

लेकसिटी में मेडिकल ट्यूरिज्म को बढ़ावा :

- मेडिकल ट्यूरिज्म बढ़ाने के लिए यहां मेडिकल कन्वेन्शन सेन्टर स्थापित किया जाना चाहिये जिसमें 5000 लोग एक साथ बैठ सके एवं विशिष्ट चर्चाओं में भाग ले सके।
- प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में एक नेशनल कॉन्फ्रेन्स हॉल की सुविधा हो, जिसमें 500–600 लोग बैठ सके।
- सभी मेडिकल कॉलेज मिलकर कॉमन टीचिंग प्रोग्राम तैयार करे जिसमें छात्र व फेकल्टी सदस्य भाग ले सके।
- एक मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध वरिष्ठ विशेषज्ञ की सेवाएं एवं परामर्श दूसरे मेडिकल कॉलेज की मांग पर मुहैया हो सके। जटिल बीमारी पर अधिक विशेषज्ञों के दल बनाकर उपचार संभव किया जा सके।
- प्रत्येक मेडिकल कॉलेज के साथ अत्याधुनिक सुविधा युक्त होटल, गेस्ट हाउस, स्वयं मेडिकल कॉलेज या अन्य प्रतिष्ठान के सहयोग से प्रारम्भ हो। यहां रहकर मरीज एवं उनके साथ आने वाले परिवारजनों को आवासीय सुविधा मुहैया हो, जिससे मेडिकल ट्यूरिज्म को बढ़ावा मिल सकेगा।
- मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस के साथ सभी विषयों में पीजी तथा विशिष्ट विषयों में विशिष्ट कोर्स की सुविधा के साथ फार्मेसी, नर्सिंग, फिजियोथैरेपी, पेरामेडिकल कोर्सेज की डिग्री व डिप्लोमा महाविद्यालयों से यहाँ तकनीकी विशेषज्ञों की उपलब्धता सुनिश्चित हो।
- विशिष्ट बीमारियों के उपचार के साथ मेडिकल ट्यूरिज्म के विशिष्ट पैकेज के विज्ञापन मिनी सचिवालय एवं पर्यटक हब निर्माण में सहयोगी संस्थायें हो सकती है।
- उदयपुर में अनेक माध्यमों से प्रसारित किया जावे।

उपरोक्त बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने से उदयपुर में मेडिकल ट्यूरिज्म की अपार संभावनाएँ विकसित हो सकती हैं।

मिनी सचिवालय एवं पर्यटन हब : मिनी सचिवालय एवं पर्यटन हब हेतु निम्नानुसार समेकित प्रयास अत्यावश्यक हैं :–

- प्रस्तावित मिनी सचिवालय के निर्माण हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार से वित्तीय स्वीकृति प्राप्त करने हेतु यथोचित प्रयास करने चाहिये।
- नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास भी इस मिनी सचिवालय एवं पर्यटक हब निर्माण में सहयोगी संस्थाएं बन सकती हैं।
- उदयपुर में अनेक उच्च स्तरीय औद्योगिक इकाइयां स्थित हैं जिनसे प्रस्तावित संग्रहालय निर्माण में सी.एस.आर. के अन्तर्गत जोड़कर सहयोगी संस्था के रूप में आर्थिक सहयोग लिया जा सकता है।
- मेवाड़ की संस्कृति के अनुरूप उदयपुर में भामाशाहों की कमी नहीं है, इस संदर्भ में भी हम एक समुचित योजना बनाकर शहर के बड़े एवं छोटे भामाशाहों से आर्थिक सहयोग इस प्रस्तावित पर्यटक हब के निर्माण हेतु ले सकते हैं।
- साथ ही उदयपुर विकास के नाम से दस वर्षीय विकास बॉण्ड भी राज्य सरकार की स्वीकृति से नगर निगम जारी कर सकता है, उसमें भी जन–साधारण अपना सहयोग देने में पीछे नहीं रहेगा।

उदयपुर के जनमानस उदयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना प्रस्ताव में सदैव अग्रणी रहे हैं। हमें विश्वास है कि इस महत्वपूर्ण परियोजना में आर्थिक सहयोग के इस अभियान में भी वे पीछे नहीं रहेंगे। उपरोक्त सभी बिन्दु उदयपुर शहर को एक स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने में सहभागी बनेंगे, ऐसा हमारा मानना है। यह एक प्रस्तावना है, इस पर और अधिक चिंतन व मनन की आवश्यकता है।

शहरी नागरिकों के कर्त्तव्य : नलकूप रिचार्ज, सौलर विद्युत उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट, पौधारोपण, जल संरक्षण, गन्दे व सीवरेज जल का निस्तारण आदि कार्य सम्पन्न करना। भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को कुछ अधिकार दिये गये हैं। हम उनका पूर्ण सजगता के साथ उपयोग करते हैं लेकिन संविधान भी हमसे कुछ कर्त्तव्यों को निभाने की अपेक्षा रखता है। जिसके तहत सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि हम प्रकृति के शस्य जलवायु एवं पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने के साथ उसमें और सुधार करने में भरपूर सहयोग करें।

जल संरक्षण, सोलर विद्युत उत्पादन, पर्यावरण में ऑक्सीजन वृद्धि हेतु समुचित पौधारोपण, गीले एवं सूखे कचरे का खाद में परिवर्तन, गन्दे एवं सीवरेज जल का उचित निस्तारण आदि पर समुचित ध्यान देना प्रत्येक नागरिक का प्राथमिक कर्त्तव्य होना चाहिये।

जल संरक्षण : समाज के प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति अपने जीवनकाल में अपने निवास के लिए एक छोटा एवं बड़ा मकान बनाकर परिवार के प्रत्येक सदस्य को आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु प्रयास करता है। इसमें अधिकांश लोग सफल होते हैं एवं कुछ विरासत में मिले घर में ही अपना जीवन गुजार देते हैं। कतिपय लोग अपने नवनिर्मित एवं विरासत में मिले मकान में पर्याप्त जल उपलब्धता की सुविधा लिए अपने परिसर में ही नलकूप खुदवा देते हैं। भूगर्भ में उपलब्ध मीठे एवं खारे पानी का उपयोग करते हैं। लेकिन इन नलकूपों के पुनर्भरण के लिए कुछ ही व्यक्ति चिंतन एवं मनन करते हैं। प्रत्येक घर पर प्रकृति जल के रूप में अमृत वर्षा करती है। कुछ व्यक्ति घर की छत पर वर्षा से प्राप्त जल को जल संरक्षण यंत्र के माध्यम से अपने नलकूप को रिचार्ज कर जल स्तर एवं गुणवत्ता में वृद्धि करने का सार्थक प्रयास करते हैं।

कुछ लोग लगातार भूजल का उपयोग करने के बाद भी इसके पुनर्भरण पर कतई चिंतित नहीं हैं एवं उसे व्यर्थ ही नालियों में बहा देते हैं। नगर निगम अथवा नगर विकास प्रन्यास द्वारा मकान निर्माण की स्वीकृति देने के साथ ही नलकूप खुदवाने वाले लोगों को जल संरक्षण संयंत्र भी स्थापित करने हेतु अनिवार्य रूप से पाबन्द किया जावे तथा आर्थिक रूप से पिछड़े एवं लघु आकार के भूखण्डधारियों को भी राज्य सरकार द्वारा अनुदान देकर जल संरक्षण संयंत्र स्थापित करने हेतु जागरूक किया जाना चाहिये। हम वर्षा जल को अपने नलकूप के अतिरिक्त कुएं, बावड़ी, हैण्डपम्प आदि में डालकर भी भावी जल संकट से निजात पा सकते हैं।

यह एक मॉडल है, जिससे छत के वर्षा-जल को एकत्र कर दूषकवेल को चार्ज किया जा सकता है अथवा एक टंकी में एकत्रित किया जा सकता है।

देवास वाटर फिल्टर संयंत्र : देवास वाटर फिल्टर संयंत्र से बचाये गये वर्षा जल का 8 माह दोहन तो 4 माह जल दान होता है। सेन्ट्रल ग्राउण्ड वाटर बोर्ड द्वारा मान्य देवास वाटर फिल्टर संयंत्र सबसे तीव्र गति से वर्षा जल पहुंचाता है। यह एक सबसे सरल, सस्ता एवं सहज तकनीकी सिस्टम है।

इस सिस्टम के अन्तर्गत जब छत पर वर्षा का पानी गिरता है, तो उसे आउटलेट/नाल्दे के माध्यम से नीचे लाया जाता है, जहां नलकूप, हेण्डपम्प, कुआं आदि स्थित हैं। इनके पास लाकर इस वर्षाजल को एक फिल्टर संयंत्र से जोड़ देते हैं। इसमें एक ड्रेन वॉल्व है जिसके द्वारा छत की गन्दगी के साथ पहली व दूसरी वर्षा के पानी को बाहर निकाल देते हैं ताकि छत की गन्दगी फिल्टर में नहीं जावे। जब इसमें साफ पानी आने लगता है, तब इस वॉल्व को बन्द कर देते हैं। तत्पश्चात् आने वाले वर्षा जल को फिल्टर के माध्यम से नलकूप में भेजा जाता है। इसमें एक छोटा फिल्टर भी है जिसमें रेती के छोटे–बडे कण विद्यमान हैं। इसके माध्यम से यह वर्षा जल गुजरता है तथा इसे नलकूप की केसिंग में जोड़ देते हैं और वर्षा जल सीधा नलकूप के पानी में समाहित हो जाता है।

पौधारोपण – हरियाली में वृद्धि का संकल्प : प्रत्येक जागरूक नागरिक के मन में ऑक्सीजन समृद्ध क्षेत्र की सदैव अपेक्षा रहती है। परन्तु वे अपने आवास एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के आसपास एवं चारों ओर हरियाली के लिए पौधारोपण के लिए अनभिज्ञ रहते हैं। सामान्यतया कुछ लोग मानते हैं कि पौधारोपण की जिम्मेदारी नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, वन विभाग आदि की है। अपने आवास निर्माण पर रु. 50 लाख से 2 करोड तक खर्च करने वाले नागरिकों की भी यही अपेक्षा रहती है कि पौधे मय ट्री–गार्ड इन संस्थाओं या अन्य किसी एन.जी.ओ. के द्वारा मुहैया करवा दिये जावे तो शायद वे पौधारोपण कर सकते हैं। कुछ व्यक्तियों का तो यह भी सोचना है कि घर के बाहर पेड़ लगाने से पत्ते आदि गिरेंगे और गन्दगी होने के साथ घर की भव्यता दिखने में भी कमी आयेगी। उन्हें या तो यह मालूम नहीं है कि घर के सामने या चारों ओर पेड़ लगाने से घर के पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार होने के साथ ऑक्सीजन उपलब्धता में भी वृद्धि होती है। अतः पर्यावरण के क्षेत्र में आमजन की जागरूकता एवं जिम्मेदारी आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य रूप से सुनिश्चित की जानी चाहिये।

एक पेड की कीमत

- एक सामान्य पेड़ प्रतिवर्ष करीब 20 कि.ग्रा. धूल सोखता है।
- प्रतिवर्ष लगभग 700 कि.ग्रा. ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है।
- प्रतिवर्ष 20 टन कार्बन–डाई–ऑक्साइड को सोखता है।
- गर्मियों में एक बड़े पेड़ के नीचे औसतन चार डिग्री तक तापमान कम रहता है।
- लगभग 80 कि.ग्रा. पारा, मिथियम, लेड आदि जैसी जहरीली धातुओं के मिश्रण को सोखने की क्षमता रखता है।
- प्रतिवर्ष करीब एक लाख वर्ग मीटर दूषित हवा फिल्टर करता है।
- घर के पास स्थित एक पेड़ अकॉस्टिक वॉल की तरह कार्य करता है यानी अवांछित शोर या ध्वनि को सोख लेता है।
- यदि घर के पास 10 पेड़ हैं तो जीवन 7 वर्ष तक बढ़ सकता है।
- विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय के अध्ययन में बताया गया है कि जिनके घरों के पास पेड़ होते हैं, उनको तनाव व अवसाद की आशंका कम होती हैं।
- इलिनॉय यूनिवर्सिटी ने रिसर्च में बताया गया है कि घर के पास पेड़ है तो नींद अच्छी आती है, विशेषकर वृद्धावस्था में।
- पेड़ लगाने का पहला सबसे सही समय 20 वर्ष पहले था, दूसरा सही समय अब है – चीनी कहावत।
- अमेरिका के रेडवुड नेशनल पार्क स्थित 800 वर्ष से अधिक की आयु के 'हाइपेरियन' पेड़ की ऊंचाई 115.73 मीटर है। यह दुनिया का सबसे ऊंचा पेड़ है, जो गिनीज वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड्स में दर्ज है।

सौर विद्युत ऊर्जा – प्रत्येक आवास का विद्युत स्रोत हो : उदयपुर शहर के प्रत्येक आवास पर सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना से शहर के पारिस्थितिकी तंत्र के प्रदूषण स्तर को कम करने के साथ शहर को विद्युत ऊर्जा उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

वर्तमान में उपयोग में ली जा रही विद्युत अधिकांशतः कोयला या गैस आदि जीवाश्म आधारित बिजलीघरों से प्राप्त हो रही है। ये सीमित स्रोत उत्पादन स्थलों से दूरी के कारण महंगे एवं वायु प्रदूषण का बड़ा कारण भी है।

नवीनतम् वैज्ञानिक शोधों के कारण अब सौर विकिरणों से ''फोटो वॉल्टेक सेल'' के माध्यम से विद्युत उत्पन्न हो रही है, जो स्वच्छ होने के साथ जीवाश्म आधारित विद्युत से सस्ती एवं असीमित है। इस विद्युत का बैट्री में भंडारण संभव हो जाने से दिन के अलावा रात्रि समय में भी उपयोग किया सकता है।

भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा इसे बढ़ावा देने हेतु वर्तमान में करीब रु. 45000/– प्रति किलोवाट की अनुमानित लागत पर घरेलू विद्युत कनेक्शन पर 1 से 3 किलोवाट तक 40 प्रतिशत एवं 3 से 10 किलोवाट तक 20 प्रतिशत की सब्सिडी भी दी जा रही है। छोटे परिवारों के सामान्य मकान हेतु करीब 3 से 5 किलोवाट का सौर विद्युत संयंत्र पर्याप्त है। एक किलोवाट के सौर विद्युत संयंत्र से करीब 1400 यूनिट से अधिक विद्युत का वार्षिक उत्पादन हो सकता है। वर्तमान विद्युत दरों के अनुसार इस संयंत्र की लागत करीब 5 वर्ष में वसूल हो सकती है। यह संयंत्र की करीब 20 से 25 वर्ष तक चल सकते है। इसमें केवल पेनल्स की सफाई के अतिरिक्त अन्य कोई विशेष देखरेख की भी आवश्यकता नही है।

नगर निगम, उदयपुर द्वारा इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से 10 प्रतिशत अतिरिक्त सब्सिडी और घोषित की गई है। भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा दिनांक 2 फरवरी, 2022 को एक आदेश जारी कर इन संयंत्रों की स्थापना हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया भी निर्धारित की जा रही है। इसका विवरण मंत्रालय की वेबसाइट www.mnre.gov.in या SPIN Portal - www.solarrooftop.gov.in पर उपलब्ध है।

सोलर वाटर हीटर : यह व्यापक रूप से आवासीय एवं गैर–आवासीय क्षेत्र में गर्म पानी करने हेतु अल्प लागत का एक प्रभावी तरीका है। सोलर वाटर हीटर प्रणाली में सौर संग्राहक और भण्डारक टैंक सम्मिलित होते हैं। इसमें पानी को सौर संग्राहक (प्रकाश केन्द्रित दर्पणों) के माध्यम से गर्म किया जाता है, जिसे बाद में उपयोग के लिए भण्डारण प्रणाली में लाया जाता है। इसमें निःशुल्क उपलब्ध सूर्य के प्रकाश को ईंधन के रूप में उपयोग में लिया जाता है। भण्डारण में संचित गर्म पानी को पाइप लाइन प्रणाली के माध्यम से प्रवाहित कर उपयोग में लिया जाता है। सोलर वाटर हीटर स्वतंत्र रूप से कार्य करने के साथ इलेक्ट्रिक या गैस हीटर के साथ हाइब्रिड के रूप में भी कार्य करते हैं। वर्षा ऋतु और बढ़ी हुई मांग के समय हाइब्रिड प्रणाली अधिक कारगर सिद्ध होती है। छोटे एवं बड़े प्रत्येक आवास में सौर विद्युत ऊर्जा उत्पादन के साथ सोलर वाटर हीटर भी लगाये जाने चाहिये। यह पानी गर्म करने हेतु कम लागत का एक प्रभावी तरीका है। 300 लीटर क्षमता के सोलर वाटर हीटर की लागत लगभग रु. 50,000 आती है, जो एक छोटे परिवार के लिए पर्याप्त होता है।

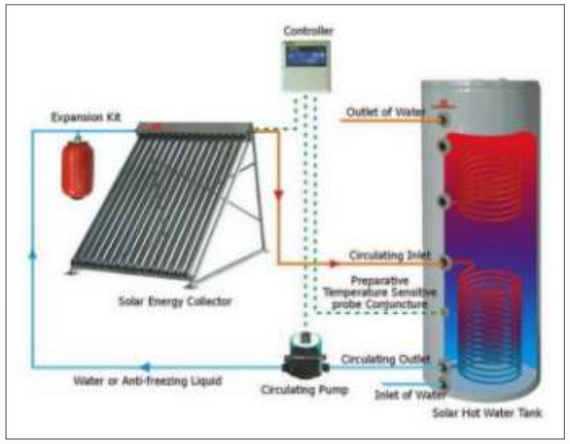

निवास स्थलों पर गमलों में पौधारोपण : विरासत में मिली हवेलियों एवं छोटे भूखण्डों पर आवास परिसर वातावरण को ऑक्सीजन समृद्ध बनाने हेतु आवास के परिसर या छत पर कृत्रिम गमलों में सुन्दर फूलदार पौधों का रोपण किया जा सकता है। इससे आवास की सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ शुद्ध ऑक्सीजन की पर्याप्तता बनी रहेगी। एक सकारात्मक सोच के साथ उद्यानिकी आमजन के मध्य एक अभिरुचि बन जायेगी।

वर्मी कम्पोस्ट : प्रत्येक घर में फल व सब्जी के छिलके, चायपत्ती, किचन वेस्ट, पेड़–पौधों की सूखी पत्तियों आदि को केंचुओं की मदद से उपजाऊ खाद के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। इसमें केंचुओं को एक नियंत्रित वातावरण में विधिपूर्वक पाला जाता है, इस क्रिया को वर्मीकल्चर कहते हैं। केंचुओं द्वारा कचरा खाकर जो कास्ट निकलती है उसे संयुक्त रूप से वर्मी कम्पोस्ट कहा जाता है।

केंचुएँ कृषि क्षेत्र में भूमि सुधार के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनकी क्रियाशीलता मृदा में स्वतः चलती रहती है। यह मिट्टी में पाये जाने वाले जीवों में सबसे प्रमुख है। ये अपने आहार के रूप में मिट्टी तथा कच्चे जीवांश को निगलकर अपनी पाचन नलिका से गुजारते हैं, जिससे वह महीन कम्पोस्ट में परिवर्तित हो जाते हैं और अपने शरीर से बाहर छोटी–छोटी कास्टिंग्स के रूप में निकालते हैं, इसी को वर्मी कम्पोस्ट कहा जाता है। वर्मी कल्चर के माध्यम से प्रतिदिन के कूड़ा–कचरे को अच्छी खाद 'वर्मी कम्पोस्ट' के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। यह खाद इतनी प्रभावशाली होती है कि इसमें पौधों के लिए उपयोगी सभी पोषक तत्व भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं तथा पौधे इन्हें तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं।

वर्मी कल्चर प्रणाली को छोटे सीमेन्ट के टैंक अथवा कम गहरे गड्ढ़े में भी किया जा सकता है। वर्मी कल्चर के लिए 20 लीटर क्षमता की बाल्टी तथा 45 से.मी. × 45 से.मी. × 30 से.मी. का सीमेन्ट या लकड़ी का डिब्बा या टेंक काम में लिया जा सकता है। यदि गड्ढ़े अथवा टेंक में वर्मी कल्चर किया जाता है तो वह स्थल छायादार होना चाहिए और उस स्थान पर पानी एकत्रित नहीं होना चाहिए।

वर्मी कल्चर हेतु उपयुक्त पात्र का चुनाव करने के बाद वर्मी बेड बनाने के लिए सर्वप्रथम मिश्रित कचरे (जिसमें सूखा कचरा, हरा कचरा, किचन वेस्ट, घास, राख इत्यादि मिश्रित हो) की करीब 10 से.मी. मोटी परत बिछाई जावे। फिर इस पर अच्छी तरह पानी देकर उसे गीला करें। इसके ऊपर सड़ा हुआ अथवा सूखे गोबर के खाद की 7–10 इंच मोटी परत बिछा दें और इसे भी पानी से गीला कर दें। इस पर एक वर्गमीटर में 100 के हिसाब से स्थानीय अथवा विशिष्ट प्रजाति के केंचुएं जो भी उपलब्ध हो, छोड़े जा सकते हैं। इसके ऊपर पुनः हरे एवं सूखे कचरे की परत लगाकर टाट की बोरी से ढक दिया जावे। समय–समय पर इसे गीला रखने हेतु पानी का छिड़काव किया जावे। मेंढ़क, मुर्गियां अथवा अन्य पक्षियों एवं लाल चीटियों से वर्मी बेड को बचाना आवश्यक होता है।

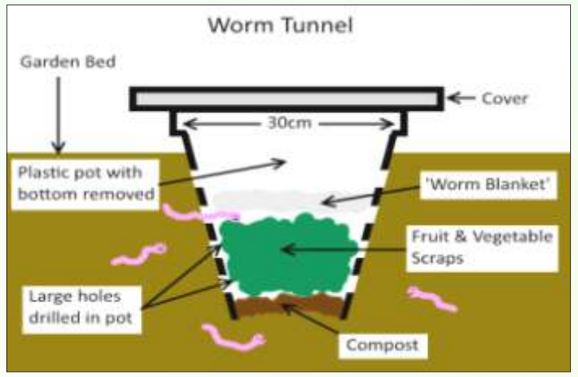

उदयपुर शहर में पार्किंग समस्या एवं समाधान : उदयपुर शहर की जनसंख्या तीव्रता से बढ़ रही है, जो वर्तमान में करीब 5.92 लाख है और उससे भी अधिक तीव्रता से बढ़ रही है सड़कों पर स्कूटर, मोटर बाइक, कार, टेम्पो, बसों आदि वाहनों की संख्या। इसके साथ ही शहर के प्रमुख मार्गों, राज्य मार्गों और राष्ट्रीय मार्गों पर लगने वाले लम्बे–लम्बे जाम, इस पर कार सवारी का लुत्फ, युवाओं की तीव्र गति से दौड़ती मोटर बाइक, सड़कों पर अव्यवस्थित वाहन पार्किंग आदि आम जनता के जीवन को नारकीय बना रहे हैं। वाहनों की रेलमपेल, पेट्रोल–डीजल के धुएँ आदि से आम नागरिक का शहर की सड़कों, संकड़े मार्गों और बाजारों में जाना काफी कठिन हो गया है। सड़क पर अनियंत्रित तीन एवं नौ सीटर टेम्पो के साथ अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन सुविधा से शहर की यातायात व्यवस्था अनियंत्रित हो रही है। वाहन आवश्यक होने के साथ ही बाजार में पार्क कर खरीददारी या व्यवसाय करना भी आवश्यक है।

उदयपुर का नाम विश्व के खूबसूरत शहरों में विद्यमान है तथा इसे पर्यटक नगरी के रूप में जाना जाता है। उदयपुर की भौगोलिक स्थिति में ऊँचाई व इसके मध्य स्थित झीलों के आकर्षण से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक भ्रमण पर आते हैं। वर्तमान में राज्य के अन्य शहरों एवं पड़ौसी राज्य गुजरात एवं मध्यप्रदेश आदि से पर्यटक अपने निजी वाहन या टैक्सी से आने लगे हैं। पर्यटक सीजन के दौरान शहर में वाहनों की संख्या में बहुत तीव्रता से वृद्धि के साथ अक्सर जाम की स्थिति भी देखी जाती है। यदि हम सभी पर्यटन स्थलों के साथ–साथ बाजारों, होटलों, रेस्टोरेन्ट्स आदि का अवलोकन करें तो यहाँ पर वाहन अव्यवस्थित तरीके से खड़े दिखाई देंगे। इसका मुख्य कारण है–व्यवस्थित पार्किंग स्थलों का अभाव। इससे पर्यटकों को असुविधा के साथ यातायात व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न होता है। इस दिशा में यातायात पुलिस को अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। इस समस्या के आंशिक समाधान के रूप में वर्तमान में उदयपुर शहर में पूर्ण स्वचालित या मेन्यूअल बहु–मंजिली पार्किंग एवं छोटे स्थलों पर पॉकेट पार्किंग व्यवस्था अमल में लाई जा रही है, जो काफी सुविधाजनक साबित हुई है। इसे और व्यापक रूप देने के साथ विशेष एप अथवा वेबसाईट के माध्यम से जनमानस एवं पर्यटकों हेतु रियल टाइम पार्किंग स्पेस उपलब्धता की जानकारी उपलब्ध करवाई जावे। इससे पार्किंग की समस्या से काफी हद तक निजात मिल सकती है।

पार्किंग समस्या के कारण :

- शहरकोट एवं शहरकोट के बाहर वाणिज्यिक एवं आवासीय क्षेत्र के विस्तार के साथ दो/चारपहिया वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होने से प्रतिष्ठानों एवं आवासीय क्षेत्र के सामने ही उक्त वाहनों की पार्किंग की जाने लगी। इससे सड़कों की चौड़ाई कम होती गई, पगडंडियों पर वाहन पार्क होने लगे, पैदल चलना कठिन हो गया एवं वाहनों की गति में भी कमी आई।
- आवासीय स्थलों में गैराज को या तो आवासीय स्थल या प्रतिष्ठान के रूप में परिवर्तित कर दिया गया, जिसके फलस्वरूप व्यक्तिगत वाहन भी सड़कों पर पार्क होने लग गये।
- शहर के प्रशासनिक कार्यालय, न्यायालय, उच्च अधिकारियों के आवास, चिकित्सालय की सुपर स्पेशियलिटी इकाई शहर के मध्य स्थित हैं, जिन्हें अन्य निर्धारित एवं चयनित क्षेत्रों में समय पर स्थानान्तरित नहीं किया जाना।
- शहर के व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा अतिक्रमण का प्रयास करना। दुकानों के बाहर सामान रखकर बिना किसी डर या हिचकिचाहट व्यापारिक गतिविधियों को संचालित करना।
- शहर में फुटपाथ का अभाव एवं थैला व्यवसायियों का व्यस्ततम् इलाकों पर ठहराव कर व्यापारिक गतिविधियों का संचालन।
- सुव्यवस्थित सार्वजनिक परिवहन सुविधा का अभाव।
- नौ सीटर टेम्पो के मालिकों को नगर निगम या राज्य सरकार द्वारा आर्थिक सहायता एवं बैंक लोन गारन्टी के माध्यम से छोटी वातानुकूलित या अवातानुकूलित बसों को व्यस्त क्षेत्रों एवं आवासीय कॉलोनियों के मध्य संचालित करने से व्यक्तिगत वाहन बाजार में कम आयेंगे तथा उनकी पार्किंग की भी कोई समस्या नहीं रहेगी।
- शहर में उपलब्ध स्थानों पर बहुमंजिली पार्किंग व्यवस्था का अभाव।
- स्थानीय होटलों में क्षमता के अनुसार वाहन पार्किंग की सुविधा की अनुपलब्धता।

वर्तमान में संचालित पॉकेट पार्किंग : वर्तमान में उदयपुर शहर में पार्किंग हेतु जहाँ पर कम स्थान उपलब्ध है, वहाँ पॉकेट पार्किंग विकसित कर वाहन पार्किंग की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही हैं, जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं :–

- हैण्डीक्राफ्ट (पन्नाधाय) मार्केट, हाथीपोल पर सड़क के मध्य विकसित पार्किंग स्थल पर्यटकों के मध्य लोकप्रिय हो गया है एवं इसके दोनों ओर नियमित रूप से यातायात संचालित हो रहा है। यहाँ पर मुख्य सड़क के दोनों ओर स्थित नालियों के साथ दुकानों के अनधिकृत रेम्प, सीढ़ियाँ, चबूतरे आदि को भी सड़क में मिला देने से यातायात व्यवस्था और सुगम बनाई जा सकती है। इससे स्थानीय व्यापारियों को भी भारी ट्रैफिक से निजात मिलने के साथ पर्यटकों की आसानी से आवाजाही एवं खरीददारी करने से निश्चित ही लाभ प्राप्त होगा।

- बापू बाजार के बैंक तिराहा पर आईसीआईसीआई बैंक, जन सुविधा स्थल एवं यूको बैंक के मध्य स्थित पार्किंग स्थल को आरक्षित कर इस पर दो/चारपहिया वाहनों की व्यवस्थित लाईनिंग की जानी चाहिये।

- देहलीगेट पर महेश किराणा स्टोर, उदयपुर कृषि केन्द्र एवं बैंक ऑफ इण्डिया के मध्य स्थित पार्किंग स्थल।

- बापू बाजार के मध्य क्षेत्र में रेडिमेड पैलेस एवं जोधपुर मिष्ठान भण्डार के बीच स्थित पार्किंग।

- बापू बाजार, नेहरू बाजार एवं नाड़ाखाड़ा चौराहा चौक के मध्य स्थित पार्किंग स्थल में पर्याप्त संख्या में दो एवं चार पहिया वाहनों की लघु अवधि की व्यवस्थित पार्किंग की जा सकती है।

- महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में पार्किंग स्थल : इस चिकित्सालय के विभिन्न क्षेत्रों में दो एवं चार पहिया वाहनों की अव्यवस्थित पार्किंग सुविधा उपलब्ध है। इसमें मुख्यतः आपातकालीन इकाई, ट्रोमा सेन्टर, बाल चिकित्सालय, जनाना चिकित्सालय, सुपर स्पेशियलिटी विंग, एसबीआई बैंक कार्यालय आदि के पास काफी संख्या में वाहनों की पार्किंग की जाती हैं।

सहेलियों की बाड़ी के सामने स्थित पार्किंग : सहेलियों की बाड़ी के सामने स्थित एसआईईआरटी के परिसर में एक पॉकेट पार्किंग स्थल का निर्माण किया गया है। सहेलियों की बाड़ी के भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों को अपने वाहनों को पार्क करने के लिए यह एक श्रेष्ठ पार्किंग स्थल बन गया है। यहां पर आने वाले पर्यटकों एवं उनके वाहनों की संख्या के दृष्टिकोण से यहाँ पर बहुमंजिला पार्किंग स्थल का निर्माण नगर निगम द्वारा या पीपीपी मोड पर आवश्यक रूप से किया जाना चाहिये।

माणिक्यलाल वर्मा पार्क एवं दीनदयाल उपाध्याय पार्क की पार्किंग : इन दोनों स्थलों पर व्यवस्थित पार्किंग व्यवस्था उपलब्ध है। यहाँ पर पार्किंग स्थल पर ही वाहन पार्क करने हेतु आमजन एवं पर्यटकों को जागरूक करने की आवश्यकता है।

सेवाश्रम फ्लाई ओवर ब्रिज के नीचे पार्किंग : यहाँ पर भी काफी संख्या में वाहन पार्क किये जाते हैं। इस स्थल को इस क्षेत्र के मुख्य पार्किंग स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

सिटी रेलवे स्टेशन के पश्चिमी छोर पर पार्क में पार्किंग : पूर्व में यहां पर एक बहुत ही खूबसूरत फव्वारायुक्त पार्क विकसित था। बाद में यहाँ पर यात्रिगण के दो/चारपहिया वाहन की पार्किंग बना दी गई। यहाँ काफी संख्या में वाहनों की पार्किंग की जा रही है।

शहर में उपरोक्त स्थानों पर संचालित पॉकेट पार्किंग में दो एवं चारपहिया वाहनों की पार्किंग के लिए अलग–अलग चौड़ाई और लम्बाई की लाइनिंग करवाई जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त शहर में तीनपहिया वाहनों हेतु भी ऑटो स्टेण्ड स्थापित कर उनकी निर्धारित संख्या के अनुसार लाइनिंग की जावे ताकि व्यवस्थित पार्किंग की जा सके।

पॉकेट पार्किंग का व्यवस्थित संचालन : उपरोक्त सभी स्थानों पर व्यवस्थित पार्किंग सुविधा निम्नानुसार संचालित किये जाने के प्रयास किये जाने चाहिये :–

- पार्किंग प्रातः 7 बजे से रात्रि 10 बजे तक लघु अवधि के लिए ही निर्धारित हो।
- प्रथम घण्टे के लिए न्यूनतम् शुल्क, अवधि बढ़ने के साथ शुल्क में वृद्धि अधिक दर से किसी भी अवस्था में विशेषकर पर्यटक स्थलों के पास पार्किंग तीन घण्टे से अधिक नहीं हो सकेगी।
- इस अवधि से अधिक होने पर नियमानुसार शुल्क के साथ पैनल्टी का प्रावधान किया जावे।
- वर्तमान में हाथीपोल हेण्डीक्राफ्ट मार्केट, महेश किराणा स्टोर, देहलीगेट, बापू बाजार बैंक तिराहा, बापू बाजार मध्य आदि स्थानों पर वाहन पार्किंग के लिए न तो शुल्क न अवधि के पट्ट लगे हुए हैं। इन सूचनाओं से वाहन पार्किंग कर्त्ताओं एवं अधिकृत ठेकेदारों को अत्यधिक सुविधा रहेगी।

कम्प्यूटराइज्ड टिकिट : पार्किंग स्थल पर खड़े होने वाले प्रत्येक वाहन मालिक को पार्किंग उपरान्त कम्प्यूटराइज्ड टिकिट मिलना चाहिये जिसमें पार्किंग का समय एवं शुल्क अंकित हो। टिकिट के पीछे निर्धारित शुल्क का विवरण अंकित होना चाहिये। इससे वर्षभर में पार्किंग किये गये वाहनों की संख्या की जानकारी सुगमता से मिल जायेगी जो भविष्य में शुल्क निर्धारण करने में सुविधाजनक रहेगा।

पार्किंग अवधि	शुल्क
प्रथम घण्टा	रु. 10/–
एक से तीन घण्टे तक	रु. 20/–
तीन से पाँच घण्टे तक	रु. 50/–
पाँच से आठ घण्टे तक	रु. 70/–
आठ से अधिक तक	रु. 100/–

उक्त शुल्क निर्धारण के लिए अधिक चिन्तन की आवश्यकता है।

प्रस्तावित पॉकेट पार्किंग स्थल : शहर में उक्त सभी पॉकेट पार्किंग स्थलों के अतिरिक्त कई स्थान और भी उपलब्ध है, जहाँ इस प्रकार के व्यवस्थित पॉकेट पार्किंग स्थल बनाये जा सकते हैं। इससे शहरवासियों एवं पर्यटकों को पार्किंग सुविधा उपलब्ध होने के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो सकेंगे। इन स्थलों का विवरण निम्नानुसार है:–

- **हाथीपोल जैन धर्मशाला एवं कालका माता मन्दिर के सामने** पूर्व में तांगा स्टेण्ड पर।
- **अश्विनी बाजार के मध्य** हाथीपोल हेण्डीक्राफ्ट मार्केट की तर्ज पर या कब्रिस्तान वाली लाइन पर दो व चारपहिया वाहनों की तिरछी पार्किंग।

- **चेटक सर्कल** स्थित मस्जिद के उत्तर–पूर्व की ओर उपलब्ध स्थल पर पार्किंग।

- **चेटक सर्कल** स्थित कब्रिस्तान की बाउण्ड्रीवॉल के सहारे एवं पुलिस थाने के पास पार्किंग।

चेटक सर्कल स्थित कब्रिस्तान के पास

चेटक सर्कल पुलिस थाने के पास

- **महाराणा भूपाल स्टेडियम के बाहर** स्थित स्टेशनरी मार्केट के सामने मुख्य गेट के बायें एवं दायें छोर पर पार्किंग।

- **कोर्ट चौराहा क्षेत्र** में डी.पी. ज्वेलर्स, सोजतिया ज्वेलर्स, हनुमान मन्दिर, तहसील कार्यालय के सामने एवं भट्टजी की बाड़ी के प्रारम्भिक रास्ते के पूर्वी छोर पर।

- **जगदीश चौक में राजमहल गेट के सामने** से मुख्य रोड के मध्य अस्थायी अतिक्रमण हटाकर जगदीश मन्दिर तक हाथीपोल बाजार के पार्किंग स्थल के तर्ज पर विकसित की जा सकती है।

- **गुलाब बाग मुख्य द्वार** के सामने एवं मुख्य द्वार से बाउण्ड्रीवाल के साथ–साथ पार्किंग।

- **आर.एम.वी. दक्षिणी छोर** बाउण्ड्रीवॉल के साथ गटर लाइन के ऊपर तिरछी पार्किंग।

- **लेक पैलेस गेट**, तिब्बतियन मार्केट एवं पुलिस चौकी के मध्य स्थित चौक में।

- सूरजपोल के पास स्थित अमृत नमकीन के सामने रिक्त स्थल पर लगभग 10 चारपहिया वाहन पार्क किये जा सकते हैं। इससे यहां के व्यापारियों को भी फायदा होगा।

- टाऊन हॉल के सामने पंजाब नेशनल बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा के पास तिरछी एवं सीधी दो व चारपहिया वाहनों की अल्पावधि की पार्किंग की जा सकती है। इससे बैंक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों में आने वाले आमजन को वाहनों की पार्किंग में सुविधा रहेगी।

- कलक्ट्रेट कार्यालय के मुख्य द्वार की बाउण्ड्रीवॉल के साथ चारपहिया वाहनों की पार्किंग को व्यवस्थित रूप से करने पर इस कार्यालय में आने वाले आमजन को राहत मिलेगी।

- कालाजी–गोराजी के पास गुलाब बाग मुख्य रोड़ के सहारे चारपहिया वाहनों हेतु पार्किंग की जा सकती है।

- सहेलियों की बाड़ी क्षेत्र में इसके सामने, सेन्ट मैरिज स्कूल बाउण्ड्रीवाल के साथ होटल आमंत्रा के सामने पार्किंग स्थल।

- फतहसागर की मुख्य पाल के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर पर स्थित पार्किंग स्थल।

- दूध तलाई में माणिक्यलाल वर्मा पार्क से पूर्व हेण्डीक्राफ्ट मार्केट के सामने वाले चौक में पॉकेट पार्किंग व्यवस्था विकसित की जा सकती है।

- फतहपुरा चौराहे पर फील्ड क्लब की बाउण्ड्रीवाल के साथ पॉकेट पार्किंग व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि यहाँ पर आमजन को वाहन पार्किंग की सुविधा प्राप्त हो सके।

- पंचवटी क्षेत्र के आर.के. मॉल एवं चौराहे पर पॉकेट पार्किंग से चारपहिया वाहन पार्क करना संभव है। इससे इस क्षेत्र में पार्किंग की समस्या से काफी हद तक राहत मिल सकेगी।

- हिरण मगरी क्षेत्र के सेक्टर–3, 4 एवं 5 में नवनिर्मित मुख्य मार्ग के आसपास के क्षेत्र में पॉकेट पार्किंग सुविधा विकसित करने से यहाँ पर काफी हद तक पार्किंग सुविधा उपलब्ध करायी जा सकती है। इस सुविधा को विकसित करने से भविष्य में अतिक्रमण की संभावना नहीं के बराबर हो जायेगी। व्यवस्थित पार्किंग सुविधा की उपलब्धता स्थानीय नागरिकों एवं व्यापारियों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

- शास्त्री सर्कल, अलका होटल एवं राव छात्रावास के मध्य के क्षेत्र में पॉकेट पार्किंग की सुविधा विकसित कर वाहनों को व्यवस्थित रूप से पार्क कराया जा सकता है।

- थोब की बाड़ी व इन्द्रप्रस्थ कॉम्पलेक्स के सामने लघु अवधि हेतु पॉकेट पार्किंग की सुविधा मुहैया करवाकर वाहनों को व्यवस्थित रूप से पार्क किया जा सकता है।

उपरोक्त सभी स्थानों के अलावा मुखर्जी चौक, घंटाघर सर्राफा बाजार आदि स्थानों पर भी पॉकेट पार्किंग की संभावना को तलाश कर वाहनों के व्यवस्थित रूप से पार्क किये जाने पर कार्य किया जाना अपेक्षित है।

स्थायी बहुमंजिलें पार्किंग स्थल : स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत शहर में कुछ स्थानों पर बहुमंजिलें पार्किंग स्थलों का निर्माण नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा किया गया है। इन पार्किंग स्थलों में कई जगह आधी एवं आधी से भी कम क्षमता से वाहन पार्क हो रहे हैं जबकि इनके बाहर सड़कों पर गाड़ियाँ बेतरतीब रूप से खड़ी रहती हैं। यातायात पुलिस द्वारा पार्किंग स्थल के बजाय सड़कों पर वाहन खड़े किये जाने पर वाहन को अधिकृत एजेन्सी द्वारा जब्त किया जाकर चालान बनाये जाने हेतु आमजन को हिदायत दी गई है जिसे सख्ती के साथ लागू किया जावे।

नगर निगम हाथीवाला पार्क में भूतल पार्किंग : नगर निगम के परिसर को पिछले लगभग 56 से अधिक वर्षों पूर्व एक सुन्दर परिसर के रूप में विकसित किया गया। इसमें चाचा नेहरू की मूर्ति के साथ फव्वारे युक्त प्रसिद्ध नेहरू बालोद्यान पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों के आकर्षण का यह एक मुख्य स्थान था, जिसका उद्घाटन राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने 23 फरवरी, 1966 को किया था। इसमें हरे–भरे वृक्ष एवं पौधों के साथ लॉन एवं बच्चों के खेलने के लिए कई छोटे–बड़े झूले, हाथी एवं ऊँट की आकृति के पशुओं के साथ राइड़ लगे हुए थे। आमजन में खासकर वरिष्ठजन एवं बच्चों के घूमने का यह प्रमुख स्थान था। कालान्तर में अनेक निर्माण हुए लेकिन किसी भी निर्माण से इसकी सुन्दरता एवं भव्यता में कमी नहीं आई।

पार्किंग स्थल से आय	
वर्ष	राशि (रू.)
2017–18	1017677
2018–19	–
2019–20	487777
2020–21	536555
2021–22	2150000

बाद में इस पार्क में मास्टर प्लान के विपरीत कई परिवर्तन कर दिये गये। हाथीवाला पार्क खत्म कर दिया गया। इस पार्क को नगर निगम द्वारा 14.37 करोड़ रुपये खर्च कर पार्किंग बनवाई गई जिसका लोकार्पण 2 अप्रेल, 2017 को हुआ। इसकी क्षमता 84 चारपहिया एवं 96 दोपहिया वाहन पार्किंग की है। इस पार्क में पार्किंग इस शर्त पर बनाई गई थी कि वहाँ भूमिगत पार्किंग बनाने के साथ ऊपर खूबसूरत पार्क बनाया जायेगा लेकिन उसे नजरअंदाज कर दिया गया। इसके भूतल पर अभी वाहन पार्क हो रहे हैं। इस पार्किंग को निजी फर्म द्वारा संचालित किया जा रहा है। इस व्यवस्था से निःसंदेह आम नागरिकों एवं पर्यटकों के लिए वाहन पार्किंग की सुविधा में विस्तार होगा।

कभी ऑक्सीजन देने वाला हाथीवाला पार्क अभी कार्बन–डाई–ऑक्साइड दे रहा है। काश! हाथीवाला पार्क को अपने पूर्व स्वरूप में रखते हुए नगर निगम अपने कार्यालय एवं सुखाड़िया रंगमंच के पीछे की भूमि पर व्यवस्थित पार्किंग स्थल के साथ वृहद् खुला रंगमंच का निर्माण किया जाता तो अधिक उत्तम रहता। कुछ ही वर्षों में वर्षाकाल के दौरान इस पार्किंग की छत एवं दीवारों से पानी रिसने लगा है। इस समस्या के समाधान हेतु विषय विशेषज्ञों से परामर्श लेकर इस पार्किंग स्थल में पानी रिसने की रोकथाम की जानी चाहिये जिससे यह पार्किंग व्यवस्था अधिक कारगर एवं टिकाऊ बन सके।

आसीन्द की हवेली पार्किंग स्थल : आसीन्द की हवेली पार्किंग (ऊपरी एवं भूतल) स्थल को जगदीश चौक एवं भट्टियानी चौहट्टा के पास एक बहुमंजिला पार्किंग स्थल के रूप में उत्तम जनसुविधा के साथ विकसित किया गया है। इसके भूतल एवं ऊपरी (तृतीय) तल में पिट लिफ्टिंग पार्किंग व्यवस्था विकसित करने से शहरवासियों एवं पर्यटकों को अधिक संख्या में वाहन पार्किंग करने की सुविधा मिल सकती है। इसकी चौथी मंजिल पर भी पार्किंग का निर्माण कर छत पर रूफटॉप रेस्टोरेन्ट विकसित किया जा सकता है।

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के अश्विनी बाजार छोर पर पार्किंग स्थल : इस चिकित्सालय के परिसर में अश्विनी बाजार छोर पर टी.बी. क्लिनिक के पास 4.81 करोड़ की लागत से स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत एक मंजिला पार्किंग स्थल विकसित किया गया है, जहाँ पर लगभग 100 से अधिक चार पहिया वाहन एवं काफी संख्या में दो पहिया वाहन पार्क करना संभव है।

गुलाबबाग के पास सार्वजनिक निर्माण विभाग के गेंगहट पर दो–मंजिला पार्किंग स्थल : इस आलीशान दोमंजिला पार्किंग स्थल में 350 से ज्यादा चारपहिया एवं काफी संख्या में दोपहिया वाहन पार्क किये जा सकते हैं। लेकिन इसकी क्षमता के अनुसार यहां पर वाहन पार्क नहीं हो रहे हैं। पर्यटक सीजन में गुलाबबाग की सभी सड़कें वाहन पार्किंग में तब्दील हो जाती हैं जिससे जगह–जगह जाम की स्थिति उत्पन्न होती है। इस पार्किंग स्थल का पूर्ण उपयोग के लिए यातायात पुलिस को अतिरिक्त प्रयास करने चाहिये।

देहलीगेट के पश्चिमी छोर पर निर्मित पार्किंग स्थल : देहली गेट के पश्चिमी छोर पर नवनिर्मित पार्किंग स्थल के भूतल एवं इसकी छत पर वाहन पार्क किये जा रहे हैं। इसकी डिजाइन समझ से परे है। इसकी छत पर पहुंचने के लिए लम्बा रेम्प बना दिया गया है जिससे भूतल पर बहुत कम गाड़ियाँ पार्क हो सकती है। यहाँ पर पूर्ण नियोजन के साथ एक सुव्यवस्थित बहुमंजिला पार्किंग स्थल विकसित किया जा सकता है। स्मार्ट सिटी परियोजना के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए इस स्थल पर पार्किंग की महत्ती आवश्यकता है।

नाड़ाखाड़ा बहुमंजिला पार्किंग स्थल : बापू बाजार एवं नेहरू बाजार के मिलन स्थल के पास नाड़ाखाड़ा में स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत बहुमंजिला पार्किंग स्थल का निर्माण किया गया है। इस पार्किंग स्थल पर अच्छी संख्या में वाहन पार्क हो रहे हैं। इस पार्किंग को चार मंजिला बनाकर इसकी छत के ऊपर भी एक रूफटॉप रेस्टोरेन्ट बनाया जा सकता है। यह आमजन एवं पर्यटकों हेतु उपयोगी सिद्ध होगा।

चाँदपोल बहुमंजिला पार्किंग स्थल : चाँदपोल दरवाजे के उत्तरी छोर पर एक बहुमंजिलें पार्किंग स्थल का निर्माण स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत किया गया है। यहाँ पर भी काफी चारपहिया एवं दोपहिया वाहनों की पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। इस पार्किंग स्थल पर पूर्ण क्षमता के साथ वाहन पार्क किये जा रहे है। इस क्षेत्र के लिए यह पार्किंग काफी उपयोगी साबित हुई है। इस पार्किंग स्थल को भी चार मंजिला बनाने पर विचार किया जाना चाहिये। साथ ही चौथी मंजिल की छत पर एक सुव्यवस्थित उच्च स्तरीय रूफटॉप रेस्टोरेन्ट बनाया जा सकता है। यह रंग सागर के किनारे स्थित होने से पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों के लिए एक नया डेस्टिनेशन बन सकता है।

देवाली-फतहसागर पाल के उत्तरी गेट के सामने विकसित पार्किंग स्थल : देवाली के एसआईईआरटी परिसर में दो वर्ष पूर्व निर्मित 228 चारपहिया वाहनों को पार्क करने की क्षमता वाली बहुमंजिला पार्किंग बनाई गई है। इसका निर्माण करीब तीन करोड़ रुपये में हुआ था। इस नवनिर्मित पार्किंग स्थल को वाहनों की पार्किंग हेतु अभी तक चालू नहीं किया गया है। फतहसागर के उत्तरी क्षेत्र में पाल पर ही पार्किंग की पर्याप्त सुविधा है। इसे बन्द करने पर ही इस पार्किंग स्थल का समुचित उपयोग संभव है। इस पार्किंग स्थल को बहुमंजिला बनाकर जनसुविधा के साथ इसके ऊपरी मंजिल पर एक सुव्यवस्थित एवं उच्च स्तरीय फूड हब विकसित किया जा सकता है जिससे बाहर से आने वाले पर्यटकों के मध्य यह पार्किंग लोकप्रिय हो सकती है।

सूरजपोल चौराहे पर छः मंजिला पजल पार्किंग : स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत सूरजपोल के पूर्व तांगा स्टेण्ड पर 6.01 करोड़ की लागत से छः मंजिला हाइटेक मेकेनाइज्ड पार्किंग बनाई गई है। इस पार्किंग में 86 (5x14=70+1x16=16) चारपहिया वाहनों को पार्क किया जा सकेगा। यह दो भागों में विभक्त होकर दोनों तरफ 43+43 गाड़ियाँ पार्क हो सकेगी।

इसमें गाड़ियों को लिफ्ट द्वारा ऊपर–नीचे पहुँचाने में तीन मिनट का समय लगेगा। इस पार्किंग से बापू बाजार में आने वाले पर्यटकों, खरीददारों, व्यवसायियों आदि को पार्किंग की सुविधा संभव हो सकेगी।

इस प्रकार करोड़ों रुपये खर्च कर शहर की यातायात व्यवस्था सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से बड़ी–बड़ी बहुमंजिला पार्किंग बनवाई गई हैं। इससे उदयपुर के आमजन एवं पर्यटकों को अपने वाहन पार्क करने में काफी सुविधा मिल रही है। इन पार्किंग स्थलों को अपनी क्षमता के अनुसार वाहन पार्क करने की दिशा में स्थानीय प्रशासन के सकारात्मक प्रयास आवश्यक है। साथ ही आमजन को भी इस हेतु जागरूक करने की आवश्यकता है।

पार्किंग स्थल एवं फूड हब का निर्माण : शहर में विभिन्न वार्डों में बने पॉकेट एवं बहुमंजिला पार्किंग स्थल के निर्माण के अतिरिक्त नगर विकास प्रन्यास के बाहर फतहसागर नाले के पास एवं सुखाड़िया सर्कल स्थित जन सुविधा स्थल पार्क पर पूर्ण नियोजन के साथ नवीन पार्किंग स्थलों का निर्माण करवाया जा सकता है।

वर्तमान में निर्मित एक–दो मंजिला पार्किंग स्थलों के स्थान पर 4–5 मंजिला पार्किंग स्थलों का निर्माण करने से उदयपुर में आने वाले पर्यटकों को अपने वाहन पार्क करने में होने वाली असुविधा से राहत मिल सकेगी। इसके अतिरिक्त इन सभी पार्किंग स्थलों की 5वीं मंजिल पर फूड हब बनाये जा सकते हैं, जो अर्द्धरात्रि तक संचालित हो ताकि पर्यटकों को रुचिपूर्ण भोजन उपलब्ध हो सके।

नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास के आर्थिक संसाधन सीमित होने से उपरोक्त सभी पार्किंग स्थल को विकसित एवं संचालित करने हेतु लम्बी अवधि के लिए पीपीपी मोड़ पर दिया जा सकता है। इससे सभी पार्किंग स्थलों का आधुनिक तकनीकी के साथ निर्माण होने के साथ फूड हब भी व्यवस्थित रूप से संचालित होंगे।

परकोटा क्षेत्र "नो व्हीकल (ग्रीन मोबिलिटी) जोन" घोषित हो : स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत शहर के परकोटा क्षेत्र को "नो व्हीकल (ग्रीन मोबिलिटी) जोन" घोषित करने की दिशा में स्थानीय व्यापारियों एवं नागरिकों से सहमति प्राप्त कर उत्तरोत्तर आगे बढ़ा जावे। नगर निगम, उदयपुर द्वारा ग्रीन मोबिलिटी जोन प्रोग्राम के प्रारूप को स्विस डवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन अनुदानित केपेसिटिज प्रोजेक्ट के माध्यम से तैयार करवाया जा रहा है। इसके लिए शहर की सीमा के अन्दर या बाहर सुव्यवस्थित बहुमंजिलें पार्किंग स्थलों का निर्माण अपेक्षित है।

माह अक्टूबर, 2022 में नगर निगम, जिला प्रशासन, पुलिस विभाग एवं ओल्ड सिटी वेलफेयर कमेटी के संयुक्त प्रयासों से परकोटा क्षेत्र के रंग निवास से जगदीश चौक, घंटाघर से जगदीश चौक एवं चांदपोल से जगदीश चौक तक के क्षेत्र में शनिवार–रविवार को सांय 5 से रात्रि 10 बजे तक "नो व्हीकल जोन" व्यवस्था लागू की गई, जिसके अन्तर्गत चारपहिया व तीनपहिया वाहनों की आवाजाही पूर्णतया बन्द रही। साथ ही दोपहिया वाहनों को इस क्षेत्र के बाजारों में व्यवस्थित रूप से खड़े करने की हिदायत के साथ स्वीकृति दी गई।

इस दौरान क्षेत्र में आम नागरिकों के साथ–साथ पर्यटकों के आवागमन के लिए ई–रिक्शा उपलब्ध रहे। आम नागरिकों एवं पर्यटकों से इस कार्य में सहयोग मिला एवं उनसे प्रशासन द्वारा आग्रह किया गया कि वे ई–रिक्शा का अधिकतम् उपयोग कर इस क्षेत्र को पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनाने तथा इसे प्रदूषण मुक्त कराने में सहयोग करें। इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में स्थित हेण्डीक्राफ्ट शोरूम, रेस्टारेन्ट, होटलों, दुकानों आदि के बाहर पर्याप्त जगह मिलने से पर्यटकों द्वारा प्रसन्नचित्त मुद्रा में भ्रमण करने के साथ खुलकर खरीददारी की गई तथा व्यापारियों में भी खुशी की लहर देखी गई।

"नो व्हीकल जोन" के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव :

- पूरे परकोटा क्षेत्र एवं इससे लगे 500 मीटर क्षेत्र के दायरे को तीन–चार भागों में बाँटकर ट्रैफिक सर्वे करवाया जावे ताकि ट्रैफिक की वर्तमान स्थिति एवं पब्लिक ट्रांसपोर्ट की पूर्ण जानकारी के साथ ई–रिक्शा व अन्य ट्रांसपोर्ट साधनों की आवश्यकताओं को मालूम किया जा सके।
- ई–रिक्शा की संख्या पर्यटकों एवं शहरवासियों की आवश्यकता के अनुसार रखी जावे। इलेक्ट्रिक वाहन के अतिरिक्त सीएनजी संचालित ऑटो को भी स्वीकृति दी जावे।
- ऑटो चालक को ईवी वाहन खरीदने के लिए न्यूनतम् ब्याज दर पर नगर निगम से आर्थिक सहयोग मिले ताकि ऑटो चालकों का विरोध कम हो सकेगा।
- लावारिस एवं पालतू पशुओं, कुत्तों आदि से नो व्हीकल क्षेत्र पूर्णतया मुक्त हो।
- इस कार्य में पुलिस विभाग, जिला प्रशासन एवं नगर निगम शहरवासियों की आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखते हुए निर्णय करने के साथ शहरवासियों से पूर्ण सहयोग लेने का पूरा प्रयास किया जावे।
- परकोटा क्षेत्र के चारों ओर वाहन पार्किंग की व्यवस्था पर अधिक सतर्कता से ध्यान दिया जावे। बहुमंजिला पार्किंग के साथ जहाँ पर भी स्थान उपलब्ध हो, उसे पॉकेट पार्किंग के लिए आरक्षित कर दिया जावे।

स्वचालित/ मेन्यूअल बहुमंजिलें पार्किंग स्थल : इस प्रकार के पार्किंग स्थलों में वाहनों को लिफ्ट की सहायता से या मेन्यूअल चलाकर भू–स्तर के नीचे और भू–स्तर से ऊपर बने स्थलों पर वाहनों की सुरक्षित पार्किंग की जा सकती है। इस प्रकार की व्यवस्था के अन्तर्गत जितने क्षेत्र पर एक कार खड़ी होती है, उसी क्षेत्र पर भूतल के नीचे और भूतल के ऊपर बने स्थल पर आठ–दस कारें खड़ी की जा सकती हैं। वाहनों के खचाखच भरे स्थानों, जहां सीमित क्षेत्र उपलब्ध हो तो वहां पर वाहन पार्किंग के लिए स्थान आरक्षित करना अति कठिन होता है, उस स्थान पर यह पार्किंग व्यवस्था बहुत उपयोगी साबित होगी, हालांकि यह व्यवस्था खर्चीली है।

बहुमंजिली पार्किंग व्यवस्था के लाभ :

- सड़कें पार्किंग से अवरुद्ध नहीं होगी।
- पार्किंग के पश्चात् ईंजन बन्द रहने से वायु प्रदूषण में कमी आयेगी।
- वाहन मालिक को कार सुरक्षा की चिन्ता नहीं रहेगी।
- पार्किंग शुल्क लगने से टिकाऊ स्वपोषित व्यवस्था होगी।
- शहर में रहने वाले वाहन मालिक भी इसमें रात्रिकालीन व्यवस्था से लाभ उठा सकते हैं और इससे पार्किंग व्यवस्था को आर्थिक लाभ भी होगा। अव्यवस्थित और असुरक्षित पार्किंग का भी समाधान होगा। निश्चिन्तता बढ़ेगी। कार चोरियों पर कुछ हद तक लगाम लग सकेगी।

बहुमंजिला कंकरीट कार पार्किंग : यह कार एवं मोटरसाइकिल पार्किंग के लिए डिजाइन की गई एक इमारत होती है, जिसमें कई मंजिलें या स्तर होते हैं। इसमें वाहनों को व्यवस्थित रूप से पार्क किया जाता है। यह अनिवार्य रूप से एक इन्डोर खड़ी कार पार्किंग होती है। इस प्रकार की

बहुमंजिला कंकरीट कार पार्किंग

पार्किंग संरचनाओं के निर्माण पर काफी लागत आती है। वर्तमान में नए बहुमंजिला भवनों में पार्किंग आवश्यकताओं को अनिवार्य रूप से लागू किया जा रहा है। शहरों में इस प्रकार की पार्किंग को ''ऑफ स्ट्रीट पार्किंग'' का उपयोग करके इन्टरनेट के माध्यम से शहर कोड के द्वारा खोजा जा सकता है।

भूतल चारपहिया वाहन पार्किंग

भूतल दुपहिया वाहन पार्किंग

सेलिब्रेशन मॉल, उदयपुर

दो/चारपहिया वाहन पार्किंग

इसके अन्तर्गत कई मंजिलों के बीच वाहनों की आवाजाही आन्तरिक उतारयुक्त रैम्प, आन्तरिक घुमावदार एक्सप्रेस रैम्प, बाहरी घुमावदार रैम्प एवं वाहन लिफ्टिंग के माध्यम से हो सकती है। कई पार्किंग संरचनाएँ स्वतंत्र भवन के रूप में हैं जो विशेष रूप से पार्किंग उपयोग के लिए समर्पित है। वर्तमान में आवासीय और व्यावसायिक बहुमंजिलें भवनों के लिए बनाई गई पार्किंग संरचनाएं एक बड़ी इमारत के हिस्से के रूप में बनाई जाती हैं जो अक्सर तहखाने के हिस्से के रूप में भूमिगत होती हैं, जैसे–उदयपुर के सेलिब्रेशन मॉल, आइनोक्स लेकसिटी मॉल। इस प्रकार की पार्किंग से अन्य उपयोग के लिए भूमि की बचत एवं एक अलग संरचना की तुलना में ज्यादातर मामलों में सस्ता और अधिक व्यावहारिक है। यह ग्राहकों और उनकी कारों को बारिश एवं तेज गर्मी जैसे मौसम से बचाता है। इस तरह की पार्किंग में दो स्तरों की भूमिगत पार्किंग को एक आदर्श अवधारणा माना गया है। इन पार्किंग संरचनाओं में अक्सर कम सीलिंग क्लीयरेन्स होते हैं, जहाँ पूर्ण आकार के बड़े वाहनों की पार्किंग नहीं की जा सकती हैं। आजकल बहुमंजिला कार पार्किंग अधिक प्रचलित हो गई है। ऐसी संरचनाओं के निर्माण एवं निर्माण समय को कम करने के लिए प्री–कास्ट कंकरीट का भी उपयोग किया जा रहा है।

आईनोक्स लेकसिटी मॉल, उदयपुर

इस व्यवस्था के अन्तर्गत वाहन चालक अपनी कार निर्धारित प्लेटफार्म पर खड़ा कर स्वयं या संचालक कर्मचारी द्वारा आन्तरिक ढलानयुक्त रेम्प या लिफ्ट प्रणाली के माध्यम से उपयुक्त स्थल पर रखकर टोकन प्राप्त करता है। कार चालक अपने काम निपटाकर टोकन से कार की सुपुर्दगी प्लेटफार्म या स्वयं निर्धारित स्थल से प्राप्त कर लेता है। कार के आकार, समय और स्थल के अनुसार नियोजित राशि का भुगतान किया जाता है। यह पद्धति सुविधाजनक होने के साथ बहुउपयोगी और स्वपोषित है।

कार पार्किंग व्यवस्था : कार पार्किंग सिस्टम एक यांत्रिक उपकरण है जो एक पार्किंग स्थल के अन्दर पार्किंग क्षमता को कई गुणा बढ़ा देता है। यह पार्किंग सिस्टम आमतौर पर इलेक्ट्रिक मोटर या हाइड्रोलिक पम्प द्वारा संचालित होते हैं जो वाहनों को भण्डारण की स्थिति में ले जाते हैं। स्वचालित बहुमंजिला कार पार्किंग सिस्टम में प्रति पार्किंग स्लॉट कम खर्चीले होते हैं क्योंकि उन्हें समान क्षमता वाली परम्पारिक सुविधा की तुलना में कम भवन और भूमि की आवश्यकता होती है। लम्बी अवधि में स्वचालित कार पार्किंग सिस्टम पारम्परिक पार्किंग गैराज की तुलना में अधिक लागत प्रभावी होती है।

इस व्यवस्था में चालक कार को एक प्रवेश क्षेत्र के अन्दर छोड़ देता है और प्रौद्योगिकी वाहन को एक निर्दिष्ट क्षेत्र में पार्क करती है। वाहन को खड़ी (ऊपर या नीचे) और क्षितिज रूप से (बाएं और दाएं) खाली पार्किंग स्थल पर ले जाया जा सकता है जब तक कि कार की फिर से आवश्यकता न हो। जब वाहन की आवश्यकता होती है तो प्रक्रिया उलट जाती है और लिफ्ट वाहन को उसी क्षेत्र में ले जाती है, जहां चालक ने उसे छोड़ा था। कुछ मामलों में कार को पोजिशन करने के लिए टर्नटेबल का उपयोग किया जा सकता है ताकि चालक बिना बैकअप के आसानी से ड्राइव कर सके। इन वर्षों में कार पार्किंग और इसके साथ आने वाली तकनीकों में वृद्धि और विविधता आई है। स्वचालित कार पार्किंग सिस्टम में समय, धन व स्थान की बचत होती है।

स्वचालित कार पार्किंग के पाँच प्रमुख प्रकार प्रचलित हैं – पजल कार पार्किंग, रोटरी कार पार्किंग, टर्न टेबल कार पार्किंग, पिट लिफ्टिंग कार पार्किंग एवं उर्ध्व क्षितिज कम्प्यूटराइज्ड कार पार्किंग।

पजल कार पार्किंग : यह एक यांत्रिक संरचना है जो कई प्लेटफॉर्म के आसपास फेरबदल कर वाहनों के लिए अलग–अलग पार्किंग स्थल के रूप में कार्य करती है। यह जमीन के ऊपर या नीचे की जगह में पार्किंग स्थलों को जोड़ना संभव बनाती है। ये सिस्टम बच्चों की स्लाइडिंग पजल्स से मिलते–जुलते हैं। इस तरह पजल पार्किंग सिस्टम प्लेटफार्म को ऊपर, नीचे, साइड–टू–साइड ले जा सकता है। सीमित पार्किंग स्थान की दुविधा से निपटने के लिए पजल पार्किंग सिस्टम एक अभूतपूर्व समाधान है। इस प्रकार की सुविधा से कारों की पार्किंग क्षमता को दो से पांच गुणा तक बढ़ाया जा सकता हैं।

पजल कार पार्किंग

रोटरी कार पार्किंग : रोटरी कार पार्किंग एक विशाल पहिया तंत्र के समान है, जहां वाहन को पिंजरे में रखा जाता है। इस प्रणाली में पहिया क्लॉक एवं एन्टी क्लॉक घूम सकता है तथा केवल दो पार्किंग स्थलों के स्थान पर 6, 8, 10 या 12 वाहनों को पार्क करने में सक्षम होता है। प्रमुख शहरों में जगह की उपलब्धता की कमी हमेशा से एक समस्या रही है, ऐसे स्थानों पर कॉम्पेक्ट रोटरी कार पार्किंग एक उपयुक्त प्रणाली है। इस प्रणाली में मात्र 32.17 वर्ग मीटर के पार्किंग क्षेत्र में 6 से 24 कारों की पार्किंग की जा सकती है। इस प्रणाली के संचालन में मात्र एक परिचालक की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली के मिश्रित भागों का उपयोग कर इसे संघटित एवं विघटित करना आसान है। इस प्रकार की कार पार्किंग पारम्परिक कार पार्किंग की तुलना में अधिक सुविधाजनक है।

रोटरी कार पार्किंग

टर्न टेबल पार्किंग : टर्न टेबल पार्किंग कारों के लिए बनाए गए ड्राइव–वे या गैराज के फर्श पर स्थापित एक घूमने वाला प्लेटफार्म है। इसे मोटरचलित या मेन्यूअल रूप से घुमाया जा सकता है और ड्राइव–वे से आसान और सुरक्षित निकास की सुविधा के लिए डिजाइन किया गया है। मूल रूप से टर्न टेबल गैराज स्वतंत्रता सुनिश्चित करने, सुगम यातायात प्रवाह उत्पन्न करने और सरल पार्किंग को सक्षम बनाने के लिए एक किफायती और सुविधाजनक समाधान है। भारी शुल्क वाले वैन, ट्रक और बसों के लिए भी यह सिस्टम उपयोग में लिया जाता है। कई कारों के लिए जगह बनाने के अलावा टर्न टेबल गैराज में पार्क करना आसान बनाता है।

यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत एक कार पार्क करते हैं, टर्न टेबल घुमाते है और अगले वाहन को पार्क करते हैं। कार की पुनः आवश्यकता होने पर बस टर्न टेबल घुमाते है और दूसरी कारों को बिना मोड़े और हिट किए बाहर निकाला जा सकता है।

टर्न टेबल कार पार्किंग

पिट लिफ्टिंग कार पार्किंग : इस कार पार्किंग सिस्टम अन्तर्गत एक के ऊपर एक यात्री कारों के लिए पार्किंग स्थान उपलब्ध होता है। वर्तमान में इसके तहत त्रि–स्तरीय पार्किंग के डिजाइन अधिक बने है जिसमें एक क्षितिज (भू–स्तर), एक भू–स्तर के नीचे और एक भू–स्तर के ऊपर होता है। ये सभी एक साथ जुड़े हुए होते हैं और एक साथ उठाये एवं नीचे उतारे जाते हैं तथा भू–स्तर और भू–स्तर के नीचे एवं भूमिगत स्थिति में होते हैं। इन सब स्तरों के मध्य तालमैल और गाड़ियों के मध्य दूरी बनाये रखने के लिए लिफ्ट की व्यवस्था होती है।

पिट लिफ्टिंग कार पार्किंग

स्वचालित कम्प्यूटराज्ड कार पार्किंग : स्वचालित कार पार्किंग सिस्टम एक यांत्रिक प्रणाली है जिसे कारों की पार्किंग के लिए आवश्यक क्षेत्र को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह एक बहुमंजिला पार्किंग गैराज की तरह एक स्वचालित पार्किंग सिस्टम है। इसके अन्तर्गत भूमि के उपयोग को कम करते हुए रिक्त के स्थल की संख्या को अधिकतम् करने के लिए कई स्तरों पर कारों के लिए उर्ध्व पार्किंग की जाती है। इस व्यवस्था के तहत कारों को पार्किंग स्थल से परिवहन के लिए ड्राईवर के बजाय एक कम्प्यूटराइज्ड यांत्रिक प्रणाली का उपयोग होता है। स्वचालित पार्किंग प्रणाली की अवधारणा दो कारकों से प्रेरित है – पार्किंग स्थलों की आवश्यकता एवं उपलब्ध भूमि की कमी।

इस पार्किंग सिस्टम की मुख्य विशेषताएँ निम्नानुसार हैं :–

- पार्किंग स्पेस की चौड़ाई और गहराई वास्तविक रूप से कम हो जाती है क्योंकि कार को पार्किंग स्पेस में चलाने या कार के दरवाजे खोलने के लिए ड्राइवरों की आवश्यकता नहीं होती है।
- कार को प्रवेश एवं निकास स्थान से पार्किंग स्थान तक ले जाने के लिए किसी ड्राइविंग लेन या रैम्प की आवश्यकता नहीं होती है।
- इसमें छत की ऊँचाई कम से कम होती क्योंकि पार्किंग क्षेत्र में कोई पैदल यात्री (चालक और यात्री) नहीं होते हैं।
- पार्किंग क्षेत्र में पैदल चलने वालों को समायोजित करने के लिए किसी पैदल मार्ग, सीढ़ी या लिफ्ट की आवश्यकता नहीं है।
- इस पार्किंग सिस्टम में कारों को ऊपरी स्तरों तक ले जाने के लिए एक आन्तरिक कार लिफ्ट के साथ ग्राउण्ड पर कंकरीट संरचना से निर्मित होती है, जहां परिचालकों द्वारा कारों को पार्क किया जाता हैं।

हाथीपोल, घंटाघर एवं जगदीश चौक – पर्यटक पार्किंग : उदयपुर शहर के हाथीपोल, जगदीश चौक, बापू बाजार देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के मुख्य केन्द्र हैं। यहाँ पर उनकी आवश्यकता की अधिकतम् वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। इन स्थानों पर वाहन (चारपहिया) पार्किंग के लिए उपयुक्त स्थान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। हाथीपोल पर हेण्डीक्राफ्ट मार्केट पर व्यवस्थित पार्किंग से इस क्षेत्र के समस्त दुकानदार संतुष्ट है एवं यह पर्यटकों के लिए भी सुविधाजनक है। इसके विपरीत बापू बाजार में आंशिक व्यवस्था – महेश किराणा स्टोर एवं बैंक तिराहा पर की गई है परन्तु चयनित स्थानों पर समय व शुल्क के पट्ट नहीं लगाये गये हैं। इससे नागरिकों एवं पर्यटकों को असुविधा रहती है। इन पर्यटक स्थलों पर पार्किंग सीमित अवधि के लिए ही होनी चाहिये। तीन घण्टे से अधिक की सुविधा भारी शुल्क के साथ ही संभव होनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त बापू बाजार में जोधपुर मिष्ठान भण्डार एवं महिला समृद्धि बैंक के मध्य, बापू बाजार, नाड़ाखाड़ा एवं नेहरू बाजार चौराहे की लिंक रोड़ पर उपलब्ध स्थान पर चारपहिया वाहन पार्किंग की व्यवस्था की जानी चाहिये। इसके साथ नाड़ाखाड़ा स्थित नगर निगम के पार्किंग स्थल पर बहुमंजिला पार्किंग व्यवस्था को विकसित किया जाना चाहिये।

जगदीश चौक से पैलेस गेट तक कोई समुचित पार्किंग व्यवस्था नहीं है। इस क्षेत्र में रोड़ भी चौड़ी है एवं पार्किंग व्यवस्था हाथीपोल–हेण्डीक्राफ्ट मार्केट की भांति विकसित की जा सकती है। यहां पर्यटकों की भारी आवाजाही रहती है।

बापू बाजार में पार्किंग : बापू बाजार को नगर निगम द्वारा पर्यटकों की दृष्टि से अधिक व्यवस्थित रूप से विकसित किया जाना चाहिये। यह बाजार मुख्य दुकानों के बाहर स्थित चारपहिया वाहन, थैले आदि से मुक्त होना चाहिये। दोनों तरफ की नालियाँ पूर्णतः ढ़की हुई होने के साथ उस पर ढाई फीट चौड़ी एक निश्चित ऊँचाई की ग्रेनाईट युक्त बहुत ही सुन्दर फुटपाथ बनायी जानी चाहिये। प्रत्येक दुकानदार अपनी दुकान का भूतल इसी अनुसार रखे। यदि किसी को अपनी दुकान ऊँचाई पर रखनी हो तो सीढ़ियाँ अपनी भूमि पर बनाये। कोई भी दुकानदार किसी प्रकार का कोई निर्माण या अतिक्रमण नहीं करें, इस हेतु कानूनी रूप से बाध्य हो। इस फुटपाथ पर स्थानीय नागरिक, देशी/विदेशी पर्यटक सुविधाजनक रूप से चल सकेंगे। बापू बाजार को दुनिया के सुन्दरतम् बाजारों में स्थान मिले जैसे देश में सिक्किम के गंगटोक शहर का मुख्य बाजार, यूरोप का मिलान बाजार आदि।

इस कार्य हेतु इस बाजार के सभी दुकानदारों को सकारात्मक रूख अपनाना होगा एवं अपने व्यक्तिगत स्वार्थ त्यागने होंगे, तभी इसकी परिणति संभव होगी। इससे बापू बाजार की सुन्दरता की छवि हर वर्ष उदयपुर भ्रमण पर आने वाले लगभग 10 लाख पर्यटकों में से प्रत्येक पर्यटक की आँखों में सदैव बनी रहेगी। इसके परिणाम स्वरूप पर्यटकों का आकर्षण बढ़ेगा एवं इस शहर की याद में पर्यटक अपनी पसन्द की वस्तुएं जैसे कपड़े, ज्वैलरी, घड़ी, शूज, रेडीमेड गारमेन्ट्स, खिलौने, होलसेल मूल्य पर उपलब्ध टीवी व अन्य इलेक्ट्रोनिक्टस सामग्री, हैण्डीक्राफ्ट वस्तुएँ, आर्टिफिशियल ज्वैलरी, खाद्य सामग्री आदि यही से खरीदना चाहेगा। समय के साथ यह बाजार लोकप्रिय बनेगा। आधुनिक विद्युत व्यवस्था, गमलों में सुन्दर पेड़, फूल एवं उपयुक्त स्थानों पर म्यूजिक युक्त फव्वारें लगे हो। सफाई व्यवस्था नियमित एवं उच्च स्तर की हो। बाजार से वर्षाजल एवं घरों के प्रदूषित जल के निकास हेतु उत्तम व्यवस्था करना आवश्यक होगा। इन प्रयासों के फलस्वरूप इस बाजार को बहुत अधिक सुन्दर रूप दिया जा सकता है।

फतहसागर एवं पार्किंग व्यवस्था : फतहसागर उदयपुर की एक ऐसी सुन्दरतम् झील है, जिसके चारों ओर सड़क है, पूर्ण क्षेत्र प्रकाशमय है, प्रत्येक पर्यटक इसे देखे बिना उदयपुर नही छोड़ता है। इस विशेष पर्यटक स्थल में वाहन पार्किंग एवं खाद्य सामग्री उपलब्धता की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। इस ओर निम्नांकित बिन्दुओं पर झील के विकास के साथ ध्यान दिया जाना चाहिये :–

(1) फतेहसागर प्रवेश अर्थात् काला किवाड़ के पास दी ललित लक्ष्मी विलास होटल के नीचे भूमि पर उच्च स्तरीय मल्टी स्टोरी पार्किंग के साथ व्यवस्थित फूड हब, सुलभ सुविधा युक्त परिसर विकसित किया जाना चाहिये।

(2) इसी क्रम में राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर का एक छात्रावास फतहसागर के देवाली छोर पर स्थित है। इसे सहेलियों की बाड़ी स्थित मुख्य प्रशिक्षण भवन में स्थान्तरित कर इस स्थान पर भी अति आधुनिक वाहन पार्किंग, फूड हब, सुलभ व्यवस्था विकसित की जानी चाहिये। यहां से ट्रोली द्वारा नीमच माता मन्दिर पहुंचने के लिए व्यवस्था प्रस्तावित है।

(3) फतहसागर के काला किवाड़ से देवाली छोर तक मुम्बईयां बाजार को अपवाद स्वरूप छोड़कर कोई पार्किंग एवं फूड हब नहीं होना चाहिये।

(4) मुम्बईया बाजार फूड हब को मोती मगरी के भामाशाह बगीचे में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिये। इस खाद्य हब को और अधिक व्यवस्थित, प्रदूषण रहित, प्रदूषित जल को पुनः शोधन यन्त्र, सुलभ सुविधायुक्त बनाया जाना चाहिये। जिससे पर्यटक इस सुन्दर झील का पैदल भ्रमण कर अपनी संपूर्ण भोजन आवश्यकताओं की प्राप्ति कर सकें।

(5) वर्तमान में बम्बईया बाजार से झील में गन्दगी फैलती है। यह उस क्षेत्र के जल एवं वायु के नमूने से सिद्ध हो सकता है। इस बाजार के स्थानान्तरण से वर्तमान व्यवसायियों को किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होगा।

(6) यह झील वर्षों तक अपनी प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों की वृद्धि के साथ बनाये रख सकेगी।

(7) काला किवाड़ से देवाली छोर तक पर्यटक एवं आम नागरिक पैदल, साइकिल या प्रदूषण रहित बेट्रीचालित वाहनों से ही पहुंच सके।

इस व्यवस्था से यह संपूर्ण क्षेत्र गन्दगी मुक्त, प्रदूषण रहित, पर्यटक हितैषी एवं जन साधारण हेतु अत्यन्त सुविधाजनक बनाया जा सकेगा।

हिरण मगरी, सेक्टर-3, 4 व 5 में बाजार एवं पार्किंग व्यवस्था : उदयपुर में हिरण मगरी सेक्टर–3, 4 एवं 5 को बहुत ही व्यवस्थित रूप से बसाया गया था। इस क्षेत्र में 200 फीट की पर्याप्त चौड़ी मुख्य सड़क के साथ करीब दो कि.मी. लम्बा बाजार विकसित हो रहा है। इस चौड़ी सड़क के मध्य भाग पर स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत सुन्दर एवं भव्य बगीचे विकसित किये गये हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा इसके नियमित रखरखाव पर विशेष ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है, तभी इनकी सुन्दरता एवं भव्यता बनी रहेगी। इन बगीचों के दोनों ओर पर्याप्त चौड़ाई की सड़क का निर्माण किया गया है तथा पानी की निकासी पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

इस सड़क के दोनों किनारों एवं स्थापित दुकानों के मध्य एक सर्विस सड़क एवं दोनों ओर फुटपाथ के साथ पार्किंग व्यवस्था की गई है। इसके मध्य स्थित फुटपाथ पर विद्युत, दूर–संचार से संबंधित उपकरण भी लगाये गये हैं। एक निश्चित दूरी पर दो एवं चार पहिया वाहनों के लिए पार्किंग व्यवस्था, छोटे लोन एवं वृक्षारोपण भी किया गया है। पार्किंग के लिए आरक्षित स्थान पर व्यवस्थित पॉकेट पार्किंग विकसित कर निजी फर्म को संचालन के लिए दी जा सकती है। इससे भविष्य में इस क्षेत्र पर अतिक्रमण की आशंका नहीं रहेगी। साथ ही इससे नगर निगम को आय के साथ स्थानीय लोगों हेतु रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे।

इस संपूर्ण बाजार को व्यवस्थित रखने एवं इसे भव्यता प्रदान करने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है :–

- इस पूरे बाजार में दो/चारपहिया वाहनों की समुचित पार्किंग की व्यवस्था की जानी चाहिये।
- अतिक्रमण से बाजारों की सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा कही चौड़ा तो कहीं संकड़ा बाजार बन जायेगा।
- पार्किंग को पूर्ण रूप से रेखांकित कर सुन्दर पौधारोपण के साथ विकसित किया जावे।
- स्थानीय प्रशासन द्वारा दुकानदारों को अतिक्रमण के प्रति जागरूक कर बाजारों को अतिक्रमण से पूर्णतया मुक्त किया जाना चाहिये।
- नियोजित रूप से व्यवस्थित पार्किंग स्थल चिह्नित कर निर्धारित दूरी पर सुन्दर पौधों का रोपण किया जावे जिससे सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ प्रदूषण की समस्या का समाधान भी संभव होगा।
- इस संपूर्ण बाजार में आधुनिक प्रकाश व्यवस्था की जानी चाहिये।

फतहसागर पर चारपहिया वाहनों के प्रवेश पर नियंत्रण : फतहसागर पर आकर पर्यटक शांत आबोहवा में साँस लेना चाहते हैं। ऐसे में भीड़भाड़ को कम करने के लिए चारपहिया वाहनों का पिछोला–फतहसागर लिंक नहर एवं देवाली छोर से प्रवेश बंद कर दिया जाना चाहिये, कम से कम सायं 4 से रात्रि 10 बजे तक। सभी चारपहिया वाहनों को देवाली (एसआईईआरटी) क्षेत्र में नवनिर्मित पार्किंग स्थल, नगर विकास प्रन्यास के सामने बहुमंजिला पार्किंग स्थल का निर्माण कर तथा नगर विकास प्रन्यास से नीलकंठ महादेव तक की सड़क के मध्य हाथीपोल पार्किंग की तर्ज पर पार्किंग स्थल विकसित कर इस क्षेत्र के वाहनों को यहीं पर पार्क कर दिया जावे तथा यहाँ से पर्यटक ई–रिक्शे के माध्यम से फतहसागर पहुंचकर फतहसागर पाल, एक्वेरियम, मुम्बईया बाजार, मोती मगरी आदि के भ्रमण का आनन्द ले सकेंगे तथा यह क्षेत्र वाहनों के अवांछित ट्रेफिक से मुक्त हो पायेगा।

वाटर स्पोर्ट्स एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म : झीलों की नगरी में अनेक छोटी–बड़ी झीलें हैं जिनका समुचित विकास कर देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं और वे सामान्यतया 3–4 दिन से अधिक नहीं रुकते हैं। इनके अधिक दिनों तक ठहराव के लिए वाटर स्पोर्ट्स, इको एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म गतिविधियों का व्यवस्थित विकास एवं संचालन अति आवश्यक है। इससे पर्यटक यहां केवल झीलों के सुन्दर नजारों को ही नहीं देखेंगे बल्कि वाटर स्पोर्ट्स एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म से भरपूर आनन्द भी उठा पायेंगे।

वाटर स्पोर्ट्स : ये पानी पर खेलने या अभ्यास किये जाने वाले खेल हैं। ये संपूर्ण शारीरिक व्यायाम हैं, जो पेट, बाहों और पैरों की माँसपेशियों को मजबूत करने के साथ शरीर में शक्ति बढ़ाने के लिए पानी की प्रतिरोधक क्षमता का उपयोग करते हैं। पानी के खेल देखने में मजेदार होते हैं। इनमें भाग लेना रोमांचक होता हैं, लेकिन इन सबसे ऊपर पानी की सतह या अन्दर का आनन्द लेने के लिए यह सबसे अच्छा विकल्प है। इनका आनन्द सदियों से लिया जा रहा है तथा जब से मानवीय सभ्यता का विकास हुआ है, तब से हम पानी पर हावी होने की कोशिश कर रहे हैं। हम सतह पर स्कीइंग करने के लिए कई तरह के शिल्प बनाते हैं। पानी ने हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है।

इसी सन्दर्भ में उदयपुर और इसके आसपास अनेक छोटी–बड़ी झीलें हैं जो अपनी धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक जिम्मेदारी बखूबी निभा रही हैं। वर्तमान में अतिरिक्त जल संसाधन से ये झीले पानी से लबालब रहती हैं, जो वाटर स्पोर्ट्स के लिए सर्वोत्तम हैं। इससे इन झीलों के प्रति देशी–विदेशी सैलानियों का आकर्षण भी बढ़ेगा एवं उनका उदयपुर प्रवास का समय भी बढ़ेगा।

वाटर स्पोर्ट्स अनेक प्रकार के होते हैं, जिन्हें बड़े रूप में तीन भागों – (1) पानी में (2) पानी की सतह पर एवं (3) पानी के भीतर, में वर्गीकृत किया जा सकता है। हमारी झीलों की परिस्थितियाँ देखते हुए कुछ वाटर स्पोर्ट्स का संचालन यहाँ सुगमता से किया जा सकता हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण चित्रों सहित इस प्रकार से हैं :–

(1) **पानी में वाटर स्पोर्ट्स** :

वाटर बॉलीवाल : वाटर बॉलीवाल स्विमिंग पूल या खुली जलीय सतह में खेला जाता है। इसका कोर्ट आकार में 3×2 मीटर से 6×5 मीटर तक होता है। एक जाल जो कोर्ट की चौड़ाई पर बाँधा जाता है जो उसे दो बराबर हिस्सों में विभाजित करता है। खेलने के लिए विभिन्न प्रकार की गेंदों का उपयोग किया जताा है लेकिन सबसे उपयुक्त प्रचलन में वह गेंद है जिसका व्यास कम से कम 28 से.मी. हो। खेल मनोरंजन एवं प्रतिस्पर्धी दोनों स्तरों पर खेला जाता है। मनोरंजन खेल के लिए एक टीम में 1 से 4 खिलाड़ी हो सकते हैं लेकिन प्रतियोगिता में प्रत्येक टीम में चार खिलाड़ी होने चाहिये। बॉलीवाल के समान प्रत्येक खेल एक सर्विस के साथ शुरू होता है, उसके बाद आगे और पीछे वापसी होती है जब तक कि एक टीम अंक प्राप्त नहीं कर लेती। हालांकि खेल खेलने और स्कोरिंग प्रणाली टेबल–टेनिस के समान ही है। यहाँ प्रत्येक टीम को बारी–बारी से दो बार सर्विस करने के लिए मौका मिलता है, भले ही कोई भी टीम अंक प्राप्त करे और पहले 11 अंक तक पहुंचने वाली टीम मैच की विजेता होती है।

वाटर पोलो : यह एक प्रतिस्पर्धी टीम खेल है जो पानी में 7 खिलाड़ियों की दो टीमों के मध्य खेला जाता है। प्रत्येक टीम में छः फिल्ड खिलाड़ी और एक गोल कीपर होता है। गोल कीपर को छोड़कर अन्य सभी खिलाड़ी आक्रामक और रक्षात्मक दोनों भूमिकाओं में भाग लेते हैं। वाटर पोलो आमतौर पर एक गहरे पूल में खेला जाता है ताकि खिलाड़ी नीचे की जल सतह को न छू सकें। खेल में चार क्वार्टर होते हैं जिसमें दो टीमें गेंद को विरोधी टीम के गोल में फेंक कर गोल करने का प्रयास करती हैं। पूल के चारों ओर गेंद को पास करने और गोल पर शूटिंग करने हेतु तैरते हुए खिलाड़ी होते हैं। वाटर पोलो के खेल में टीम वर्क, सामायिक सोच और जागरूकता भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है। वाटर पोलो एक अत्यधिक शारीरिक क्षमता और ऊर्जा वाला खेल है और इसे अक्सर खेलने के लिए सबसे कठिन खेलों में से एक के रूप में उद्धृत किया जाता है। वाटर पोलो के लिए विशेष उपकरणों में वाटर पोलो बॉल, अलग–अलग रंग की गेंदे जो पानी पर तैरते हुए पूल को विभाजित करती हैं। इसके अतिरिक्त रंगीन टोपियाँ और दो गोल जो या तो पानी में तैरते हैं या पूल के किनारों से जुड़े होते हैं। यह खेल उदयपुर की झीलों की कई छोटी तलाइयों में खेला जा सकता है।

वाटर बास्केट बॉल : यह एक वाटर स्पोर्ट है जिसमें छः खिलाड़ियों की दो टीमें (अधिकतम् चार अतिरिक्त विकल्प के साथ) शामिल होती हैं। इस खेल में टीम गेंद पर कब्जा प्राप्त करने के बाद एक निश्चित समय के भीतर गेंद को फ्लोटिंग या स्थिर बास्केट में डाला जाता है। फ्लोटिंग बास्केट पानी में डूबा हुआ, लम्बा स्तम्भ, पानी के स्तर पर एक मीटर ऊँचाई पर टोकरी के साथ होता है जिसमें विशेष गेंद को फेंकना बहुत कठिन होता है। यह खेल बहुत गतिशील है क्योंकि वर्तमान नियमों में यह फ्लोटिंग बास्केट के पीछे भी खेला जा सकता है।

वाटर एरोबिक्स : यह पानी में एरोबिक्स व्यायाम का प्रदर्शन है। यह आमतौर पर स्विमिंग पूल अथवा निश्चित गहराई की वाटर बॉडी पर कमर तक गहरे पानी में बिना तैराकी के किया जाता है। यह एक प्रकार का एरोबिक्स है जो धैर्य, प्रतिरोध प्रशिक्षण और संगीत के साथ एक सुखद माहौल बनाने पर ध्यान केन्द्रित करता है। पानी में व्यायाम करना न केवल एरोबिक्स है बल्कि पानी के प्रतिरोध के कारण शक्ति प्रशिक्षण भी है। अपने शरीर को पानी के माध्यम से ले जाने से एक प्रतिरोध पैदा होता है जो मांसपेशी समूहों को सक्रिय करता है। इसके अतिरिक्त इस व्यायाम से हृदय अधिक रक्त पम्प करता है। हाइड्रो एरोबिक्स व्यायाम का एक रूप है जिसमें प्रतिभागी पानी में डूब कर व्यायाम करते हैं। यह एरोबिक्स गठिया, मोटापे और अन्य स्थितियों वाले लोगों के लिए आसान

गतिशीलता की अनुमति देता है। इसमें कुशल तैराक होने की भी आवश्यकता नहीं है। वाटर एरोबिक्स एक्वा जुम्बा, वाटर योगा, एक्वा एरोबिक्स और एक्वा जॉग के रूप में भी जाना जाता है। एक्वा साइकलिंग और वाटर पोलो डांसिंग जैसे नए जलीय एरोबिक्स के प्रारूप भी विकसित हो रहे हैं।

डाइविंग (गोताखोरी) : पानी में ऊँचाई पर स्थित किसी मंच से कुशलता के साथ सीधे या कलाबाजी से गोता लगाने को डाइविंग या गोताखोरी खेल के नाम से जाना जाता है। यह अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक मान्यता प्राप्त खेल है जो ओलम्पिक खेलों का हिस्सा है। इसके अतिरिक्त गैर–प्रतिस्पर्धा डाइविंग एक मनोरंजन का साधन भी है। इस खेल में प्रतिभागियों के पास कई विशेषताएँ जैसे–ताकत, लचीलापन, त्वरित निर्णय और वायु जागरूकता शामिल है। कुछ पेशेवर गोताखोर मूल रूप से जिमनास्ट या नर्तक होते हैं क्योंकि दोनों खेलों में गोताखोरी के समान ही विशेषताएँ होती हैं।

उदयपुर शहर में गर्मी का मौसम प्रारम्भ होते ही शहर की झीलों और तालाबों पर तैराकी के प्रेमी प्रातः–दोपहर में दिखने लगते हैं। फतहसागर झील की पाल की छतरियों से युवा गंठे (छलांग) मारते हैं। इस प्रक्रिया में वे अपनी जान को भी जोखिम में डालते हैं। हर–हर महादेव या बम–बम महादेव का स्मरण करते हुए निर्भीकता से गंठे मारते हैं। उनके लिए न तो कोई प्रशिक्षक होता है न कोई विषम परिस्थिति में उन्हें बचाने वाला ही। यदि राजकीय सुविधा मिले तो ये तैराकी प्रेमी युवक अच्छे भावी तैराक बन सकते हैं। उनमें उत्साह है, उमंग है, आवश्यकता है उन्हें सही दिशा देने की। उदयपुर की प्रत्येक झील के किनारे उपयुक्त स्थल पर झील में तरणताल नगर निगम या नगर विकास प्रन्यास या राज्य सरकार के क्रीड़ा मंत्रालय द्वारा निर्मित किया जा सकता है। पीपीपी मोड के अन्तर्गत भी यह संभव हो सकता है। यहाँ पर चयनित युवाओं को लम्बी दूरी की तैराकी, गोताखोरी (डाईविंग), पीठ के बल तैरने की शैली (बेक स्ट्रोक), रेंगना (क्रावल), ब्रेस्ट स्ट्रोक आदि तैराकी की विशेष शैली से पारंगत तैराक भी तैयार किये जा सकते हैं। तरणताल के स्प्रिंगबोर्ड (गोता लगाने का तख्ते) से गोते लगाने के साथ उदयपुर में विरासत में मिले गंठे भी लगाना सीख सकते हैं।

फतहसागर की पाल एवं छतरियों के ऊपर से तैराकी प्रेमी गंठे मारते हुए

पिछोला के घाट पर मांजी के मन्दिर से पानी में गंठे लगाते एवं झील में तैरते हुए तैराकी प्रेमी

कलात्मक तैराकी : यह तैराकी नृत्य और जिमनास्टिक का एक संकलित रूप है जिसमें एकल, युगल, तिकड़ी, मिश्रित युगल एवं समूह संगीत की धुन पर विस्तृत कलात्मक गतिविधियाँ करते हैं। कलात्मक तैराकी के लिए उन्नत जल कौशल की आवश्यकता होती है। इसके लिए बड़ी ताकत, धैर्य, लचीलापन, अनुग्रह, कलात्मकता और सटीक समय की पालना आवश्यक होती है। साथ ही पानी के नीचे उल्टा होने पर असाधारण साँस नियंत्रण की भी आवश्यकता होती है।

(2) पानी की सतह पर वाटर स्पोर्ट्स –

बनाना राइड : यह एक केले की आकृति की नाव है, जिसमें धारक और किनारे पर एक फुलाया हुआ पैर पैडिंग है, जो उचित संतुलन के साथ उस पर बैठने देता है। यह एक बहुत ही मजेदार साहसिक खेल है। सवारी को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि इसमें एक बार में अधिकतम् छः व्यक्ति बैठक सकते हैं ताकि सभी साथी यात्रियों के साथ मज़ा साझा कर सकते हैं। बनाना नाव को स्पीड बोट से रस्सी के माध्यम से सुरक्षित रूप से जोड़ा जाता है और उच्च गति के साथ पानी के साथ खींचा जाता है जिससे लहरों की सवारी कर सकते हैं। राइड पर कसकर पकड़ने के साथ पूरे राइड के दौरान नाव और झील द्वारा बनाई गई लहरों के कारण स्पलैश और हवा के तेज बहाव का अनुभव कर सकते हैं। स्पीड बोट चालक की ओर से सावधानीपूर्वक तीखे मोड़ लेने पर अतिरिक्त झुकाव से मज़ा एवं रोमांच का अनुभव होता है। इस राइड में परिवार के साथ हँसी, रोमांच और ताज़गी का अनुभव किया जा सकता है।

बंजी जम्पिंग : यह एक ऐसी गतिविधि है जिसमें एक ऊँची संरचना से एक बड़ी लोचदार रस्सी के साथ जुड़े रहते हुए कूदना शामिल है। यह लम्बी संरचना आमतौर पर एक इमारत, पुल या एक क्रेन जैसी स्थायी वस्तु हो सकती है। हॉट–एयर बलून या हेलीकॉप्टर जैसी एक चलायमान वस्तु से भी कूदना संभव है, जिसमें जमीन से ऊपर मंडराने की क्षमता हो। जितना रोमांच फ्री–फॉलिंग से आता है, उतना ही पलटाव से भी आता है। जब व्यक्ति कूदता है तो रस्सी खिंचाव के कारण विस्तृत हो जाती है और जब रस्सी वापस सिकुड़ती है तब कूदने वाला ऊपर की ओर उड़ जाता है और इसी प्रकार कभी ऊपर और कभी नीचे की ओर तब तक गतिशील रहता है जब तक कि उसकी सारी ऊर्जा निष्क्रिय नहीं हो जाती।

विंडसर्फिंग : यह एक ऐसा खेल है जिसे सर्फबोर्ड और पाल का उपयोग करके पानी की सतह पर खेला जाता है। इसे खुले समुद्र, झील और इन्डोर पूल पर भी खेला जा सकता है। सर्फबोर्ड आमतौर पर दो से तीन मीटर लम्बा होता है। वह एक फ्री–रोटेटिंग यूनिवर्सल जॉइन्ट के माध्यम से मस्तुल से जुड़ा होता है। विंडसर्फर वास्तव में गतिविधि के आधार पर अपने सर्फबोर्ड को संशोधित कर सकते हैं। विभिन्न प्रकार के लम्बे और छोटे सर्फबोर्ड उपलब्ध रहते हैं। बोर्ड पर विंडसर्फर खड़ा होता है, फिर वे उछाल पर पाल को नियंत्रित करते हैं ताकि वे हवा की गति को पकड़कर पैतरेबाजी कर सके। विंडसर्फिंग में पारंगतता के लिए नौकायन और सर्फिंग को समझना होगा क्योंकि यह दोनों का संयोजन है।

वाटर स्कीइंग : यह एक ऐसा खेल है जो पानी की सतह पर खेला जाता है। आमतौर पर एक सवार को नाव के पीछे या केबल स्की इंस्टॉलेशन द्वारा खींचा जाता है। राइडर्स एक या दो स्की का उपयोग करके सतह पर स्कींड करता है। आमतौर पर डबल स्की का उपयोग शुरूआती राइडर्स द्वारा किया जाता है और फिर वह एकल स्की में पारंगतता प्राप्त करता है। वाटर स्कीइंग आमतौर पर झीलों, नदियों और कभी–कभी समुद्र में खेला जाता है। पैरों को जगह पर रखने के लिए वाटर स्की पर रबर मोल्डेड बाइंडिंग होती है। डबल्स स्की में प्रत्येक के लिए एक ही बंधन होता है। वाटर स्कीइंग एक ही समय में दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा की जा सकती है। यह अक्सर गहरे पानी में खेला जाता है।

सेलिंग नौकायन : सेलिंग नौकायन एक ऐसा खेल है जिसमें हवा की शक्ति का उपयोग करके नाव को गति प्रदान की जाती है। इस खेल को एक मनोरंजक और सामाजिक गतिविधि के रूप में खेला जाता है। सन् 1851 से यह खेल शुरू हुआ तथा दुनिया के सर्वश्रेष्ठ नाविकों के चयन हेतु इसके अन्तर्गत बड़ी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस नौकायन के लिए कई प्रकार की बड़ी नौकाओं से लेकर डोंगी तक का उपयोग किया जाता है। इसकी प्रतियोगिता में विभिन्न प्रकार की रेस का आयोजन होता है। मुख्यतः फ्लीट रेसिंग में कम से कम चार नावें एवं कुछ आयोजनों में सैंकड़ों नावें भी शामिल होती हैं। मैच रेसिंग में दो नावें एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती हैं और सबसे तेज गति की नाव की जीत होती है। टीम रेसिंग में दो टीमें शामिल होती हैं तथा प्रत्येक में तीन नावें होती हैं और यह मैच रेसिंग के समान होता है। वर्तमान में पाल सेलिंग नौकायन बहुत दिलचस्प हो गया है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ नावें और अधिक उन्नत हो गई हैं।

कैनोइंग–कयाकिंग : कैनोइंग एक प्रकार की पैडल (चप्पू) नाव (डोंगी) है। इसमें सवार एक खुली या बंद छत वाली डोंगी में आगे की ओर मुँह करके घुटने टेकता है या बैठता है। सवार सिंगल ब्लेड वाले पैडल का उपयोग करके डोंगी को आगे बढ़ाता है। कभी–कभी कैनोइंग को कैनोइंग और कयाकिंग दोनों के लिए संदर्भित किया जा सकता है। इसमें सामान्य अंतर यह है कि कयाकिंग पतली नाव है जिसमें सवार सदैव बैठे रहते हैं और वे डबल–ब्लेड वाले पैडल का उपयोग करते हैं जबकि कैनोइंग में सवार घुटने टेकते हैं और सिंगल–ब्लेड पैडल का उपयोग करते हैं। एक खेल के रूप में डोंगी दौड़, कैनो पोलो, प्ले बोटिंग, डोंगी मैराथन आदि कैनोइंग –कयाकिंग के अन्य रूप हैं।

डोंगी पोलो–कैनो पोलो–कयाक पोलो : कैनो पोलो जिसे कयाक पोलो भी कहा जाता है, कयाकिंग के प्रतिस्पर्धी विषयों में से एक है जिसे इसके प्रशंसकों द्वारा पोलो के रूप में भी जाना जाता है। प्रत्येक टीम में पिच पर पांच खिलाड़ी (और तीन विकल्प के तौर पर) होते हैं, जो अपने प्रतिद्वंद्वी के गोल में स्कोर करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह पानी से दो मीटर ऊपर स्थित होता है। गेंद को हाथ से फेंका जा सकता है या खिलाड़ियों के बीच गेंद से गुजरने और गोल करने के लिए पैडल (कयाक) से फ्लिक भी किया जा सकता है। पिचों को स्विमिंग पूल या समतल पानी के किसी भी हिस्से में स्थापित किया जा सकता हैं जिसका आकार 35 × 23 मीटर होना चाहिये।

केनो पोलो एक टीम गेम है जिसमें खिलाड़ी को नौका विहार और गेंद से पिटने में कौशल होना चाहिये। यहां खिलाड़ी में एथलिटों के समान गति और फिटनेस महत्त्वपूर्ण है। खेल में उत्कृष्ट टीम वर्क की आवश्यकता होती है और सामान्य केनोइंग कौशल और खेल के लिए अद्वितीय अन्य तकनीकों की एक शृंखला है, जो दोनों को बढ़ावा देता है। कैनोइंग नाव विशेष रूप से पोलो के लिए डिजाइन की गई है और विशिष्ट नाव की तुलना में तेज और हल्की है जो उन्हें बेहतर गतिशीलता प्रदान करती है। पोलो पैडल डबल ब्लेड वाले मोटे गोल किनारे वाले होते हैं। पैडल भी बहुत हल्के होते हैं और इन्हें खींचने की शक्ति और गेंद नियंत्रण दोनों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है।

पैरासेलिंग (पैरासेडिंग) : यह एक मनोरंजक गतिविधि है जिसमें एक व्यक्ति को एक वाहन (आमतौर पर स्पीड बोट) के पीछे खींचा जाता है, जबकि वह विशेष रूप से डिजाइन किए हुए एक पैराशूट के साथ जुड़ा हुआ होता है जिसे पैरासेल कहते है। यह नाव तब पैरासेडिंग करने वाले को हवा में उड़ाते हुए आगे बढ़ जाती है एवं पुनः उसे डेक पर ले आती है। अगर नाव पर्याप्त रूप से मजबूत है तो दो या तीन लोग इसके पीछे एक ही समय में पैरासेल कर सकते हैं। पैरासेडिंग करने वाले का पैराशूट पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। एक पैरासेल के छः भाग होते हैं। हार्नेस पायलट को पैरासेल से जोड़े रखता है जो नाव या जमीनी वाहन से खींचने वाली रस्सी के जरिए जुड़ा रहता है। यह गतिविधि मुख्य रूप से एक मनोरंजक सवारी है एवं इसे वाणिज्यिक रूप से संचालित की जाती है। यूरोप में भूमि आधारित पैरासेलिंग को भी प्रतियोगिता खेल में शामिल किया जाता है। भूमि आधारित पैरासेलिंग प्रतियोगिता में एक पैरासेल को एक 4 पहिया वाहन के पीछे अधिकतम् ऊँचाई तक खींचा जाता है और फिर वह रस्से को छोड़ देता है एवं प्रतियोगी उड़कर एक लक्षित क्षेत्र तक पहुँचता है।

व्यक्तिगत जल क्रीड़ा : व्यक्तिगत वाटरक्राफ्ट को वाटर स्कूटर भी कहा जाता है। यह एक मनोरंजक वाटरक्राफ्ट है जिनकी दो श्रेणियाँ रनबोट एवं स्टेण्डअप होती हैं। रनबोट में सवार मुख्य रूप से वाटरक्राफ्ट के ऊपर बैठकर उसका उपयोग करता है और इसमें आमतौर पर दो या दो से अधिक लोग होते हैं। स्टेण्डअप में सवार खड़ा होकर वाटरक्राफ्ट का संचालन करता है। स्टेण्ड–अप श्रेणी में वाटरक्राफ्ट को एक सवार के लिए बनाया गया है। इसका प्रतियोगिताओं–ट्रिक्स, रेसिंग आदि में अधिक उपयोग किया जाता है।

दोनों ही श्रेणियों में एक पम्प–जेट संचालन हेतु इनबोर्ड इंजन के साथ स्टीयरिंग होती है। अधिकांश वाटरक्राफ्ट दो या तीन लोगों के लिए डिजाइन किये गये हैं, हालांकि चार यात्री मॉडल भी मौजूद है। वर्तमान में कई मॉडल अधिक विस्तारित उपयोग के लिए बनाए गए हैं और इनमें लम्बी परिभ्रमण करने की ईंधन क्षमता है। इन बोटों को फतहसागर में संचालित होते हुए देखा जा सकता है।

ड्रेगन बोट रेस : ड्रेगन बोट एक मानव संचालित जलयान है। ये सबसे पहले चीन के दक्षिणी ग्वांगडोंग प्रांत में बने थे। यह पारम्परिक पैडल वाली लम्बी नावों के परिवार में से एक है। पूर्व में यह सागौन लकड़ी की बनी होती थी। वर्तमान में यह कार्बन फाइबर, फाइबर ग्लास और अन्य हल्के पदार्थों से बनी होती है। ड्रेगन बोट रेस खेल के साथ ग्रामीणों में एक प्राचीन लोक अनुष्ठान भी है जो पूरे दक्षिणी चीन में 2000 वर्षों पहले से मनाया जाता रहा है। ड्रेगन बोट रेस प्रतियोगिताओं में ड्रेगन बोट में चीनी ड्रेगन हेड्स (सिर) एवं टेल्स (पूँछ) के साथ ड्रम भी स्थापित किया जाता है। एशियाई खेलों में ड्रेगन बोट टीम के चालक दल में 22 सदस्य, 20 पैडलर्स, 1 ड्रमर और 1 स्टीयरपर्सन (हेल्म) शामिल है। रेस की आम दूरी 200, 500, 1000 और 2000 मीटर रखी जाती है। 2000 मीटर की रेस आमतौर पर 500 मीटर के कोर्स पर आयोजित की जा सकती है।

(3) पानी के भीतर फोटोग्राफी : पानी के भीतर की फोटोग्राफी को एक कला और डेटा रिकॉर्ड करने की विधि के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है। पानी के भीतर सफल फोटोग्राफी अधिकतर विशेष उपकरणों और तकनीकों के साथ ही की जाती है। यह रोमांचक और दुर्लभ फोटोग्राफी का अवसर प्रदान करता है। इसके माध्यम से मछली, समुद्री जीव, जहाजों के मलबे, जलमग्न गुफा प्रणाली, पानी के नीचे के परिदृश्य, समुद्री शैवाल, भू–वैज्ञानिक विशेषताओं और साथी गोताखारों के चित्रों की फोटोग्राफी की जाती है।

साहसिक नाव यात्रा : उदयपुर शहर के मध्य स्थित झीलों की यह विशेषता है कि वे आपस में जुड़ी हुई हैं। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में पर्यटकों द्वारा यह साहसिक नाव यात्रा रॉर्विंग, केनोइंग, कयाकिंग, पावर स्कूटर आदि के द्वारा गोवर्द्धन सागर, पिछोला, अमरकुण्ड, स्वरूपसागर, लिंक नहर एवं फतहसागर तक अथवा इसके विपरीत फतहसागर से गोवर्द्धन सागर तक की जा सकती है। यह व्यवस्था पीपीपी मोड़ पर भी विकसित कर सकते हैं। गोवर्द्धन सागर से पिछोला तक की लिंक नहर चौड़ी और गहरी करने के साथ हाई डेनसिटी युक्त प्लास्टिक से एयरवेन्ट रखते हुए ढ़क देनी चाहिये, क्योंकि यह एकलिंगगढ़ सैनिक छावनी से होकर गुजरती है। गोवर्द्धन सागर–पिछोला एवं स्वरूपसागर–फतहसागर लिंक नहर को गन्दगी, खरपतवार एवं काई रहित रखने के साथ पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था हो। यह स्थल साहसिक नाव यात्रा का एक प्रमुख केन्द्र होगा। इस नाव यात्रा के माध्यम से पर्यटक गोवर्द्धन सागर के डी–पार्क, जहाजनुमा टापू को देखते हुए पिछोला के प्रवेश स्थल पर प्राकृतिक टापू में देशी–विदेशी पक्षियों के कलरव सुनते हुए बायीं ओर राजमहल, अनेक घाट एवं दायीं ओर जगमन्दिर, जगनिवास (लेक पैलेस), हवेलियां आदि पर दृष्टिपात करते हुए मोहन मन्दिर के पास से दाईजीराज एवं चांदपोल पुलिया के नीचे होते हुए रंग सागर के चारों ओर आवासीय बस्तियों के साथ टीरा मगरी की ओर निहारते हुए विभिन्न घाटों पर पर्यटकों की आवाजाही देखते हुए आगे बढ़ेंगे। रंगसागर के बाद नई पुलिया के नीचे होते हुए स्वरूपसागर के काले किवाड़ एवं ओवरफ्लो स्थल का अवलोकन कर स्वरूपसागर–फतहसागर लिंक नहर के मुख्य द्वार से अन्दर प्रवेश कर यह नाव यात्रा अभिभूत एवं आनन्दित करने वाली होगी। इस लिंक नहर के अंतिम छोर पर दो गेटों से होते हुए फतहसागर की अथाह जलराशि में प्रवेश करते हुए पर्यटकगण इस अभूतपूर्व क्षण को सदैव स्मरण रखेंगे। फतहसागर में नेहरू गार्डन, गुरु गोविन्द सिंह पार्क, पाल, सोलर प्रयोगशाला के पास पक्षियों के आवास स्थल आदि को बहुत नजदीकी से दृष्टिगत करते हुए पुनः इसी मार्ग से गोवर्द्धन सागर तक लौट सकेंगे। यह पर्यटकों के लिए एक ऐतिहासिक, रोमांचकारी, आनन्ददायक एवं साहसिक यात्रा सिद्ध होगी। नाव यात्रा के दौरान पर्यटकों की समुचित सुरक्षा व्यवस्था की समस्त जिम्मेदारी संबंधित संचालक एजेन्सी की ही होनी चाहिये।

झीलों में नाव संचालन : देश–विदेश में हर वर्ष लाखों पर्यटक झीलों की अद्वितीय सुन्दरता निहारने आते हैं जिनमें से अधिकतर बोटिंग भी करते हैं। झीलें लबालब रहने से पर्यटकों की संख्या में अब और आशातीत वृद्धि संभव होगी।

झीलों में नाव संचालन स्थल एवं एजेन्सियाँ : वर्तमान में उदयपुर शहर की झीलों में पाँच स्थानों – (1) पिछोला झील के पूर्वी तट (दूध तलाई छोर) से (2) पिछोला झील के लाल घाट से (3) फतहसागर में गुरु गोविन्द सिंह पार्क तट से नेहरू पार्क तक (4) मोती मगरी गेट के सामने एवं (5) मुम्बईया बाजार तट से नावों का संचालन किया जा रहा है। यह नाव संचालन नगर निगम, सार्वजनिक निर्माण विभाग, पर्यटन विकास निगम एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा ठेकेदारों के माध्यम से करवाया जा रहा है। इन ठेकेदारी फर्मों द्वारा झीलों में विभिन्न क्षमता की दो से तीन दर्जन नावें संचालित हैं। पूर्व में दूध तलाई से भी पेडल बोट का संचालन होता था।

नावों के लाइसेन्स :

(1) झील में चलने वाली नावों को लाइसेन्स परिवहन विभाग द्वारा नेवल अधिकारी की जांच रिपोर्ट के आधार पर दिया जाना चाहिये।

(2) सभी नावों का बोट एक्ट के तहत नाव की क्षमता के अनुसार दुर्घटना बीमा कराया जाना चाहिये जिससे हादसे के उपरान्त पीड़ित व्यक्ति/परिवार को नियमानुसार बीमा कम्पनी से मुआवजा प्राप्त हो सकेगा।

(3) नाव संचालन सामान्य वाहन संचालन से अधिक जोखिम भरा होता है एवं झील में आपदा प्रबन्धन भी कठिन है, इसलिए नावों का रखरखाव उच्च स्तर का होना चाहिये एवं नावों का लाइसेन्स प्रतिवर्ष परिवहन विभाग द्वारा नवीनीकृत किया जाना चाहिये।

(4) नाव चालक को भी परिवहन विभाग द्वारा नेवल अधिकारी के परामर्श से तैराकी की पारंगतता, स्वास्थ्य स्थिति एवं नाव संचालन की दक्षता पर लाइसेन्स जारी करना चाहिये एवं संशोधित मोटर एक्ट के अनुसार निश्चित अवधि में नवीनीकरण भी होना चाहिये।

(5) बोटिंग हेतु तकनीकी रूप से श्रेष्ठ एवं उच्च विशेषकर सोलर एवं विद्युत (बैट्री) ऊर्जा चलित नावें संचालित होनी चाहिये, जिससे झीलों का जल प्रदूषित न हो। इसके साथ ही लक्ज़री नावें भी उपलब्ध होनी चाहिये।

(6) नाव चालकों के पास नाव संचालन के लिए बने मोटर एक्ट के अन्तर्गत नाव संचालन के लिए लाइसेंस जैसी अनिवार्यता होनी चाहिये। वर्तमान में यह प्रावधान नहीं है, अतः मोटर एक्ट में इसे सम्मिलित करना चाहिये। नाव संचालन मात्र अनुभवी तैराक से नहीं कराया जाना चाहिये।

(7) नाव चालक एक कुशल तैराक एवं आकस्मिक स्थितियों में बचाव कार्य, फर्स्टएड देने में प्रशिक्षित भी होना चाहिये।

(8) झीलों में नाव संचालन की स्वीकृति नाव संचालक एक्ट के अनुरूप किसी एक संस्थान से ही प्राप्त होनी चाहिये।

नाव संचालन हेतु जेटियाँ : झीलों में नाव संचालन हेतु नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास या ठेकेदार द्वारा निर्मित जेटी नावों की संख्या एवं क्षमता, आकार एवं जल स्तर के अनुसार उच्च तकनीकी युक्त स्थिर प्रणाली की होनी चाहिये। जेटियों पर छायादार विश्राम स्थल उच्च स्तर के सुविधा कक्ष से सुसज्जित होने चाहिये।

लाइफ जैकेट : (1) प्रत्येक नाव पर उसकी क्षमता के अनुसार साफ–सुथरी लाइफ जैकेट होनी चाहिये एवं नाव संचालन से पूर्व नाव चालक की जिम्मेदारी होनी चाहिये कि प्रत्येक पर्यटक इसे निर्धारित विधि से पहने। नाव में कुछ अतिरिक्त लाइफ जैकेट, एक रस्सी आदि भी अवश्य होने चाहिये। (2) लाइफ जैकेट की अनिवार्यता की जांच आकस्मिक रूप से नाव संचालन के समय में की जावे। पर्यटक बिना लाइफ जैकेट पहने पाये जाने पर ठेकेदार पर भारी जुर्माना एवं ठेका निरस्त की कार्रवाई के साथ नाव में लापरवाह पर्यटकों पर भी जुर्माने के नियम बनाये जाने चाहिये।

लाइफ जैकेट नहीं पहने हुए पर्यटक

(3) लाइफ जैकेट के सन्दर्भ में पर्यटकों को अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराने हेतु जेटी के पास एक पट्ट पर बड़े अक्षरों में नाव में बैठने से पूर्व लाइफ जैकेट पहनने की हिदायत एवं तरीका वर्णित होना चाहिये। यह आवश्यक जानकारी नाव में भी एक सूचना पट्ट पर अंकित होनी चाहिये। लाइफ जैकेट साफ–सुथरे होने के साथ उनका भण्डारण सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिये।

निगरानी की जिम्मेदारी :

(1) झीलों में नाव संचालन की स्वीकृति नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास की अनुशंसा पर जल संसाधन विभाग से प्राप्त की जानी चाहिये।
(2) नावों के फिटनेस व लाइसेन्स परिवहन विभाग द्वारा जारी किये जाने चाहिये।
(3) राज्य सरकार द्वारा सभी झीलों में नाव संचालन एवं निरीक्षण की जिम्मेदारी किसी एक संस्था को दी जानी चाहिये ताकि यह कार्य अधिक कुशलता एवं मितव्ययता के साथ संभव हो सकें।
(4) इस कार्य में समरूपता एवं नियमों की पालना के साथ उच्च स्तर की जेटी एवं नावों के संचालन के लिए नगर निगम ही अधिक उपयुक्त संस्था है।

आपदा प्रबन्धन :

(1) रेस्क्यू बोट में प्रशिक्षित गोताखोर के साथ पर्याप्त संख्या में लाइफ जैकेट, फ्लोटिंग ट्यूब, मजबूत रस्सियाँ आदि सहित बचाव के अन्य संसाधन भी उपलब्ध होने चाहिये।
(2) प्रत्येक बोट के साथ एक पूर्ण प्रशिक्षित गोताखोर उपलब्ध रहना चाहिये ताकि हादसा होने पर तत्काल बचाव कार्य संभव हो सके।
(3) प्रत्येक जेटी पर नियमानुसार एक रेस्क्यू बोट मय गोताखोर एवं आवश्यक संसाधनों के तैयार रहनी चाहिये।

(1) फतहसागर में ऐसे दृश्य देखने को मिल जायेंगे। स्पीड बोट में बैठे सभी पर्यटक लाइफ जैकेट पहने हुये हैं लेकिन ड्राइवर द्वारा इस नियम का उल्लंघन किया जा रहा है।

(2) फतहसागर में पानी की लहरों पर बिना लाइफ जैकेट सर्फिंग करता हुआ युवक।

वाटर स्कूटर के साथ कुछ युवक, फर्राटे से दौड़ाने लगे, दुस्साहस भरी कलाबाजियाँ करते, पानी में कूद पड़ते–चलती नाव में फिर से सवार होते। इन्हें रोकने वाला कोई नहीं। इन सबने लाइफ जैकेट भी नहीं पहन रखे हैं।

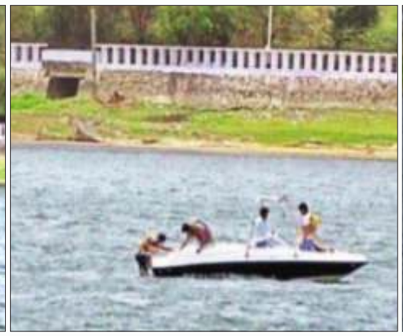

नाव संचालन से जल पर्यावरण में सुधार :

(1) नाव संचालन से पानी में ऑक्सीजन की मात्रा में वृद्धि होती है। इससे झील के स्वच्छ रहने के साथ घाट भी साफ–सुथरे रह सकेंगे।
(2) स्वरूप सागर, गोवर्द्धन सागर, रंग सागर एवं कुम्हारिया तालाब में छोटी नावें एवं पेड़ल बोट चलाने से स्थानीय लोग भी बोटिंग का आनन्द ले सकेंगे। साथ ही इन झीलों को ठेकेदार भी साफ–सुथरा रखने का प्रयास करेंगे।

वाटर स्पोर्ट्स एकेडमी की स्थापना : उदयपुर शहर एवं इसके आसपास स्थित झीलों एवं छोटे तालाबों पर दृष्टिपात करें तो यहाँ पर वाटर स्पोर्ट्स एकेडमी की स्थापना हेतु अपार संभावनाएँ एवं संसाधन उपलब्ध हैं, फिर भी पिछले कई वर्षों से हमें इसका इंतजार है। वर्ष 2020 तक यहाँ पर पाँच बार कयाकिंग और केनोइंग की राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ आयोजित हो चुकी हैं, इनमें से एक अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता भी प्रमुख है। फतहसागर झील में राजस्थान और भारतीय कयाकिंग संघ की मेजबानी में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उदयपुर के कई खिलाड़ियों ने पदक भी जीते थे। वर्ष 2021 में उदयपुर की नेहा कुमावत ने टोक्यो ओलम्पिक के लिए होने वाली चैम्पियनशिप के लिए क्वालिफाई किया है। शहर के कई तैराकों ने इंटरनेशनल रिकॉर्ड भी अपने नाम किये। भक्ति शर्मा और गौरवी सिंघवी ने इंग्लिश चैनल और अंटार्कटिक महासागर में तैराकी से कीर्तिमान रचे हैं। इन सभी पहलुओं को देखते हुए स्थानीय प्रशासन ने उदयपुर में वाटर स्पोर्ट्स एकेडमी की स्थापना का प्रस्ताव राजस्थान सरकार को समय–समय पर भेजें, लेकिन प्रतिभाओं और संसाधनों से भरपूर लेकसिटी के लिए राज्य सरकार ने इस हेतु वर्ष 2021 तक भी कोई घोषणा नहीं की है।

गोल्फ कार संचालन : फतहसागर पर अरावली वाटिका से पाल तक सैलानियों को गोल्फ कार से इसकी सुन्दरता को देखने एवं निहारने का अवसर मिलना चाहिये। विकलांग भाई–बहिनें एवं वरिष्ठ नागरिक इनके सहयोग से फतहसागर की सुन्दरता का अवलोकन आसानी से कर सकते हैं। इन कारों की नियमित उपलब्धता पीपीपी मोड़ पर की जा सकती है।

साइकिल भ्रमण : फतहसागर पर अरावली वाटिका–मोतीमगरी रोड–मुम्बईया बाजार–पाल तक एवं फतहसागर के पश्चिमी छोर रानी रोड पर सैलानियों एवं स्थानीय नागरिकों को साइकिल भ्रमण के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अरावली वाटिका एवं पाल के प्रथम एवं अंतिम छोर पर साइकिल किराये पर मिलने की सुविधा उपलब्ध है। साइकिल किराये के लिए पहचान पत्र दिखाने के साथ अमानती रकम भी जमा कराने का प्रावधान रखा गया है। किराये पर दी जाने वाली साइकिलों में चलने की सुगमता होने के साथ रंग एवं बनावट भी आकर्षक है। इससे पर्यटक इसके प्रति अधिक आकर्षित हो रहे हैं। फतहसागर के पश्चिमी छोर रानी रोड पर साइकिल ट्रेक भी बनी हुई है।

स्केटिंग : फतहसागर पर इसकी पाल, अरावली वाटिका, मुम्बईया बाजार, ओवरफ्लो साइट आदि स्थलों पर छोटे बच्चों एवं वयस्कों द्वारा प्रातः एवं सायंकाल को स्केटिंग की जाती है। यह स्केटिंग करने वाले व्यक्ति सड़क पर चलने वाले स्थानीय नागरिकों एवं सैलानियों को जख्मी कर सकते हैं। इस स्केटिंग के लिए वर्तमान सड़क कतई उपयुक्त नहीं है तथा स्केटिंग के मापदण्ड के अनुरूप भी नहीं बनी हुई है। वर्तमान स्केटिंग स्थल पर बंसियों के मध्य खाली स्थान के चलते दुर्घटना का भी अंदेशा बना रहता है। इसलिए उक्त स्थल स्केटिंग करने वालों के लिए भी जोखिमपूर्ण है। इसके लिए रानी रोड़ अथवा किसी अन्य उचित स्थान पर बहुत व्यवस्थित रूप से स्केटिंग ट्रेक राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुसार बनाई जानी चाहिये। साथ ही स्केटिंग ट्रेक पर दक्ष प्रशिक्षक की उपस्थिति में रियायती दर पर स्केट्स उपलब्ध कराये जाने चाहिये।

इको एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म : झीलों की नगरी के आसपास प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर ऐसे अनेक पर्यटन स्थल जिनमें पहाड़, झरने, समतल क्षेत्र, नदी बहाव एवं वन क्षेत्र, घुमावदार ऊँची–नीची सड़कें आदि हैं, जहाँ इको एवं एडवेन्चर ट्यूरिज्म विधिवत् विकसित किये जा सकते हैं। इस हेतु रेपलिंग जिपलाइन के लिए सज्जनगढ़ क्षेत्र, पर्वतारोहण के लिए सज्जनगढ़ किला, बड़ी रोड, उबेश्वर महादेव क्षेत्र, सांडोलमाता की नाल, पई, उन्दरी पर्वतीय क्षेत्र, माउन्टेन बाइकिंग के लिए सज्जनगढ़ और जयसमन्द सेन्चुरी, ट्रेकिंग व कैम्पिंग के लिए सज्जनगढ़, बाघदड़ा पार्क व जयसमन्द को विकसित कर पर्यटन मानचित्र में दर्शाया जाना चाहिये। वर्तमान में इसकी महत्ती आवश्यकता है। इन गतिविधियों को नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, जल संसाधन एवं वन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा अपने संसाधनों के माध्यम से या पीपीपी मोड़ पर ईआईओ–एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट की गाइडलाइन के अनुसार विकसित किया जा सकता है। सिंगापुर जैसे छोटे से शहर में इको–एडवेन्चर

ट्यूरिज्म पर ध्यान देने से ऐसे अनेक स्थल विकसित हुए हैं, जहां पर्यटक अवश्य जाना पसन्द करते हैं जिससे पर्यटक तीन–चार दिन तक ठहरने के साथ फिर से वहां जाने की उत्सुकता रखते हैं।

इको ट्यूरिज्म : यह पयर्टन का ही एक रूप है जिसमें प्राकृतिक क्षेत्रों का उत्तरदायित्वपूर्ण भ्रमण, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय लोगों के रोजगार एवं आर्थिक उन्नति शामिल है। इसके अतिरिक्त इसमें पर्यटकों को प्रकृति के प्रति जागरूक करना, पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण के लिए आर्थिक संसाधन जुटाना या विभिन्न संस्कृतियों तथा मानव अधिकारों की रक्षा को बढ़ावा देना भी सम्मिलित हैं। 1980 के दशक के बाद से पर्यावरणविदों द्वारा इकोटूरिज्म को एक महत्वपूर्ण प्रयास माना गया ताकि आने वाली पीढ़ियों को मानवीय हस्तक्षेप से अपेक्षाकृत अछूते गंतव्यों का अनुभव करा सकें। इसमें आमतौर पर उन गंतव्यों की यात्रा शामिल होती हैं, जहां वनस्पति, जीव और सांस्कृतिक विरासत प्राथमिक आकर्षण है। इसके साथ इसका उद्देश्य पर्यटकों को पर्यावरण पर मानव के प्रभाव के बारे में एक अन्तर्दृष्टि प्रदान करना और स्थानीय प्राकृतिक स्थलों को अधिक बढ़ावा देना भी है।

एडवेन्चर टूरिज्म : साहसिक पर्यटन : इस प्रकार के पर्यटन में रोमांचक एडवेन्चर टूर के साथ साहस व आनन्द अनुभव के लिए जोखिमयुक्त गतिविधियों में भाग लेना सम्मिलित हैं। साहसिक पर्यटन की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। पर्वतारोहण ट्रेकिंग, बंजीजंपिंग, माउंटेन बाइकिंग, कैनोइंग, राफ्टिंग, कयाकिंग, जिपलाइन, पैराग्नाइडिंग, रॉक क्लाइम्बिंग आदि को साहसिक पर्यटन गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है।

पर्वतारोहण : मानव इतिहास में पहाड़ों पर चढ़ाई कई कारणों यथा–आध्यात्मिक, रणनीतिक, शिकार, सर्वेक्षण और साधारण जिज्ञासा से की जाती रही हैं। पर्वतारोहण एक खेल और मनोरंजन दोनों रूपों में उन्नीसवी सदी के मध्य में यूरोपीय आल्प्स पर्वत में शुरू हुआ। यह अन्वेषण, पर्यटन और वैज्ञानिक अध्ययन के एक जटिल संयोजन से विकसित हुआ और बड़ी संख्या में लोग पहाड़ों के शिखर तक जाने लगे। पर्वतारोहण पहाड़ों के शिखर तक पहुंचने के प्रयास की गतिविधि है। पहाड़ की चढ़ाई में आमतौर पर कुछ चट्टान या बर्फ पर चढ़ना शामिल है। पर्वतारोही पहाड़ों पर चढ़ते समय दोनों पैरों और हाथों के उपयोग के साथ कई तकनीकों, उपकरणों एवं नियमों का पालन करते हैं। प्रतियोगिता में आमतौर पर एक पर्वत के शिखर की सीधी चढ़ाई और शिखर के लिए एक विशेष मार्ग (उदाहरण के लिए नॉर्थ फेस या वेस्ट रिज) से चढ़ने के रूप से होती है। पर्वतारोहण का अधिकांश हिस्सा मनोरंजक है और इसमें शिखर तक जाने के लिए स्थापित मार्गों का अनुसरण करना शामिल है। चढ़ाई की गति और चढ़ाई की शैली के संबंध में प्रतिस्पर्धा भी हो सकती है। शैली आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले उपकरणों की मात्रा या शिखर तक पहुँचने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीति से जुड़ी होती है।

रॉक क्लाइम्बिंग : यह एक ऐसा खेल है जिसमें प्रतिभागी प्राकृतिक या कृत्रिम संरचनाओं पर ऊपर, नीचे या ऊपर चढ़ते हैं एवं इसमें पर्वतारोहण के सभी तकनीकी तत्व होते हैं। रॉक क्लाइम्बिंग एक शारीरिक और मानसिक शक्ति को परखने वाला खेल है जो अक्सर एक पर्वतारोही की ताकत, धैर्य, चपलता और मानसिक नियंत्रण के साथ संतुलन का परीक्षण करता है। इसमें पूर्व निर्धारित अंतिम बिन्दु के मार्ग तक सुरक्षित समापन के लिए हाथों और पैरों के उपयोग के साथ उचित चढ़ाई का तकनीकी ज्ञान और चढ़ाई के विशेष उपकरणों का उपयोग महत्त्वपूर्ण है। चट्टानों पर मार्ग की लम्बाई आमतौर पर 25 मीटर और 50 मीटर के बीच होती है लेकिन इस लम्बाई से कई गुना अधिक लम्बा मार्ग खोजना आम बात है। चढ़ाई वाली कृत्रिम संरचनाएं अक्सर कंकरीट या लकड़ी के पैनलों से बनी होती हैं। दीवार की ऊँचाई और रूप काफी हद तक उस उद्देश्य पर निर्भर करता है जिसके लिए इसे प्रशिक्षण या प्रतियोगिता हेतु निर्मित किया गया है। दुनियाभर में रॉक क्लाइम्बिंग की विस्तृत श्रृंखला और विविधता के कारण रॉक क्लाइम्बिंग को कई अलग–अलग शैलियों में विभाजित किया गया है। पेशेवर रॉक क्लाम्बिंग प्रतियोगिताओं का उद्देश्य या तो शीघ्रता से निश्चित मार्ग को पार करना या तेजी से कठिन मार्ग पर एक निश्चित समय पर सबसे दूर के बिन्दु पर पहुँचना है।

जिपलाइन : यह खेल एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में लोकप्रिय होता जा रहा है। इसका उपयोग साहसिक खेल, मनोरंजन या पर्यटन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान में इसका उपयोग अन्य अर्थों के लिए भी किया जा रहा है। जिपलाइन एक स्टेनलेस स्टील केबल से जुड़ी एक चरखी से बनी होती है जो विभिन्न ऊँचाई के निश्चित बिन्दुओं के बीच विस्तारित होती है। इसमें एक व्यक्ति जो चलती चरखी से जुड़ा हुआ होता है, गुरुत्वाकर्षण द्वारा प्रेरित एक केबल के ऊपर से नीचे तक जिप करता है। अकेले गुरुत्वाकर्षण हेतु उपयोगकर्त्ता को प्रेरित करने के लिए जिपलाइन को एक निश्चित डिग्री पर झुका होना चाहिये। पेशेवर रूप से चलने वाले मनोरंजक सेटअप में उपयोगकर्त्ता को एक हार्नेस द्वारा केबल से जोड़ा जाता है जो एक ट्रॉली से जुड़ा हुआ होता है। ये जिपलाइनें रेगिस्तान, जंगलों, नदियों व घाटियों के ऊपर स्थित होती हैं। केबल की ऊँचाई 30 फीट (3 मीटर) से लेकर 200 फीट (61 मीटर) तक होती है और 150 मीटर (457 फीट) से अधिक की दूरी तय कर सकती हैं। जिपलाइन पर औसत गति 50 कि.मी. प्रति घंटा तक होती है। उदयपुर में यह जिपलाइन चीरवा घाटे में स्थित फूलों की घाटी व मेवाड़ जैव विविधता पार्क एवं नेचुरल पार्क बाघदड़ा में विकसित की गई है।

एयरो एडवेन्चर स्पोर्ट्स : इस प्रकार के स्पोर्ट्स से जमीन से सैकड़ों फीट ऊँचाई पर हवा में रोमांचक उड़ान भरते हुए खूबसूरत नजारे देखने का आनन्द मिलता है। इससे ग्रामीण इलाकों के लुभावने दृश्यों का अवलोकन भी किया जा सकता है। झीलों के इस शहर में पीपीपी मोड के माध्यम से विभिन्न तरह के पेराग्लाडिंग, हैंग ग्लाइडिंग, पेरासैलिंग, हॉटएयर बैलुनिंग एवं पेरामोटर ग्लाडिंग शुरू किये जाने के लिए समुचित स्थान उपलब्ध हैं। इस हेतु उदयपुर के पास किसी उपयुक्त स्थल पर एयरबेस बनाया जा सकता है। इससे शहर में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और झीलों की नगरी एयरो स्पोर्ट्स गतिविधियों के लिए भी पहचानी जायेगी। पेरामोटर ग्लाडिंग की अलग–अलग निर्धारित समय की उड़ान कराई जा सकती है। इसके अतिरिक्त शहर के साइट सीन निहारने हेतु हेलीकॉप्टर सेवा भी नियमित रूप से प्रारम्भ की जानी चाहिये।

पैराग्लाइडिंग : पैराग्लाइडिंग एक मनोरंजक उड़ान खेल है। यह सरलतम् रूप में उड़ान का अनुभव करने का एक मजेदार, रोमांचकारी और सुरक्षित तरीका है। पैराग्लाइडिंग दो प्रकार की होती हैं – सिंगल और टेंडेग। टेंडेग पैराग्लाइडिंग का सरलतम् तरीका है। इसे बिना सीखे उड़ान के रोमांच का आनन्द लिया जा सकता है। पैराशूट कैनोपी एक पंख के रूप में कार्य करता है और कपड़े की कोशिकाओं से निर्मित होता है। इसे पायलट किनारों से जुड़ी रस्सियों के माध्यम से नियंत्रित करता है। टेक ऑफ और लैंडिंग पैदल ही होती है और आमतौर पर किसी पहाड़ी पर ही होती है। लॉन्च करने के लिए पायलट पहले पंख को पतंग की तरह ऊपर खींचकर फुलाता है और फिर पहाड़ी के नीचे तब तक दौड़ता है जब तक कि उड़ान नहीं हो जाती। आमतौर पर लगभग 19 कि.मी. प्रति घंटा की गति पंख को लॉन्च करने के लिए पर्याप्त होती है। पैराग्लाइडर को रस्सी द्वारा समतल भूमि से भी चरखी या वाहन के पीछे से लॉन्च किया जा सकता है। देश में पैराग्लाइडिंग के लिए मुख्य गंतव्य पहाड़ी से लेकर तटीय क्षेत्रों और विमानों से लेकर रेगिस्तानी क्षेत्रों तक हैं। उदयपुर शहर एवं आसपास का क्षेत्र इसके लिए काफी उपयुक्त है।

पैराग्लाइडिंग : राजसमन्द

हॉट बैलूनिंग : यह सबसे साहसिक खेल है, जो व्यक्ति को आकाश की ऊँचाइयों का आनन्द लेने के साथ रोमांच, मस्ती और आकाश को खोजने का अवसर देता है। इसमें ऊँचाई से जमीन का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। हॉट एयर बैलूनिंग एक हल्का सा हवा वाला विमान होता है। इसमें एक गुब्बारे में गर्म हवा होती है तथा नीचे एक गोंड़ोला जो यात्रियों और गर्मी के स्रोत "तरल प्रोपेन गैस" को ले जाता है। तरल प्रोपेन के जलने से एक खुली लौ निकलती है। गुब्बारे के अन्दर की हवा को गर्म करने से यह गतिशील होता है। गर्म हवा का घनत्व गुब्बारे की बाहर की ठंडी हवा की तुलना में कम होता है, अतः यह उड़ने लगता है। आधुनिक खेल में यह गुब्बारा आमतौर पर नायलॉन के कपड़े से बनाया जाता है और गुब्बारे के बर्नर की लौ के अत्यन्त नजदीक भाग को आग प्रतिरोधी सामग्री नोमेक्स से बनाया जाता है। हॉट एयर बैलून मानव ले जाने वाली पहली सफल उड़ान तकनीक है। पुष्कर ऊँट मेले की तरह हॉट एयर बैलूनिंग उदयपुर शहर में भी पर्यटकों के मध्य साहसिक यात्रा के प्रमुख आकर्षणों में से एक बन सकता है।

हैंग ग्लाइडिंग : यह पक्षी की तरह हवा में अकेले उड़ने का एक अनूठा तरीका है। यह हल्के एवं बिना शक्ति वाले पंखों से उड़ान का खेल है। इसे पायलट द्वारा उड़ाया जा सकता है। टेक ऑफ आमतौर पर एक चट्टान या पहाड़ी से हवा में लॉन्च करके किया जाता है। पारम्परिक डेल्टा आकार के लचीले पंखों के अलावा वर्तमान में कठोर टेललेस हैंग ग्लाइडर अधिक लोकप्रिय हैं। इसमें कार्बन फाइबर और अन्य मिश्रित सामग्री गति और ताकत प्रदान करती है। अन्य सभी इंजन रहित विमानों की तरह हैंग ग्लाइडर भी गुरुत्वाकर्षण शक्ति पर कार्य करते हैं, इसलिए वे हमेशा नीचे की ओर आने का प्रयास करते हैं। हालांकि कुशल पायलट घंटों तक ऊपर रह सकते हैं। जो युवक उड़ने की इच्छा रखते हैं उनके लिए हैंग ग्लाइडिंग एडवेंचर स्पोर्ट्स सबसे रोमांचक और किफायती तरीका है।

पैरामोटरिंग : यह एक लोकप्रिय एयरोस्पोर्ट्स एवं मोटर द्वारा संचालित पैराग्लाइडिंग है। पैरा मोटर सामान्यतया दो प्रकार के होते हैं – फुट लॉन्च और व्हील लॉन्च। फुट लॉन्च मॉडल में हार्नेस, फ्यूल टैंक, इंजन और प्रोपेलर के साथ एक फ्रेम होती है। सुरक्षात्मक जाल के साथ एक घेरा मुख्य रूप से प्रोपेलर से रस्सियों को बाहर रखता है। यह यूनिट एक पैराग्लाइडर के माध्यम से जुड़े होकर ग्लाइडर द्वारा उसे पहना जाता है। व्हील लॉन्च इकाइयाँ आमतौर पर अपनी मोटर के साथ पूर्ण इकाइयों के रूप में आती हैं। इसमें तीन या चार पहिये होते हैं। एक या दो व्यक्तियों के लिए सीटें होती हैं एवं यह पंख (पैराग्लाइडर) से सुसज्जित होता हैं। इसमें 80 सीसी और 350 सीसी के बीच लगभग विशेष रूप से छोटे दो स्टोक आंतरिक इंजन हैं जो गैसोलीन और तेल के मिश्रण से संचालित होते हैं। पैरा मोटर पंख आमतौर पर ट्रियर का उपयोग विंग के कोण को समायोजित करने के लिए या तो इसे धीमा करने या उड़ान में इसे गति देने के लिए करते हैं। सामान्य पैरामोटर का वजन लगभग 18 से 34 किलोग्राम के मध्य होता है। यह पायलट के वजन पर निर्भर करता है। यह पैराग्लाइडिंग के समान है, सिवाय इसके कि यह ऊर्जा से संचालित है, इसलिए चढ़ने के लिए ऊंचाई या थर्मल के उपयोग की आवश्यकता नहीं है।

स्काईडाईविंग : यह सबसे रोमांचक ओपन स्काई एडवेंचर्स स्पोर्ट है जो पैराशूटिंग या पैराशूट जंपिंग के रूप में भी जाना जाता है। पैराशूटिंग में गुरुत्वाकर्षण की सहायता से वायुमण्डल में एक उच्च बिन्दु या विमान से बाहर निकलने या एक लम्बी संरचना से कूदने और पृथ्वी पर लौटने की क्रिया होती है, जिसमें पैराशूट का उपयोग करके नीचे आने के दौरान गति का नियंत्रण शामिल है। वर्तमान में विशिष्ट कूद की ऊँचाई जमीनी स्तर से 7500 से 15000 फीट तक होती है जो 40 से 85 सैकण्ड के बीच फ्री–फॉल का समय देती है। फ्री–फॉल की लम्बाई (विमान से बाहर निकलने और पैराशूट खुलने के बीच का समय) ऐसे कारकों पर निर्भर करता हैं, जैसे–निकास ऊँचाई, शुरूआती ऊँचाई और गिरने की रफ्तार। आधुनिक पैराशूट सात से नौ नायलोन कोशिकाओं से बने एक पंख के रूप में फूलते हैं और जमीन पर धीरे से उतरने में सहयोगी होते हैं। अपनी समुचित सुरक्षा हेतु इस खेल में स्काईडाइवर एक मुख्य और एक रिजर्व पैराशूट पहनते हैं।

माउन्टेन बाइकिंग : यह ऑफ–रोड साइकिल चलाने का एक खेल है। इसमें सवार अक्सर उबड–खाबड़ इलाकों में विशेष रूप से डिजाइन की गई माउन्टेन बाइक का उपयोग करते हैं। माउन्टेन बाइक में स्थायित्व और अच्छा प्रदर्शन करने हेतु इसकी डिजाइन में कई सुविधाओं को शामिल किया जाता है, जैसे बड़े व मजबूत पहिये, सख्त फ्रेम और यांत्रिक या हाइड्रोलिक रूप से सक्रिय डिस्क ब्रेक आदि। माउन्टेन बाइकिंग को आमतौर पर पाँच अलग–अलग श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–क्रॉस कन्ट्री, ट्रेल राइडिंग, ऑल माउन्टेन, डाउन हिल और फ्री–राइड। इस खेल में धैर्य, शक्ति और समुचित संतुलन के कौशल और आत्म–निर्भरता की आवश्यकता होती है। दक्ष सवार खड़ी तकनीकी अवरोही और उच्च झुकाव युक्त चढ़ाई दोनों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में सक्षम होते हैं। सवार के पास पानी, भोजन, पगडंड़ियों की मरम्मत के लिए उपकरण और चोट लगने की स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा किट सहित एक बैग पैक होता है। माउन्टेन बाइकिंग में समूह में सवारी आम बात है। विशेषकर लम्बी ट्रेक पर माउन्टेन बाइकर में मैप नेविगेशन के कौशल की आवश्यकता होती है।